हर-हर महादेव

हमारा देश हमारा अभिमान

MPHIN36951
कुल पृष्ठ : 52, मूल्य : 50 रुपए
वर्ष 01, अंक 03 मासिक पत्रिका
सितंबर 2021

18 महीने में
04 प्रमोशन

रॉकेट' की तरह भाजपा में बढ़ रहा

सिंधिया का कद

1008 महामंडलेश्वर श्री अनिरुद बन माहराज धूमेश्वर

सचिन अतुलकर जी , चंबल संभाग आईजी के साथ चर्चा

जितेंद सिंह श्रीवास्तव ,वनमण्डलाधिकारी (डी. एफ.ओ) ग्वालियर

प्रभुजी प्रणेस्वर इस्कोन ,प्रभारी मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़

डबरा विधायक सुरेश राजे

शिवदयाल धाकड़ जी,तहसीलदार, बहोड़ापुर, ग्वालियर

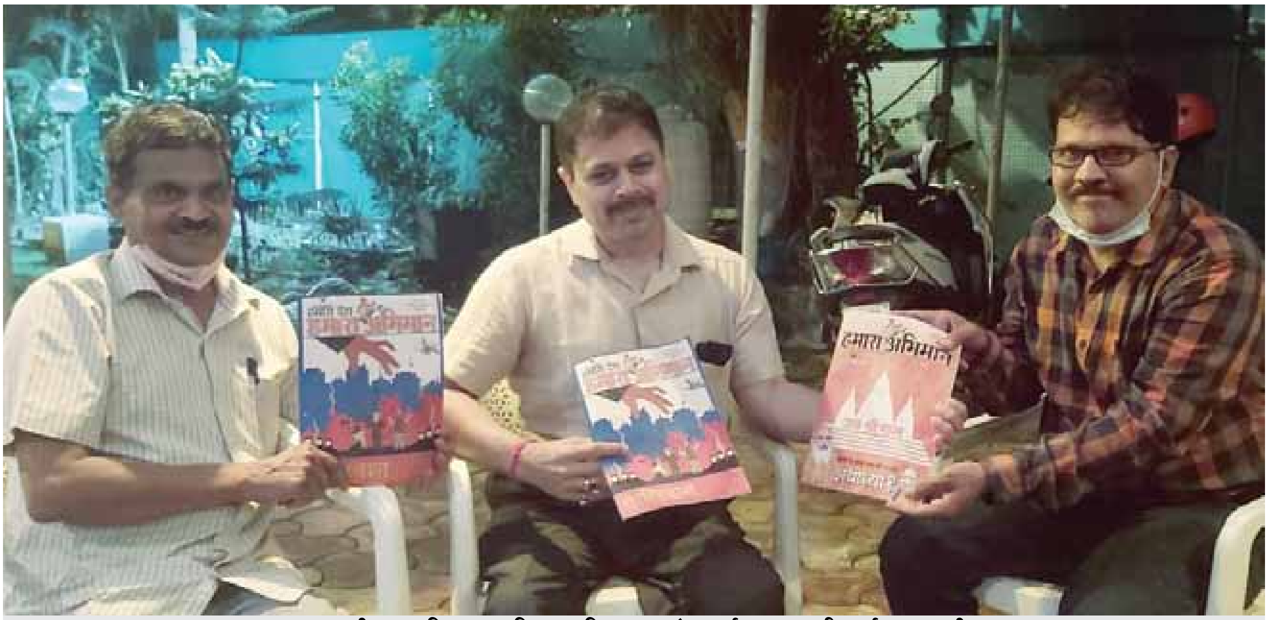

मुकुल गुप्ता जी अपर कमिश्नर नगर निगम ग्वालियर, साथ सुरेश शर्मा संरक्षक एवं रिटायर्ड नायब तहसीलदार

हमारा देश
हमारा अभिमान

वरिष्ठ संरक्षक मंडल
- अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
- श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
- श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी श्री धूमेस्वर धाम
- श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा

संरक्षक मंडल
- श्री लोकेश चतुर्वेदी • श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
- श्री अरविंद जैन • श्री अरुण कांत शर्मा
- विनोद भारद्वाज, अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
- श्री मनोज भारद्वाज, अनिल जैन, निर्मल वासवानी

संपादक : मनोज चतुर्वेदी

पंकज दीक्षित : प्रमुख परामर्शदाता

विशेष संवाददाता
- रवि परिहार • रविकांत शर्मा

कानूनी सलाहकार

एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
एडवोकेट श्याम पाठक ग्वालियर हाई कोर्ट

ब्यूरो : अविनाश जाज पुरा (उज्जैन संभाग)

छिंदवाड़ा ब्यूरो : जितेंद्र चौरे

मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)
सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

ब्यूरो राजस्थान
सुभाष सोरल (फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन– साक्षात्कार व्यवस्थापक और विज्ञापन संवाददाता इंदौर

संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

सलाहकार
- डॉ. सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
- डॉ. मुकेश चतुर्वेदी, डॉ. दिनेश प्रसाद (हड्डी रोग सर्जन)
- अनिल दुबे • विकास चतुर्वेदी • सुरेश शर्मा

मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

मार्केटिंग मैनेजर
- सुनील • हरशूल • संजू

डिजाइन : मनोज पंवार

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक मनोज कुमार चतुर्वेदी द्वारा कंचन ऑफसेट डी-1/63, सेक्टर-4, विनय नगर ग्वालियर- फोन नं. 0751-2481433, (म. प्र.) से मुद्रित एवं शिव कॉलोनी गली नं. 4 , रेलवे स्टेशन के पीछे, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर, (मध्यप्रदेश) प्रकाशित। संपादक-मनोज कुमार चतुर्वेदी।
(सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)

विवरणिका

संपादकीय	02
शुभाशीष	03
कवर स्टोरी	04-05
....	06-07
कवर स्टोरी-II	08-09
....	10-11
कवर स्टोरी	04-05
....	06-07
उत्तरप्रदेश	12
बिजनेस	13
वैक्सीनेशन	14
सरहद पार	15
देश	16-17
जज्बा	18
टेक्नॉलाजी	19
वित्त	24
धर्म	26-27
हनुमान चालीसा पाठ	40-41
इतिहास	43
बाल जगत	44
चटखारा	45
महिला	46
बॉलीवुड	47-48

संपादकीय

वादा कीजिए सहज, अनवरत और आशान्वित रहने का

जीवन एक यात्रा है और इस यात्रा के कई पड़ाव हैं, उम्र के रिश्तों के, संघर्षों के, सफलताओं के, असफलताओं के, सुख के और दुख के। विडम्बना ये है कि अधिकतर लोग इस नज़रिए को सीख ही नहीं पाते। क्योंकि वो हर पड़ाव को असाधारण मानकर उसे महसूस करने लगते हैं। यदि इस जीवनरुपी यात्रा के हर पड़ाव को शिद्दत से लेना शुरु दें तो बहुत जल्द हम जीवन और जीने की कला से वाबस्ता हो जाते हैं। इस दर्शन से फ़र्क ये पड़ता है कि हम हर उतार-चढ़ाव को सहज होकर देखना सीख जाते हैं।

हमारा देश हमारा अभियान यात्रा का एक ऐसा ही हिस्सा है। हम चलते रहेंगे हमारे पाठकों की शुभकामनाओं के साथ। इस यात्रा में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं लेकिन ये वादा है कि यात्रा सहज, अनवरत और आशान्वित रहेगी। अपने पाठकों से भी हम यही आशा रखते हैं।

शुभाशीष और शुभकामनाओं की आकांक्षाओं सहित...

मनोज चतुर्वेदी
संपादक

शुभाशीष

असफल होना सफलता के असल स्वाद को जान पाना है

जिस तरह आपके शरीर का हर हिस्सा महत्वपूर्ण और ज़रुरी है उसी तरह जीवन का हर पहलू, हर यात्रा, हर पड़ाव महवपूर्ण और ज़रुरी है। रचना प्रकृति का नियम है लेकिन यही प्रकृति विध्वंस भी लाती है। जैसे दिन होता है रात होती है उसी तरह जीवन में भी कभी सुख है तो कभी दुख है। कभी सफलता है तो कभी असफलता भी। सभी पक्ष महत्वपूर्ण हैं क्योंकि दुख नहीं होगा तो सुख का एहसास नहीं होगा। असफलता नहीं होगी तो सफलता का स्वाद पता नहीं होगा। कहा भी गया है कि सफलता का असली स्वाद वही व्यक्ति जानता है जो बार बार असफल होता रहा है। यहां इस बात का संबंध हम सभी की ज़िंदगी से है। हमें हर स्थिति में सकारात्मक रुख रखना चाहिए।

हमारा देश हमारा अभियान भी इसी दर्शन पर काम रहा है यह जानकर खुशी होती है ,साथ ही यह भी जानता हूं कि मनोज चतुर्वेदी कभी हार मानने बालो से नही है बो सच्चाई से पत्रिकारिता के लिए जाने है साथ ही सच्चाई से अबगत कराने के लिए जूनूनी है यही विशेषता इन्हें सब से अलग करती है। मेरी अनंत शुभकामनाएं महादेव भक्त मनोज चतुर्वेदी सम्पादक (हमार देश हमारा अभिमान पत्रिका) और उनकी पूरी टीम के लिए। वे सभी सफल हों साथ ही इस हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका की पहचान एवं परचम देश मे ही नही पूरे विस्व मै फैलाये और यदि असफल भी हों तो हार कर बैठने की बजाय दूने उत्साह से फिर उठ खड़े हों एक बड़ी सफलता को प्राप्त करने के लिए।

डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
संरक्षक

ग्वालियर का शाही घराना जो देश को 25 बार से ज्यादा सांसद दे चुका है...

सिंधिया परिवार मध्य और उत्तर भारत की राजनीति का एक बड़ा खिलाड़ी रहा है. सिंधिया राज घराने की पूर्व राजमाता विजया राजे से लेकर ज्योतिरादित्य तक हर किसी ने राजनीति के मैदान में जब तब सभी को चौकाया है. जोश, जिद और जुनून सिंधिया परिवार की खासियत रहा है. इनकी राजनीति में भी ये साफ नजर आता है.

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य के रगों में हैं जोश-जुनून

सिंधिया परिवार ऐसा शाही घराना है जो देश को 25 बार से ज्यादा सांसद दे चुका है। मध्य प्रदेश के ग्वालियर-चंबल की सियासत के ये सबसे बड़े खिलाड़ी रहे हैं। इस घराने के वशंज जोश और जज्बे के साथ जरूरत पड़ने पर बगावती रुख अख्तियार करने से गुरेज नहीं करता। 1957 से देश की सियासत में शामिल सिंधिया राजघराने की प्रमुख रहीं विजया राजे सिंधिया के तीसरी पीढ़ी यानी उनके पोते ज्योतिरादित्य ने जब मोदी कैबिनेट में नागरिक उड्डयन मंत्री के रूप में शपथ ली, तो एक बार फिर ये घराना सियासी बिसात की चर्चा के केंद्र में आ गया। 30 सितंबर, 2001 को पिता माधवराव की प्लेन क्रैश में असामयिक मौत के बाद ज्योतिरादित्य सिंधिया की राजनीति में एंट्री हुई। पिता के नक्शे कदम पर चलते हुए ज्योतिरादित्य भी कांग्रेस में शामिल हुए। साल 2002 में कांग्रेस की टिकट पर गुना से लोकसभा चुनाव जीते। बाद में 2004 में भी सफलता दोहराते हुए 14वीं लोकसभा के लिए चुने गए।

मार्च 2020 में जब ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस छोड़कर भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ली थी, उसके बाद तमाम कांग्रेसी नेता यह कह कर उनका मजाक उड़ा रहे थे कि कांग्रेस छोड़कर उन्हें बीजेपी में आखिर क्या मिला। हालांकि इन कांग्रेसी नेताओं को शायद यह नहीं पता कि ज्योतिरादित्य सिंधिया आज भले ही केंद्र में मंत्री बने हों, लेकिन मध्यप्रदेश में उन्होंने अपनी ताकत बीजेपी में शामिल होते ही दिखानी शुरू कर दी थी।

इस वक्त मध्य प्रदेश सरकार में ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ आए उनके समर्थक विधायकों में से 14 विधायक फिलहाल मंत्री हैं। इसके साथ ही इन 15 महीनों में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बीजेपी के बड़े नेताओं के साथ अपने संबंध इतने मजबूत कर लिए हैं कि जैसे लगता है वह शुरू से ही बीजेपी का ही हिस्सा रहे हैं। मध्यप्रदेश में भी शिवराज वर्सेस सिंधिया करने की खूब कोशिश हुई। लेकिन शिवराज सिंह चौहान और ज्योतिरादित्य सिंधिया के सूझबूझ ने मध्यप्रदेश में ऐसा होने नहीं दिया। आपको याद होगा जब बीजेपी में शामिल होने के बाद पहली बार ज्योतिरादित्य सिंधिया भोपाल शिवराज सिंह के घर पहुंचे थे तो उस वक्त शिवराज सिंह की पत्नी साधना सिंह ने खुद उन्हें अपने हाथों से खाना परोसा था। मध्य प्रदेश के उपचुनाव के दौरान भी सिंधिया और शिवराज सिंह चौहान एक साथ प्रचार प्रसार करते दिखे थे।

ग्वालियर और चंबल के इलाकों में दबदबा

ग्वालियर और चंबल संभाग में ज्योतिरादित्य सिंधिया की शक्ति का मुकाबला न कोई कांग्रेस में कर सकता है ना ही बीजेपी में, वहां उनकी पकड़ घर घर में है। बीजेपी हमेशा से इन इलाकों में कमजोर रही है और उसे यहां जीतने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन अब जब ज्योतिरादित्य सिंधिया खुद बीजेपी में आ गए हैं तो बीजेपी के लिए यह इलाका भी जीतना काफी आसान हो गया है। ज्योतिरादित्य सिंधिया जिस तरह से बीजेपी के अंदर अपनी पैठ बना रहे हैं उसे देखकर कोई भी कह सकता है कि ज्योतिरादित्य सिंधिया आने वाले समय में भारतीय जनता पार्टी के लिए एक बड़ा चेहरा साबित होने वाले हैं। सिंधिया न केवल दिल्ली में बीजेपी के बड़े नेताओं में अपनी पैठ बना रहे हैं, बल्कि मध्य प्रदेश के बीजेपी नेताओं और कार्यकर्ताओं में भी अपनी पकड़ मजबूत कर रहे हैं। हाल ही में जब ज्योतिरादित्य सिंधिया मालवा के दौरे पर गए थे तो वहां उन्होंने नीमच, मंदसौर, रतलाम, धार और उज्जैन में बीजेपी कार्यकर्ताओं के घर-घर जाकर उनसे मुलाकात की थी और उनका हालचाल जाना था। बीजेपी कार्यकर्ताओं ने जिस तरह से सिंधिया से मुलाकात की और पूरी गर्मजोशी से उनका स्वागत किया, इससे साफ संकेत जाता है कि अब ज्योतिरादित्य सिंधिया की पकड़ बीजेपी कार्यकर्ताओं में भी तेजी से बन रही है।

कांग्रेस के लिए खतरे की घंटी

ज्योतिरादित्य सिंधिया को कैबिनेट में शामिल करके बीजेपी ने संकेत दे दिया है कि दूसरी पार्टी से आए हुए नेताओं को भी भारतीय जनता पार्टी में उतना ही सम्मान दिया जाता है जितना कि उसके अपने नेताओं को दिया जाता है। कहीं ना कहीं यह संकेत राजस्थान में सचिन पायलट और महाराष्ट्र में मिलिंद देवड़ा तक भी पहुंच रहा होगा। दरअसल कुछ दिन पहले ही उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के बड़े नेता जितिन प्रसाद ने भी बीजेपी का दामन थाम लिया, जिसके बाद मीडिया हलकों में यह खबरें चली की गहलोत सरकार से नाराज सचिन पायलट भी जल्द ही बीजेपी का दामन थाम सकते हैं।

अब जब ज्योतिरादित्य सिंधिया को मोदी कैबिनेट उचित सम्मान दिया गया है, तो जाहिर सी बात है इसे देखकर कहीं ना कहीं सचिन पायलट, मिलिंद देवड़ा और नवजोत सिंह सिद्धू जैसे नेताओं में एक उम्मीद जरूर जागी होगी। कांग्रेस के लिए यह खतरे की घंटी है अगर वह जल्द से जल्द अपने संगठन में युवा बनाम बुजुर्ग की लड़ाई नहीं खत्म करती है तो वह दिन दूर नहीं जब कांग्रेस के तमाम युवा नेता भारतीय जनता पार्टी का अंग वस्त्र पहने खड़े दिखाई देंगे। क्योंकि केंद्र में ज्योतिरादित्य सिंधिया को मंत्री बनाकर और असम में हेमंत बिस्व सरमा को मुख्यमंत्री बनाकर बीजेपी ने साफ संदेश दे दिया है कि जिनको कांग्रेस में काबिल होते हुए भी इज्जत नहीं मिलती उन्हें बीजेपी अपने सिर माथे पर बिठाकर रखती है।

रॉकेट की तरह भाजपा में

18 महीने में मिले चार प्रमोशन

भारतीय जनता पार्टी ने अपनी राष्ट्रीय कार्यसमिति की घोषणा की। जहां कई चेहरों को इसमें जगह मिली तो वहीं कई ऐसे चेहरे भी रहे जिन्हें इसमें जगह नहीं मिली। इन लोगों में सुल्तानपुर से सांसद मेनका गांधी, पीलीभीत से सांसद वरुण गांधी और सुब्रह्मण्यम स्वामी रहे जिन्हें इसमें जगह नहीं दी गई। राष्ट्रीय कार्यसमिति में मध्य प्रदेश से शामिल किए गए नए चेहरों में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और गृह मंत्री डा नरोत्तम मिश्रा रहे। यहां ध्यान देने वाली बात ये रही कि करीब डेढ़ साल पहले कांग्रेस के हाथ को छोड़ भारतीय जनता पार्टी का हाथ थामने वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया का कद लगातार बढ़ता जा रहा है। पार्टी की तरफ से उन्हें सरकार से लेकर संगठन तक में बड़ी जिम्मेदारी दी गई हैं। हालांकि, याद हो जब ज्योतिरादित्य सिंधिया भाजपा में शामिल हुए थे तो कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा था कि वो मुख्यमंत्री बन गए होते अगर वो कांग्रेस के साथ रहे होते लेकिन भाजपा में वो बैकबेंचर बन गए हैं। बीजेपी में सिंधिया का बढ़ता कद राहुल गांधी की उन बातों पर एक तरह से जवाब है जो उन्होंने पार्टी में रहकर कमाया है।

मंत्रिमंडल में मिली जगह

हेमंत विश्व शर्मा के मुख्यमंत्री बनने के बाद मोदी कैबिनेट का विस्तार हुआ तो पीएम नरेंद्र मोदी की नई टीम में ज्योतिरादित्य सिंधिया को जगह दी गई। उन्हें नागरिक उड्डयन मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी गई। पद संभाले हुए सिंधिया को अभी करीब तीन महीने हुए हैं कि उन्होंने अपने काम से सभी को प्रभावित किया। अपने गृह प्रदेश एमपी को भी सिंधिया ने कई सौगातें दी साथ ही सिंधिया के समर्थक भी उनके पक्ष में माहौल बनाने में किसी तरह की कोई कसर नहीं छोड़ते यही कारण है कि उनके कद में एक के बाद एक कर बढ़ोतरी हो रही है।

मप्र का प्रतिनिधित्व बढ़ा

पहला अवसर है जबकि राष्ट्रीय कार्यसमिति में मप्र का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। कार्यसमिति में 50 विशेष आमंत्रित सदस्य और 179 स्थाई आमंत्रित (पदेन) सदस्य बनाए गए हैं। कार्यसमिति में भी सामाजिक और भौगोलिक संतुलन बनाए जाने पर विशेष जोर दिया गया है।केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर पहले भी राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य रह चुके हैं। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह के कार्यकाल में तोमर राष्ट्रीय महासचिव भी रहे हैं।

कार्यसमिति में शामिल

राष्ट्रीय महासचिव होने के नाते कैलाश विजयवर्गीय, कोषाध्यक्ष सुधीर गुप्ता, राष्ट्रीय मंत्री ओमप्रकाश धुर्वे, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति मोर्चा के अध्यक्ष लाल सिंह आर्य भी कार्यसमिति में शामिल किए गए हैं। सांसद संध्या राय और फग्गन सिंह कुलस्ते को विशेष आमंत्रित बनाया गया है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा प्रदेश संगठन महामंत्री सुहास भगत,सह संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, भगवत शरण माथुर, इसके अतिरिक्त सह संगठन महामंत्री शिव प्रकाश, महाराष्ट्र के सह प्रभारी जयभान सिंह पवैया को स्थाई आमंत्रित सदस्य नियुक्त किया गया है। पश्चिम बंगाल के सह प्रभारी होने के नाते मप्र के पूर्व प्रदेश संगठन महामंत्री अरविंद मेनन भी पदेन सदस्य बनाए गए हैं। पूर्व मुख्यमंत्री के नाते पदेन सदस्यों की सूची में उमा भारती का नाम शामिल है।

सिंधिया की इन कारणों

1 सिंधिया ने सोची-समझी रणनीति के तहत संयम की राजनीति की। उन्हें लेकर पार्टी में बार-बार सुर उठे, लेकिन सिंधिया ने संयम रखा। सभी को सकारात्मक रिस्पांस दिया।

2 सिंधिया ने हर गुट में संतुलन साधा। हर गुट में बड़े नेता से लेकर छोटे कार्यकर्ता तक के घर गए। हर दौर में छोटे नेताओं को भी साधा। यहां तक कि पार्षद स्तर तक के घर गए।

3 जिसने भी खुलकर विरोध किया, उससे सिंधिया ने मुलाकात की। मसलन, उमा भारती, जयभान सिंह पवैया सहित अन्य नेता। इसके बाद इनके विरोध के सुर बदले। उमा तो प्रशंसक हो गई।

4 लंबी रेस की राजनीति की रणनीति पर चलते हुए आरएसएस में पैठ बढ़ाई। संघ मुख्यालय गए। साथ ही मध्यप्रदेश के भोपाल-इंदौर संघ कार्यालय भी पहुंचे। संघ से संवाद बढ़ाया।

बढ़ रहा सिंधिया का कद

से भी बढ़ी स्वीकार्यता

भाजपा जीतेगी उपचुनाव

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दावा किया कि मध्य प्रदेश में लोकसभा की एक सीट और तीन विधानसभा सीटों के लिए 30 अक्टूबर को होने वाले उपचुनाव में भाजपा सभी चार सीटों पर जीत दर्ज करेगी। सिंधिया ने ग्वालियर में संवाददाताओं से कहा कि आम लोगों का भरोसा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ है, इसलिए उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार सभी सीटों पर जीत हासिल करेंगे। मध्य प्रदेश की खंडवा लोकसभा सीट और तीन विधानसभा सीटों- निवाड़ी जिले की पृथ्वीपुर, अलीराजपुर जिले की जोबट और सतना जिले की रैगांव में 30 अक्टूबर को मतदान होगा और मतों की गिनती दो नवंबर को होगी। इनमें से खंडवा लोकसभा एवं रैगांव विधानसभा सीट भाजपा सदस्यों की निधन के कारण खाली हुई हैं, जबकि पृथ्वीपुर एवं जोबट विधानसभा सीटें कांग्रेस विधायकों के निधन के कारण रिक्त हुई हैं।

भाजपा में बढ़ी स्वीकार्यता

सिंधिया के केंद्रीय मंत्री बनने के बाद भाजपा में उनकी स्वीकार्यता बढ़ी है। दरअसल, केंद्रीय मंत्री बनने के पहले सिंधिया के खिलाफ पार्टी में सुर बुलंद होते रहते थे, लेकिन अब धीरे-धीरे ये सुर बंद पड़ गए हैं। अब विरोध करने वाले भी खिलाफत को मौन रख रहे हैं। इसलिए दिल्ली में सिंधिया के दरबार में मध्यप्रदेश के नेताओं की हाजरी बढ़ती जा रही है। अभी करीब कुछ मंत्रियों ने दिल्ली में सिंधिया से मुलाकात के लिए समय मांगा है। अधिकतर नेता ऐसे हैं, जो सीधे लाइम लाइट में आने की बजाए सिंधिया से जुगलबंदी बढ़ाने के प्रयास कर रहे हैं। इससे आने वाले समय में सिंधिया का दबदबा और बढ़ता नजर आ सकता है।

पहले ये दिक्कत थी

- पार्टी में लगातार कई धड़े विरोध कर रहे थे। वजह सत्ता व संगठन में सिंधिया टीम को लगातार जगह मिलना था।
- पार्टी के कई नेता संगठन में सिंधिया टीम को कोई जगह न देने के लिए आवाज उठा रहे थे। कुछ मंत्री व अन्य नेताओं ने यह बात उच्च नेताओं से भी कहीं थी।
- 28 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव और उसके बाद भी सिंधिया के भविष्य को लेकर बार-बार सवालिया निशान लगाए जाते रहे। पार्टी के कुछ नेता ही इसे हवा देते रहे।
- ग्वालियर-चंबल में सिंधिया के सियासी संतुलन को लेकर कई सवाल रहे। इलाके के वरिष्ठ नेताओं से सिंधिया की पटरी न बैठना खुलकर सामने आया।
- मप्र में कोरोना रोकथाम, आक्सीजन-इंजेक्शन के इंतजाम सहित अन्य केंद्र से मिले लाभ पर श्रेय पर खूब रस्साकशी हुई। सिंधिया के कदमों पर सवाल भी उठे।

अब ये बदलाव हुआ

- केंद्रीय मंत्री बनने के बाद सिंधिया से श्रेय की खींचतान पर लगाम लगी।
- मध्यप्रदेश के नेता उलटे सिंधिया से प्रदेश के लिए मांग लेकर पहुंचने लगे।
- अनेक मंत्री-विधायक-सांसद सहित अन्य नेता सम्पर्क बढ़ाने लगे।
- सिंधिया गुट के लिए भी मध्यप्रदेश में जगह बनी, विरोध अपेक्षाकृत ठंडा हुआ।
- सिंधिया की वजनदारी बढी। मप्र को जिस तरह सौगातें दी तो कद बढ़ा।
- शीर्ष नेतृत्व की लाइन देखकर विरोधी गुट फिलहाल चुप्पी साध गए।

---

5 भाजपा की पहली पंक्ति के सभी नेताओं से सीधा सम्पर्क रखा। पीएम नरेंद्र मोदी, अमित शाह, जेपी नड्डा सहित अन्य नेताओं तक सीधी एप्रोच व संतुलित संवाद रखा।

6 सीएम चौहान से शुरुआत से सकारात्मक संवाद करके जोड़ी बनाई। भाजपा ज्वाइनिंग के बाद पहले दौरे में ही शिवराज के घर भोजन करके समन्वय का संदेश दिया।

3 जिसने भी खुलकर विरोध किया, उससे सिंधिया ने मुलाकात की। मसलन, उमा भारती, जयभान सिंह पवैया सहित अन्य नेता। इसके बाद इनके विरोध के सुर बदले। उमा तो प्रशंसक हो गईं।

8 मध्यप्रदेश को दो दिन में फ्लाइट की सुविधा दी। इसके बाद भी मप्र को सौगातें बढ़ा दी। मध्यप्रदेश दौरे में भी सक्रिय रहे। प्रदेश की सुविधाओं को लेकर भविष्य का प्लान भी लागू किया।

पंजाब... कांग्रेस ने बड़ी गलती कर दी

ठेठ ग्रामीण कहावत है- पेट वाले की आस में गोद वाले का त्याग, याने जो बच्चा अभी पेट में पड़ा ही है उसकी आशा में गोद वाले बच्चे को त्यागना स्यानप नहीं। परन्तु पंजाब कांग्रेस ने तो पेट वाले चन्नी की आशा में गोद वाले को तो क्या, कैप्टन जैसे कमाऊ पूत को ही वनवास दे दिया है।

• राकेश सैन

ना समझ पांव पर कुल्हाड़ी मारते हैं परन्तु कांग्रेस ने तो गोली मारी है। कैप्टन जैसे कुशल व सशक्त नेतृत्व के चलते 2022 के विधानसभा चुनावों के लिए पंजाब कांग्रेस जहां बढ़त में दिख रही थी, वह आज अन्य दलों के समकक्ष कमजोर नेतृत्व से सुसज्जित दिखाई देने लगी है। पंजाब में चुनावों के लिए ताल ठोक रहे अकाली दल बादल के पास सुखबीर सिंह बादल के बावजूद कैप्टन के समक्ष कोई नेता नहीं था और आम आदमी पार्टी के पास भी अमरिन्दर सरीखे चेहरे का अभाव था। रही बात भाजपा की, तो वह तो अभी ताजा-ताजा ही अकालियों की गर्भनाल से अलग हुई है, सो उसके पास तो कद्दावर नेता होने की अभी अपेक्षा भी बेमानी है। कैप्टन को दरकिनार कर कांग्रेस ने अपनी राजनीतिक हराकीरी का ईमानदार व गम्भीर प्रयास किया है।

पंजाब की राजनीति शुरू से ही कांग्रेस और अकाली दल के बीच दो ध्रुवीय रही है। कहने को यहां भाजपा, बसपा, आम आदमी पार्टी व कई स्थानीय दल हैं परन्तु इनका अस्तित्व या तो गठजोड़ पर निर्भर है या कई दल अभी संघर्षरत हैं। 1997 के विधानसभा चुनावों के बाद से कांग्रेस में राजिन्द्र कौर भट्ठल युग के अवसान के बाद एक ध्रुव पर अकाली दल के नेता प्रकाश सिंह बादल और दूसरी छोर पर कैप्टन अमरिन्दर सिंह स्थापित हो गए। पिछले दो-अढ़ाई दशकों से प्रदेश की राजनीति दो दलों की बजाय इन दोनों नेताओं के इर्द-गिर्द सिमटती अधिक नजर आने लगी। अकाली दल से आने के बावजूद कैप्टन ने अपनी आक्रामक शैली से ऐसी छवि बनाई कि वे प्रकाश सिंह बादल का विकल्प बने और 2002 में कांग्रेस की सरकार गठित करने में सफल रहे। इसके बाद 2007 और 2012 में प्रकाश सिंह बादल और 2017 में फिर से कैप्टन सत्ता में आए। लेकिन इस दौरान प्रकाश सिंह बादल के वयोवृद्ध हो जाने के कारण प्रदेश की राजनीति का दूसरा ध्रुव लुप्त हो गया। चाहे बड़े बादल ने अपने पुत्र सुखबीर सिंह बादल को स्थापित करने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद सहित हर तरह की नीति का पालन किया परन्तु कैप्टन के समक्ष अभी तक सुखबीर एक संघर्षरत नेता के रूप में ही नजर आ रहे थे।

इस दो ध्रुवीय राजनीति को तोड़ना इतना मुश्किल था कि 2017 के विधानसभा चुनावों में दिल्ली की सनसनी बन कर उभरी आम आदमी पार्टी के नेता अरविन्द केजरीवाल हर तरह के छल-बल और लटकों-झटकों का प्रयोग करने के बाद भी पंजाब की राजनीतिक सीढ़ियों से फिसल कर औंधे मुंह गिरे। अन्ना हजारे की चेला बिरादरी 'केजरीवाल-केजरीवाल सारा पंजाब तेरे नाल' नारे लगाते दिल्ली से आई और 'केजरीवाल-केजरीवाल एह की होया तेरे नाल' की आह भरते हुए देश की राजधानी वापिस लौट गई। पूर्व मुख्यमन्त्री अमरिन्दर सिंह

पंजाब में कितनी बड़ी चुनौती बन पाएंगे कैप्टन अमरिंदर?

राजनीति की एक ख़ासियत यह भी होती है कि वह किसी को उसके रसूख का स्थायी प्रमाणपत्र नहीं देती। सियासी ज़िंदगी में कई बार ऐसे मौके आते हैं, जब ख़ुद को साबित करना होता है। दो बार के मुख्यमंत्री रहे और करीब चार दशक से पंजाब की सियासत की धड़कन को बहुत नजदीक से सुनने वाले कैप्टन अमरिंदर सिंह के लिए भी ख़ुद को साबित करने की घड़ी आ गई है। उनके सामने एक विकल्प यह था कि आलाकमान के हुक्म पर वह मुख्यमंत्री का पद छोड़कर अपने लिए अगले आदेश की प्रतीक्षा करते। इस दरम्यान खामोशी से अपने लिए नए रास्ते भी तलाश कर सकते थे, लेकिन पद छोड़ते ही उन्होंने जिस तरह 'रिएक्ट' किया, उसके बाद उनके सामने पंजाब में अपनी ताकत दिखाने की चुनौती भी आ खड़ी हुई है।

कैप्टन अमरिंदर सिंह राजसी परिवार से आते हैं। सैन्य अधिकारी भी रहे हैं, लेकिन राजनीति में उनका जो रसूख बढ़ा, वह वाया कांग्रेस ही बढ़ा। राजीव गांधी की मित्रता के ज़रिए उनकी कांग्रेस में एंट्री हुई थी। 1980 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने कांग्रेस के टिकट पर पहला चुनाव लड़ा और जीत दर्ज की, लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के 'आपरेशन ब्लू स्टार' से आहत होकर उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और शिरोमणि अकाली दल में शमिल हो गए। 1985 का विधानसभा चुनाव उन्होंने अकाली दल के टिकट पर लड़ा और जीता।

सुरजीत सिंह बरनाला के नेतृत्व में अकाली दल की सरकार बनी, उसमें कैप्टन मंत्री भी हुए, लेकिन अगले चुनाव में उन्हें बहुत बुरी तरह का हार का सामना करना पड़ा। उन्हें महज 856 वोट ही मिले। इसके बाद उन्होंने अकाली दल से अलग होकर अपनी अलग पार्टी बनाई, लेकिन पंजाब की सियासत में उन्हें अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल लगने लगा। इसके बाद उन्होंने कांग्रेस में वापसी करी। कांग्रेस वापसी के साथ ही राजनीति में उनका रसूख बढ़ना शुरू हुआ। कांग्रेस के वह प्रदेश अध्यक्ष हुए। 2002 में कांग्रेस को जब बहुमत मिला, तो वह राज्य के मुख्यमंत्री रहे। 2014 के लोकसभा के चुनाव में अमृतसर सीट पर उन्होंने बीजेपी-अकाली दल के साझा उम्मीदवार अरुण जेटली को हरा दिया। 2017 के विधानसभा चुनाव में जब कांग्रेस को फिर से बहुमत मिला, तो उन्हें फिर से मुख्यमंत्री बनाया गया। इधर उनकी पत्नी भी 2014 के चुनाव को छोड़कर 1999 से सांसद हो रही हैं। इस वक्त भी वह कांग्रेस से सांसद हैं। मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए-2 सरकार में वह मंत्री भी रहीं।

कैप्टन की मुश्किल यह है कि वह पंजाब की राजनीति से अपने को दूर नहीं करना चाहते। केंद्रीय राजनीति में अगर उनकी कोई दिलचस्पी होती, तो शायद विवाद इतना तूल नहीं पकड़ता। कांग्रेस की तरफ से उन्हें कई बार केंद्रीय राजनीति में आने का ऑफर दिया गया, जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उनसे जुड़ा दूसरा तथ्य यह है कि वह मुख्यमंत्री ही बनना चाहते हैं। कांग्रेस में उनके मुख्यमंत्री बनने की संभावनाएं ख़त्म ही हो गई हैं। उन्होंने ख़ुद ही एलान कर दिया है कि वह कांग्रेस में नहीं रहने वाले। अकाली दल में उनके दोबारा जाने की भी कोई संभावना इसलिए नहीं है कि वहां उनके मुख्यमंत्री बनने की कोई गुंजाइश नहीं।

शिरोमणि अकाली दल के सेक्रेटरी जनरल सरदार बलविंदर सिंह भूंदड़ ने एनबीटी से बातचीत में खुलकर कहा, 'हमारे मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार सुखबीर सिंह बादल हैं। अकाली दल+बीएसपी गठबंधन को बहुमत मिलने पर वह ही मुख्यमंत्री होंगे। इस फैसले में बदलाव का कोई सवाल ही नहीं।' अब दो विकल्प बचते हैं। एक या तो अपनी पार्टी बनाएं या फिर बीजेपी में जाएं? 80 साल की उम्र में नई पार्टी बनाना और उसे स्थापित करना बहुत मुश्किल काम है। अकाली दल से अलग होने पर अलग पार्टी बनाने का अनुभव भी कैप्टन के लिए बहुत अच्छा नहीं रहा है। रही बात बीजेपी में जाने की। कैप्टन के ख़िलाफ़ साढ़े चार साल में एंटी इनकम्बेसी फैक्टर बहुत हावी रहा है। इसी फीडबैक के आधार पर ही कांग्रेस उन्हें हटाने को राजी हुई थी। बीजेपी उन्हें मुख्यमंत्री का चेहरा बनाकर बहुत फायदे में नहीं रहने वाली। हां, किसानों के साथ संवाद का रास्ता ज़रूर खुल सकता है।

कैप्टन भी यह आकलन करना चाहते हैं कि क्या बीजेपी सरकार बनाने तक की स्थिति में पहुंच सकती है? बीजेपी पिछले पांच चुनाव से अकाली दल के सहारे चुनाव लड़ती रही है। 117 सीट वाले राज्य में अकाली दल उसके लिए सिर्फ 23 सीट छोड़ता रहा है। 2012 के चुनाव में उसे इन 23 सीटों में 12 पर जीत मिली और 2017 में सिर्फ तीन पर यानी कि राज्य का जो मौजूदा परिदृश्य है, उसमें कैप्टन के लिए नया रास्ता चुनना बहुत आसान नहीं।

अब सवाल है कि शाह और डोभाल से कैप्टन की मुलाकात के मायने क्या हैं? कैप्टन लगातार नवजोत सिंह सिद्धू के पाकिस्तानी रिश्तों पर अंगुली उठाते आए हैं। उसके ज़रिए वह सिद्धू को पंजाब और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ख़तरा बता रहे हैं। पंजाब की संवेदनशीलता इसलिए ज़्यादा है कि वह पाकिस्तान की सीमा से जुड़ा हुआ है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और उसके बाद राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल से जो मुलाकात हुई, वह इसी संदर्भ से जोड़कर देखी जा रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार को कुछ दस्तावेजी सबूत देने की भी चर्चा है। पाकिस्तान और राष्ट्रीय सुरक्षा, यह दो ऐसे मुद्दे हैं, जिनके ज़रिए कैप्टन अपने प्रतिद्वंदी सिद्धू के लिए भी मुश्किल खड़ी कर सकते हैं और कांग्रेस के लिए भी। लेकिन कहीं अमरिंदर का फायदा होता नहीं दिख रहा। कैप्टन इसलिए तो खुश हो सकते हैं कि उन्होंने अपने विरोधी का खेल बिगाड़ दिया, लेकिन अपना खेल बनने की खुशी मिलना अभी दूर की कौड़ी लग रही है। वैसे अभी चुनाव के करीब पांच महीने बाकी हैं। पंजाब की सियासत में कई नए उलटफेर भी देखने को मिल सकते हैं।

के नेतृत्व वाली साढ़े चार साल पुरानी सरकार पर चाहे चुनावी वायदे न निभाने के आरोप लगने लगे थे और विपक्ष कांग्रेस सरकार को घेरने लगा था, परन्तु इसके बावजूद भी समूचे विपक्ष के पास कैप्टन के समकक्ष कद्दावर नेता नहीं था। इस बात को यूं भी कहा जा सकता है कि पंजाब में कैप्टन की कुछ-कुछ स्थिति केन्द्र की राजनीति के नरेन्द्र मोदी जैसी बन गई थी। प्रदेश की राजनीति पूरी तरह एक ध्रुवीय चली आ रही थी जो कांग्रेस के लिए अत्यन्त लाभकारी थी, परन्तु जिस पार्टी ने एड़ी उठा कर फन्दा गले में डाल लिया हो उसकी सांसों के बारे में क्या कहा जा सकता है ?

कांग्रेस नेतृत्व को गौर करना चाहिए था कि कैप्टन में नेतृत्व का गुण अनुवांशिकी है, पूर्वजों से मिला है। उनकी आक्रामक शैली पंजाब की प्रकृति से मेल खाती है जिसके चलते लोग उन पर विश्वास करते थे। जाट समुदाय से आने के बावजूद सर्व समाज का उन पर विश्वास था। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि संघ परिवार और भाजपा का काडर भी उन्हें पसन्द करता रहा है। पंजाब में उनका राजनीतिक अस्तित्व पार्टी के खास परिवार या केन्द्रीय नेतृत्व पर निर्भर नहीं था, यही कारण रहा कि 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी 'चाहूंदा है पंजाब-कैप्टन दी सरकार' के नारे के चलते दो तिहाई बहुमत से सत्ता में लौटा था। राष्ट्रीय मुद्दों पर अपने केन्द्रीय नेतृत्व के इतर बेबाकी से राय रखने वाले कैप्टन ने अपने इन्हीं गुणों के चलते पूरे देश में विशिष्ट पहचान बनाई थी। वे कांग्रेसी नेताओं की तरह कभी भेड़चाल में शामिल नहीं हुए और यही गुण शायद उनकी कमजोरी बन गया, क्योंकि पार्टी का खास कुनबा अपनी वंशबेल बड़ी रखने के लिए खुद के ही कद्दावर नेताओं के राजनीतिक घुटने छांगने में अधिक विश्वास करता है।

पंजाब कांग्रेस के नेतृत्व परिवर्तन घटनाक्रम ने प्रदेश की राजनीति में जातीयता की दरारों को और गहरा दिया, साथ में मजेदार बात है कि इसे कांग्रेस का मास्टर स्ट्रोक भी कहा जा रहा है। चरणजीत सिंह चन्नी को पहला दलित मुख्यमन्त्री बता कर प्रदेश के 32 प्रतिशत इस वर्ग के मतदाताओं को साधने का दावा किया गया है परन्तु विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू को चेहरा बताया जा रहा है जो जाट सिख हैं। अगर ऐसा होता है तो दलितों का कांग्रेस से नाराज होना तय है क्योंकि चन्नी के रूप में खड़ाऊं मुख्यमन्त्री सीधा-सीधा उनका अपमान होगा। सिद्धू को अपनी शर्तों पर फैसले करवाने की आदत है, चुनावों में उन्हें पार्टी आलाकमान नाराज नहीं कर पाएगा। पार्टी यदि सिद्धू के चेहरे को मुख्यमन्त्री के रूप में आगे करती है तो न सिर्फ दलित समुदाय की नाराजगी मोल लेनी होगी, बल्कि एक दलित मुख्यमन्त्री को गैर दलित चेहरे से 'दलित विरोधी' छवि का भी सामना करना होगा। चाहे पंजाब के ग्रामीण समाज में जातीयता की जड़ें गहराई तक समाई हुई हैं परन्तु चुनावों में जाति कोई बड़ा मुद्दा नहीं बनती। कभी सुनने में नहीं आया कि यहां के लोगों ने जातीय आधार पर उच्च स्तर पर मतदान किया हो। अगर ऐसा होता तो बहुजन समाज पार्टी जो कभी पंजाब में बड़ी तेजी से उभरी थी आज रसातल में नहीं पहुंची होती। बसपा हर बार दलित चेहरे को ही मुख्यमन्त्री के रूप में पेश करती आई है परन्तु दलितों ने उसे कभी गम्भीरता से नहीं लिया। पंजाब का दलित मतदाता कांग्रेस, अकाली दल, वामदलों और न्यूनाधिक भाजपा व आम आदमी पार्टी में बिखरा हुआ है, चन्नी के चलते यकायक कांग्रेस के पक्ष में यह सभी एकमुश्त एकजुट हो जायें ये तो बहुत बड़ा चमत्कार ही होगा। फिलहाल कांग्रेस को कैप्टन के रूप में अपनी अमूल्य निधी को सम्भालने का प्रयास करने की जरूरत है, क्योंकि पेट वाला कैसा निकलता है पता नहीं परन्तु गोद वाला आजमाया हुआ है।

पंजाब प्रयोगशाला नहीं!

पंजाब की सियासत में तूफान मचा हुआ है। पंजाब जैसे पाकिस्तान की सीमा से लगे सीमांत राज्य में न तो राजनीतिक उठापटक बर्दाश्त की जा सकती है न ही इस संजीदा राज्य को राजनीतिक प्रयोगशाला बनाया जा सकता है। पंजाब का इतिहास बताता है कि यहां हर समय राजनीतिक स्थिरता का माहौल रहा है, चाहे सत्ताधारी राजनीतिक दल बदलते रहे हों परन्तु शासकीय स्तर पर स्थिरता का माहौल कमोबेश बना रहा है। 1967 में जब भारत के 9 राज्यों में कांग्रेस पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला था तो पहली बार इस राज्य को अकाली दल और जनसंघ ने गठजोड़ करके सरकार बनाई थी, जो लगभग एक वर्ष भी नहीं चल पाई थी और लक्ष्मण सिंह गिल ने अकाली दल से विद्रोह करके इस सांझा सरकार को गिरा दिया था। इसके बाद लक्ष्मण सिंह गिल की सरकार भी कुछ महीने ही चली। आतंकवाद के काले दिनों में पंजाब में राष्ट्रपति शासन भी लगाया गया। सिद्धार्थ शंकर रे से लेकर अर्जुन सिंह तक पंजाब के राज्यपाल भी रहे। बेअंत सिंह सरकार के आने पर आतंकवाद पर काबू पाया गया और धीरे-धीरे राज्य में जनजीवन सामान्य हो गया। उसके बाद शिरोमणि अकाली दल और कांग्रेस की सरकारें बारी-बारी से सत्ता में आती रहीं। पंजाब में राजनीतिक स्थिरता का ही माहौल रहा।

वर्तमान में राज्य विधानसभा में कांग्रेस का पूर्ण बहुमत होने के बावजूद जिस प्रकार राजनीतिक रूप से अस्थिरता का माहौल है वह चिंता का विषय है और इसका मुख्य कारण कोई और नहीं बल्कि कल तक सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रहे नवजोत सिंह सिद्धू स्वयं हैं। यह पंजाब की राजनीति का ऐसा अध्याय है जो इससे पहले कभी देखने को नहीं मिला। इससे यह स्पष्ट होता है कि बदलते दौर की राजनीति निजी स्वार्थों के जाल में पूरी तरह फंस चुकी है, जिसकी वजह से कांग्रेस ने अपने पुराने वफादार कर्मठ नेता कैप्टन अमरेन्द्र सिंह को गंवा दिया और राज्य के पहले दलित मुख्यमंत्री बने चरणजीत सिंह चन्नी के लिए मुश्किलों का अम्बार खड़ा कर दिया। नवजोत सिंह सिद्धू की मुख्यमंत्री चन्नी से मुलाकात हो गई है। अब सिद्धू के स्वर काफी धीमे नजर आए। अब सुलह सफाई का मार्ग ढूंढ भी लिया जाए लेकिन कांग्रेस को डैमेज हो चुका है।

पंजाब की सियासत में इस समय कांग्रेस में ही तीन गुट बन गए हैं। एक नवजोत सिंह सिद्धू, दूसरा चरणजीत चन्नी का ग्रुप और तीसरा कैप्टन अमरेन्द्र सिंह के समर्थकों का ग्रुप। कांग्रेस में पूरी तरह से अराजकता का माहौल है। कैप्टन अमरेन्द्र सिंह ने दो दिन दिल्ली में रहकर अटकलबाजियों को पूरी हवा दे दी है। कैप्टन अमरेन्द्र सिंह ने गृहमंत्री अमित शाह से लम्बी मुलाकात की। इसके बाद से ही पंजाब की सियासत में चक्रवात आ गया। यद्यपि बैठक के बाद कैप्टन अमरेन्द्र सिंह ने यही जानकारी दी कि उन्होंने गृहमंत्री से किसान आंदोलन को लेकर चर्चा की और उन्होंने तीनों कृषि कानूनों को निरस्त करके संकट को हल करने का आग्रह किया। इसके साथ ही कैप्टन ने अपने सभी राजनीतिक विकल्प खुले रखे। राजनीति सम्भावनाओं का खेल होती है। इस तरह की अटकलें लगाई जाने लगीं की कैप्टन अमरेन्द्र सिंह भाजपा में शामिल हो सकते हैं या फिर भाजपा के करीब हो सकते हैं। कैप्टन अमरेन्द्र सिंह राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल से भी मिले। इस बैठक में सीमांत राज्य पंजाब की सुरक्षा को लेकर भी चर्चा हुई। हालांकि कैप्टन अमरिन्द्र सिंह ने साफ किया कि कांग्रेस नेतृत्व ने उन्हें अपमानित किया। अब अपमान सहन नहीं होता। उन्होंने कहा कि मैं कांग्रेस छोड़ रहा हूं। इसके साथ ही उन्होंने भाजपा सहित किसी भी पार्टी में शामिल होने से इंकार किया। अब कयास लगाए जा रहे हैं कि यदि कैप्टन अमरेन्द्र सिंह भाजपा के साथ जाते हैं तो उससे भाजपा को अगले साल होने वाले चुनाव में आसानी होगी।

अभी किसान आंदोलन के कारण भाजपा और उसके नेताओं के किसानों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है। राजनीतिक क्षेत्रों में इस बात की चर्चा है कि हो सकता है कि कैप्टन अमरेन्द्र सिंह राज्य स्तर पर अपनी पार्टी की स्थापना करें और आने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा से वह गठबंधन करें। पंजाब की उलझी सियासत ने कांग्रेस के जी-23 के नेताओं ने भी सवाल खड़े कर दिए। भविष्य में पंजाब की सियासत क्या करवट लेती है इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन कांग्रेस को जितना नुक्सान नवजोत सिंह सिद्धू ने पहुंचाया है उसकी भरपाई नहीं हो सकती। क्रिकेट हो या राजनीति बगावत करना ही नवजोत सिंह सिद्धू का इतिहास रहा है। पंजाब देश पर जान कुर्बान करने वाले लोगों का राज्य रहा है। इनकी राजनीति राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में शुरू से ही महत्वपूर्ण रही है। पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता राज्य के लिए जोखिमपूर्ण है। पाकिस्तान पंजाब को

राजनीतिक अस्थिरता के दौर में अपने मनसूबे पूरे करने के लिए साजिशो रच सकता है। पंजाब के सीमांत क्षेत्रों में उसके ड्रोन हथियार और ड्रग्स गिराते रहते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से पंजाब बहुत ही संवेदनशील हो चुका है। पंजाब प्रयोगशाला नहीं है और न ही इसे बनाया जा सकता है, जो ऐसा कर रहे हैं उनका फैसला जनता करेगी।

क्रिकेट हो या राजनीति..

गुरु के और भी हैं किस्से

18 जुलाई का वो दिन जब नवजोत सिंह सिद्धू को पंजाब कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जाता है और कुछ महीने भी कहना अधिक होगा आज यानी 28 सितंबर को उन्होंने अपना इस्तीफा दे दिया। नवजोत सिंह सिद्धू ने 2 महीने बाद ही पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। पंजाब में चुनाव कुछ ही महीने बाद है और इससे पहले सिद्धू के इस फैसले ने सबको चौंका दिया। इस फैसले को भले ही सीएम पद से जोड़कर देखा जा रहा हो लेकिन वो क्रिकेट हो या इससे पहले जब बीजेपी में रहे उनके फैसले चौंकाने वाले रहे।

सियासत की पिच से पहले गुरु ने क्रिकेट में भी चौंकाया

सियासत की पिच पर ही नहीं क्रिकेट के मैदान पर नवजोत सिंह सिद्धू के फैसले से लोगों को काफी आश्चर्य हुआ। बात 1996 की है जब टीम इंडिया, इंग्लैंड दौरे पर थी। इस टीम के साथ सिद्धू भी थे। इस दौरे के दौरान नवजोत सिंह सिद्धू बिना किसी को बताए बीच दौरे में ही इंडिया लौट आए। उस वक्त टीम की कमान अजहरुद्दीन के हाथ में थी। सिद्धू के इस कदम के बाद बीसीसीआई की ओर जांच कमिटी बिठाई गई। क्रिकेट के मैदान पर ही एक बात और मशहूर है कि 1987 के विश्वकप में सिद्धू ने बढ़िया बल्लेबाजी की थी। इस विश्वकप के कुछ ही महीने बाद टीम इंडिया का वेस्टइंडीज दौरा था। वह एक अच्छे ओपनर थे और तेज गेंदबाजों के सामने उनकी जरूरत थी। सिद्धू चोटिल होकर सीरीज से बाहर हो गए। इसको लेकर भी कई किस्से हैं। सिद्धू उसके बाद एक साल तक क्रिकेट नहीं खेले।

दल भी बदला और फैसला ऐसा कि लोग बोले क्यों

नवजोत सिंह सिद्धू का राजनीतिक सफर कोई बहुत पुराना नहीं है लेकिन 16-17 सालों के राजनीतिक जीवन में ही उन्होंने दल भी बदला और ऐसे फैसले लिए जिससे लोग सोचने पर मजबूर भी हुए। 2004 में उन्होंने अपना राजनीतिक सफर शुरू किया था। 2004 में अरुण जेटली ने उनको बीजेपी में शामिल कराया और इसी साल वो अमृतसर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ते हैं। सिद्धू ने उस वक्त कांग्रेस के बड़े नेता रघुनंदन लाल भाटिया को एक लाख से अधिक वोटों से हरा दिया। 2009 में भी वो वहां से जीते। 2014 में उन्हें वहां से टिकट नहीं मिला लेकिन वो उस वक्त पार्टी के स्टार प्रचारक थे। बीजेपी ने उन्हें राज्यसभा भेजा लेकिन 2017 में इस्तीफा देकर वो कांग्रेस में शामिल हो गए।

पंजाब सरकार में बहुत दिनों तक नहीं रहे साथ

नवजोत सिंह सिद्धू के बीजेपी से कांग्रेस में आने की बीच कुछ दिन अफवाहों का दौर भी चला। पंजाब में चुनाव होने वाले थे और आम आदमी पार्टी को इस चुनाव में जीत का प्रबल दावेदार बताया जा रहा था। उनके आम आदमी पार्टी जॉइन करने की खबरें आने लगी। सीएम फेस को लेकर भी बात शुरू हुई लेकिन बात बनते बनते बिगड़ गई। वो कांग्रेस में आ गए। चुनाव हुए तो वहां दोबारा से कांग्रेस की वापसी होती है। कैप्टन की सरकार में उन्हें स्थानीय निकाय मंत्री का पद मिला। लेकिन कुछ ही दिनों बाद सिद्धू ने कैप्टन

के खिलाफ मोर्चा खोल दिया और 2019 में कैबिनेट से इस्तीफा भी दे दिया। यहां से उन दोनों ही नेताओं के बीच कुछ भी ठीक नहीं चला। कैप्टन विरोधी खेमे के नेताओं को वो अपने पाले में धीरे- धीरे करने में कामयाब हुए। इस बीच उन्हें जो सबसे बड़ी कामयाबी मिली कि वो गांधी परिवार के भी नजदीक आ गए। कैप्टन के विरोध के बावजूद उन्हें पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष बना दिया जाता है और देखते ही देखते कुछ ही दिन बाद कैप्टन की कुर्सी भी चली जाती है। हालांकि इस कुर्सी पर बैठने में सिद्धू भी कामयाब नहीं हो पाते हैं और आज उन्होंने पंजाब कांग्रेस चीफ से इस्तीफा दे दिया। लोग उनके फैसले पर सवाल भी खड़े कर रहे हैं।

पाकिस्तान जाकर जब सिद्धू लगे बाजवा के गले...

अगस्त का महीना और साल 2018 जब पड़ोसी देश पाकिस्तान में इमरान खान वहां के 22 वें पीएम के तौर पर शपथ लेने वाले थे। उस दौरान एलओसी पर पाकिस्तान की ओर भारतीय चौकियों पर गोलीबारी की जा रही थी। पंजाब सरकार में मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू इमरान खान के बुलावे पर पाकिस्तान पहुंच जाते हैं। इस शपथ ग्रहण समारोह में सिद्धू पाकिस्तान आर्मी चीफ कमर जावेद बाजवा के गले लगते हैं। उन्हें पीओके पाक अधिकृत कश्मीर के प्रेसिडेंट मसूद खान के बगल में बिठाया जाता है। सिद्धू जिस प्रकार जाकर वहां बाजवा से गले मिलते हैं उसकी देश में काफी आलोचना हुई। कैप्टन अमरिंदर जब सीएम पद से इस्तीफा देकर लौटे सिद्धू पर पाकिस्तान को लेकर ही निशाना साधा।

सीएम योगी और राकेश टिकैत ने मिलकर दिखाई समझदारी !

• अशोक मधुप

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सक्रियता से लखीमपुर प्रकारण जल्दी ही टांय-टांय फिस हो गया। इस प्रकरण की मिसाइल की बारूद आग ही नहीं पकड़ सकी, जिसे कुछ विपक्षी राजनीतिक दल और खतरनाक बनाकर छोड़ने की तैयारी में थे। वह तो इस प्रकरण को गरमाने और इस पर राजनीतिक रोटियां सेंकने में कसर नहीं छोड़ना चाहते थे। योगी की विशेषता है त्वरित निर्णय लेना। वही सक्रियता उन्होंने यहां दिखाई। उधर लखीमपुर खीरी में हुई मौत पर राजनीतिक दलों ने जितनी सक्रियता दिखाई, इतनी सक्रियता इससे पहले कभी नही देखी गई। हालात यह रहे कि प्रियंका गांधी रात में ही लखीमपुर के लिए निकल पड़ीं। ओवैसी हैदराबाद से चल पड़े। अखिलेश बहुत सवेरे ही निकलने लगे। यहां तक कि पंजाब के नए बने मुख्यमंत्री चरण जीत सिंह चन्नी को भी दो दिन में पर निकलने लगे। वे भी लखीमपुर प्रकरण की आग में रोटी सेंकने में लग गए। उत्तर प्रदेश सरकार से घटनास्थल के आसपास अपने हेलीकॉप्टर को लैंड कराने की अनुमति मांगते रहे।

देश के राजनीतिक दल सोचने समझने की क्षमता शायद खो चुके हैं। चुनाव मैदान में आकर अब उनकी जीतने की कूवत नहीं रही। वे एक तरह की घटनाओं पर राजनीतिक रोटी सेंकने में लग गए। कलकत्ता से भी बयान आने लगा। ममता बनर्जी बंगाल में विजयी होकर अपने को भावी प्रधानमंत्री समझ रहीं हैं। किसी ने इस घटनाक्रम की सच्चाई को जानना भी गंवारा नहीं समझा। इस मामले में भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत ने अपनी बुद्धिमत्ता का जरूर परिचय दिया। उन्होंने इस मामले में समझौता कराने में देर नहीं लगाई। जिससे राजनैतिक दलों की फूं-फा स्वतः बंद हो गयी। मामला क्या था ? क्या नहीं ? इसके लिए न्यायिक जांच बैठा दी गई है। उसमें सच्चाई निकल कर सामने आ जाएगी। पर जिस तरह की सूचनाएं आ रही हैं, वह ठीक नहीं हैं। प्रदर्शनकारियों में शामिल एक व्यक्ति भिंडरावाला की चित्र लगी शर्ट पहने हुए है। एक कार के चालक को आंदोलनकारी डंडों से मार रहे हैं। उसे जबरदस्ती कुछ कबूल करवाना चाहते हैं। न मानने पर उसकी पीट-पीटकर हत्या कर दी जाती है। इस प्रकरण की वीडियो बनाने वाले की साइड में एक व्यक्ति काला झंडा लिए हुए है। उस झंडे पर भिंडरावाला का निशान साफ चमक रहा है। क्या भिंडरावाले के चित्र बनी शर्ट और भिंडरावाले का झंडा किसी षड्यंत्र का संकेत नहीं दे रहे ? क्या ऐसा नहीं लगता कि किसानों में कुछ अराजक तत्व नहीं घुस गए हों ? जैसा कि 26 जनवरी को लालकिले पर हुआ था। लखीमपुर खीरी तराई बेल्ट का सिख बहुल जिला का है। इसके नेपाल से सटे होने पर यह भी संभावनाएं हैं कि यहां के लोगों में खालिस्तान और भिंडरावाला के नाम पर जहर घोला जा रहा हो। यह सब जांच का विषय है और जांच में खुलकर सब सामने आ जाएगा।

इस पूरे प्रकरण में एक पत्रकार की मौत अलग कहानी कहती है। घटनास्थल पर प्रदर्शन के दौरान, कवरेज करते पत्रकारों पर हमला हुआ तो एक पत्रकार को पीट-पीटकर मार डाला गया। उसकी लाश को छिपाने की कोशिश की गई। अगले दिन जाकर लाश मिली। पत्रकार के शव को छिपाने में किसका लाभ था, क्यों छिपाया गया, यह बात समझ से परे है ? पत्रकार के शव को छिपाने के राज का भी जांच के दौरान पता लगाने की जरूरत है ? यह भी पता लगाने की जरूरत है कि क्या प्रदर्शन करने वालों में कुछ गलत लोग भी थे ? जो चाहते थे मौके कि कवरेज न हो, ना मानने वालों पर उन्होंने हमले किए और एक पत्रकार को मार डाला।

उप मुख्यमंत्री के हेलीकॉप्टर के उतरने की जगह पर कब्जा करना, प्रदर्शन करना, तो समझ में आता है। पर हेलीपैड के आसपास लगे झंडे फाड़ना आंदालनकारियों की नीयत पर सवाल खड़े करता सवाल खड़े करता है। सुप्रीम कोर्ट ने भी अपनी सुनवाई के दौरान इस प्रकरण पर नाराजगी जाहिर की है। कहा है कि आंदोलन की अनुमति मांगने वाले आंदोलन के हिंसक होने, लखीमपुर जैसी घटना होने पर अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेते हैं।

कुछ भी हो इस प्रकरण को समाप्त करने में, समस्या का निदान निकालने में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी नाथ आदित्यनाथ कि जितनी प्रशंसा की जाए कम है। उनकी सूझबूझ की तारीफ करनी पड़ेगी। भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत ने भी इस मामले में समझौता कराकर ये बता दिया कि उनकी रूचि समस्या के निदान में है। समस्या बढ़वाने में उनकी रूचि नहीं है।

एक चीज और है। देखने में आ रहा है कि भारतीय जनता पार्टी के कुछ विधायक और सांसदों की जबान पर नियंत्रण नहीं है। वे कब क्या बोल दें, यह नहीं कहा जा सकता। भारतीय जनता पार्टी को अपने कार्यकर्ता, विधायक और सांसद, मंत्री सब को निर्देश देने होंगे कि वह अपनी जुबान पर काबू रखें। उल्टे सीधे बयन ना दें। ऐसी बात ना करें, जिसका लोग राजनीतिक लाभ उठाने में लग जाएं। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री ने अगर किसानों के बारे में गलत बयान न दिया होता, तो यह घटना कभी नहीं होती। कुछ समय से यह भी देखने में आ रहा है कि कुछ भाजपा विधायक और सांसद पार्टी के नियंत्रण से बाहर हैं, इनकी गतिविधि पर भी पार्टी को ध्यान देना होगा, इन्हें भी समझाना होगा।

टाटा समूह का सपना पूरा

सालों से एयर इंडिया का स्वामित्व हासिल करने की फिराक में लगे टाटा समूह का ये सपना भाजपा सरकार में पूरा हो ही गया। एयर इंडिया का स्वामित्व हासिल करने की दौड़ में टाटा ग्रुप ने स्पाइसजेट को पीछे छोड़ दिया। सूत्रों की मानें तो एयर इंडिया के मालिकाना हक के लिए स्पाइसजेट ने भी बोली लगाई थी, पर टाटा ने सबसे उंची बोली लगाई जिसके बाद सरकारी एयरलाइन कंपनी का स्वामित्व अब बहुत जल्द टाटा समूह के पास होगा। हालांकि भारत सरकार या टाटा ग्रुप के तरफ से इसको लेकर कोई स्टेटमेंट नहीं आया है। सेक्रेटरी, निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग, दीपम ने सरकारी विमानन कंपनी एयर इंडिया विनिवेश मामले में कहा है कि भारत सरकार द्वारा वित्तीय बोलियों के अनुमोदन का संकेत देने वाली मीडिया रिपोर्ट गलत हैं।

सरकार के निर्णय के बारे में मीडिया को सूचित किया जाएगा। लेकिन विश्वसनीय सूत्रों ने इस बात पर मुहर लगा दी है। उम्मीद जताई जा रही है इसकी अधिकारिक घोषणा जल्द की जाएगी और करोड़ों का घाटा झेल रहे एयर इंडिया के बोझ से भारत सरकार को आखिरकार छुटकारा मिल ही जाएगा।

सूत्रों की मानें तो टाटा संस ने एयर इंडिया को खरीदने के लिए करीब 3000 करोड़ रुपये की बोली लगाई है। टाटा समूह ने भारत सरकार की तरफ से तय किए गए मिनिमम रिजर्व प्राइस से भी अधिक की बोली लगाई है। अनुमान लगाया जा रहा है कि टाटा ने इतनी अधिक बोली इसलिए लगाई क्योंकि एयर इंडिया एक सरकारी असेट है और एयरलाइन की क्षेत्र में टाटा समूह लंबे वक्त से सफल होने की नाकामयाब कोशिश कर रहा है। नमक से लेकर सॉफ्टवेयर की दुनिया तक अपने पैर मजबूत कर चुका टाटा ग्रुप किसी भी कीमत पर एयरलाइन्स की दुनिया में उंची उड़ान भरना चाहता है। लाख कोशिशों के बावजूद टाटा ग्रुप के स्वामित्व वाली विमानन कंपनी विस्तारा और एयर एशिया इंडिया टाटा के उम्मीदों पर खड़ा नहीं उतर सके। दोनों कंपनी निवेशों के बावजूद लगातार घाटे में जा रही थी। वर्ष 2015 में शुरू हुई विस्तारा के सभी विमानों में बिजनेस क्लास केबिन की सुविधा थी। विस्तारा का लक्ष्य लंदन और न्यूयॉर्क के लिए अक्सर उड़ान भरने वाले अमीर भारतीय व्यापारियों को व्यक्तिगत उड़ान अनुभव के जरिए लुभाना था। लेकिन, दुनियाभर में जैसे-जैसे काम डिजिटली होने लगे वैसे ही लोगों ने विदेश यात्रा से दूरी बना ली। बांकी की कसर कोरोना महामारी ने पूरी कर दी, जब लोग घर से बाहर निकलने पर भी तौबा करने लगे। ऐसे में महज 5 साल पुरानी एयरलाइंस विस्तारा को काफी नुकसान उठाना पड़ा। साथ ही टाटा समूह एयरलाइंस की दुनिया में सफल इसलिए भी नहीं हो पा रहा है क्योंकि उसके स्वामित्व वाली विस्तारा और एयर एशिया इंडिया के टॉप मैनेजमेंट या तो सिंगापुर या मलेशिया में है, जिससे भारत में व्यवसाय को पैर जमाने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। द इकोनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, टाटा समूह को अगर एयर इंडिया का स्वामित्व हासिल हो जाता है तो एयरलाइन एयर एशिया इंडिया और विस्तारा को संयुक्त इकाई के तहत लाने पर भी कंपनी विचार कर सकती है

इसी बीच ब्लूमबर्ग द्वारा जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि केंद्रिय मंत्रियों के एक पैनल ने एयरलाइन के अधिग्रहन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। तमाम मीडिया रिपोर्ट भी इस ओर इशारा कर रहे थे कि एयर इंडिया के अधिग्रहण में टाटा समूह सबसे आगे है। एयर इंडिया के पूर्व डायरेक्टर जितेंद्र भार्गव ने हाल ही में ब्लूमबर्ग टीवी को बताया था कि टाटा ग्रुप को सरकार की तरफ से हरी झंडी मिल सकती है, क्योंकि टाटा के पास ही यह क्षमता है कि वह घाटे में चल रही सरकारी एयरलाइन एयर इंडिया को कर्ज से उबार सकें। आपकों बता दें कि अगर भारत सरकार और टाटा समूह के बीच एयर इंडिया के सौदे पर मुहर लग जाती है तो विमानन कंपनी एयर इंडिया 68 साल बाद अपने पुराने मालिक के पास चली जाएगी। एक तरह से ये विमानन कंपनी की 'घर वापसी' होगी। बहुत कम लोगों को ही पता होगा कि एयर इंडिया की शुरूआत टाटा समूह ने ही की थी। उद्योगपति जेआरडी टाटा ने टाटा एयरलाइंस के नाम पर अक्तूबर 1932 में एयर इंडिया की शुरुआत की थी। दूसरे विश्व युध्द के बाद 29 जुलाई 1946 को टाटा एयरलाइंस का नाम बदलकर एयर इंडिया लिमिटेड कर दिया गया। आजादी के बाद देश को एक राष्ट्रीय एयरलाइंस की जरूरत महसूस हुई। फिर 1947 में भारत सरकार ने टाटा समूह के एयर इंडिया एयरलाइंस की 49 फिसदी भागीदारी अपने अधीन ले ली। वर्ष 1952 में जब 9 निजी कंपनियों का राष्ट्रीयकरण किया गया तो

एयर इंडिया भी उनमें से एक था।

लेकिन, भारत सरकार के अधीन दो एयरलाइंस कंपनी धीरे धीरे कर्ज में डूबते चली गई। सरकार के स्वामित्व वाली इंडियन एयरलाइन्स का 2007 में एयर इंडिया के साथ विलय कर दिया गया। बावजूद इसके कोई फायदा नहीं हुआ। आंकड़ों की मानें तो 31 मार्च 2019 तक वीमानन कंपनी एयर इंडिया पर 60,074 करोड़ रुपये का कर्ज था। मार्च 2021 को समाप्त तिमाही में कंपनी को करीब 10000 करोड़ रुपये के घाटे में रहने की आशंका है। आपको बता दें कि भारत सरकार द्वारा एयर इंडिया को बेचने की प्रक्रिया जनवरी 2020 में ही शुरू कर दी गई थी, लेकिन कोरोना महामारी के कारण इस विचार को बार बार टाला जा रहा था। फिर अप्रैल 2021 में सरकार ने निजी कंपनियों से बोली लगाने को कहा। एयर इंडिया के स्वामित्व को लिए बोली लगाने का आखिरी दिन 15 सितंबर तय था। इससे पहले साल 2020 में भी टाटा ग्रुप ने एयर इंडिया को खरीदने को लेकर रुचि पत्र दिया था। भारत सरकार ने कंपनियों को एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट के नियमों में ढील दी थी जिसके बाद करोड़ों के कर्ज में डूबे एयर इंडिया को खरीदने के लिए कुछ कंपनियां आगे आईं। नए नियमों के तहत कर्ज के प्रावधानों में नरमी बरती गई ताकि स्वामित्व वाली कंपनी को पूरा कर्ज न चुकाना पड़े। आपको बता दें कि एयर इंडिया खरीदने के बाद टाटा समूह को कर्ज के 23,286.5 करोड़ रुपये भी चुकाने होंगे। बाकी बचे कर्ज के पैसे को एयर इंडिया एसेट होल्डिंग्स लिमिटेड को ट्रांसफर कर दिया जाएगा। जिसका मतलब है कि बाकी का कर्ज का बोझ भारत सरकार खुद उठाएगी।

एक शीर्ष अधिकारी ने बताया कि सरकार द्वारा मिनिमम रिजर्व प्राइस का निर्णय कंपनिया द्वारा बोली लगाए जाने के बाद तय किया गया। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बोली लगाने वालों को पहले से आरक्षित मूल्य के बारे में पता न चले। आरबीएसए के मूल्यांकन सलाहकार और ईवाई के लेनदेन सलाहकार द्वारा मंगलवार को कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता वाली सचिवों की समिति के समक्ष एक प्रस्तुति के बाद आरक्षित मूल्य का फैसला किया गया था। उक्त अधिकारी ने ही बताया कि एयर इंडिया के लिए बोली लगाने वाली दोनों कंपनी को बुधवार को सरकार के अधिकारियों के साथ हुई बैठक में एक शेयर खरीद समझौता (एसपीए) दिया गया था। गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व वाली समिति द्वारा विजेता चुनने के बाद अधिकारिक तौर पर विनिवेश की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। इस पैनल में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी शामिल हैं।

विश्वास भी बढ़ा रहा टीका

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर उन्हें देश-विदेश से छोटे-बड़े सभी राजनेताओं के बधाई संदेश मिल रहे थे। पार्टी कार्यकर्ता देश के विभिन्न भागों में कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे थे। इसी दौरान प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन के अवसर पर एक ऐसा कार्यक्रम भी संपन्न हो रहा था, जिससे दुनिया भर में भारत का सम्मान तो बढ़ा ही साथ ही देशवासियों की सुरक्षा की दृष्टि से एक मील का पत्थर स्थापित हुआ।

भारत के चिकित्सा जगत से जुड़े लोगों ने प्रधानमंत्री के जन्मदिन के अवसर पर एक दिन में ही दो करोड़ पचास लाख से ज्यादा लोगों को कोरोना वैक्सीन की डोज लगाकर एक रिकॉर्ड कायम किया है। इसके लिए देश के सभी चिकित्साकर्मी व टीकाकरण से जुड़े लोग बधाई के पात्र हैं। किसी भी एक देश में दिन में ढाई करोड़ से अधिक लोगों को वैक्सीन लगाना किसी आश्चर्य से कम नहीं है। यह हमारे देश के चिकित्साकर्मियों के जोश, मेहनत व जज्बे के कारण ही संभव हो पाया है। दुनिया में बहुत से देशों की तो आबादी ही ढाई करोड़ से कम है। जबकि हमारे देश में एक दिन में ही ढाई करोड़ से अधिक कोरोना टीके की खुराक लगाई जा चुकी है। देश में कोरोना वैक्सीन का टीकाकरण बहुत तेजी से हो रहा है। देश में अब तक 18 वर्ष से अधिक आयु के 80 करोड़ से अधिक लोगों को कोरोना वैक्सीन की एक डोज लगाई जा चुकी है। जबकि करीबन 20 करोड़ लोगों को दोनों डोज लग चुकी है। देश में प्रतिमाह 20 से 25 करोड़ कोरोना वैक्सीन की डोज लगाई जा रही है। जिनका निर्माण हमारे देश में ही हो रहा है। आठ महीने के कम समय में देश में आधी से अधिक आबादी को कोरोना वैक्सीन की एक डोज लगने से देशवासियों का मनोबल बढ़ा है तथा खुद को कोरोना के संक्रमण से सुरक्षित समझने लगे हैं।

एक समय था जब देश में कोरोना वैक्सीन को लेकर बहुत मारा-मारी हो रही थी। वैक्सीन आवंटन को लेकर केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए जा रहे थे। कोरोना वैक्सीन केंद्रों पर उमड़ रही भारी भीड़ की फोटो समाचार पत्रों की सुर्खियां बन रही थीं। केंद्र सरकार विरोधी दलों के निशाने पर थी। लोगों में टीकाकरण में होने वाली देरी को लेकर सरकार के प्रति रोष व्याप्त हो रहा था। इसके लिये केंद्र और राज्य सरकारें एक दूसरे को दोषी ठहरा रही थीं। मगर आज स्थिति पूरी तरह बदली हुई है। देश में तेजी से टीकाकरण हो रहा है। साथ ही टीकाकरण का पूरा खर्च केंद्र सरकार वहन कर रही है। पूर्व में कुछ समय तक 18 से 44 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों के टीकाकरण की जिम्मेवारी केंद्र सरकार ने राज्यों पर डाल दी थी। जिसको लेकर केंद्र और राज्यों में टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इससे केंद्र सरकार की छवि खराब हो रही थी। हालांकि उस दौरान महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात सहित कई प्रदेश सरकारों ने अपने खर्चे से उक्त आयु वर्ग के लोगों का बड़ी संख्या में टीकाकरण भी करवाया था। फिर केंद्र व राज्य के मध्य इस बात पर सहमति बनी कि सभी को निःशुल्क टीकाकरण केंद्र द्वारा करवाया जाएगा। तब से केन्द्र टीका लगवा रहा है।

21 जून विश्व योग दिवस से केंद्र सरकार ने 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों को निःशुल्क टीका लगाने का कार्यक्रम शुरू करवाया था जो आज बहुत तेजी से चल रहा है। उसके बाद से टीकाकरण को लेकर केंद्र व राज्य सरकारों के मध्य व्याप्त आपसी खींचातानी व बयान बाजी भी नहीं सुनने को मिल रही है। केंद्र द्वारा चलाए जा रहे टीकाकरण कार्यक्रम में देश की सभी राज्य सरकारें पूरी सक्रियता से जुटी हुई हैं। उसी का परिणाम है कि भारत में एक दिन में ढाई करोड़ से अधिक टीकाकरण संभव हो पाया है। केंद्र सरकार का मानना है कि दिसम्बर 2021 तक देश के सभी व्यस्क 94 करोड़ आबादी को कोरोना वैक्सीन का टीका लगा दिया जाएगा। ताकि देश के लोग कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से सुरक्षित हो सकें।

हमारे देश में जिस तेजी से टीकाकरण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। उससे लगता है कि हम तय समय से पहले ही टीकाकरण का लक्ष्य हासिल कर लेंगे। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. शेखर पांडे का मानना है कि देश में टीकाकरण अभियान सफल होने का सबसे प्रमुख कारण है कि सरकार ने समय रहते टीकाकरण अभियान की नीति बनाई। देश के वैज्ञानिकों ने टीके की खोज की और उसको बनाया। निजी कंपनियों ने अपने संयंत्रों में उनका बहुत तेजी से उत्पादन किया। सरकार ने व्यवस्थित तरीके से उसे आम व्यक्ति तक पहुंचाने की सुविधा उपलब्ध कराई। देशवासियों ने देश में निर्मित टीके पर विश्वास कर उसको लगवाया। देशवासियों ने बिना डर के देश में निर्मित कोरोना के टीके को लगवा कर कोरोना की लहर को रोकने की दिशा में बहुत बड़ा काम किया है। उसी का परिणाम है कि आज हम कोरोना महामारी को मात देकर सुरक्षा चक्र की ओर बढ़ रहे हैं।

इतना ही नहीं महाराष्ट्र के पुणे में स्थित सिरम इंस्टीट्यूट ने जहां देश में पहला कोविशील्ड टीके का निर्माण किया। वहीं हैदराबाद की भारत बायोटेक कंपनी ने स्वदेशी टीका कोवैक्सीन को बनाने में सफलता हासिल की। टीकाकरण में भारत देशवासियों की जरूरतों को तो पूरा कर ही रहा है साथ ही अपने पड़ोसी देशों सहित दुनिया के अन्य कई देशों को भी कोरोना वैक्सीन के टीके उपलब्ध करवा रहा है। यह भारत का मानवीय पहलू है। अब तो देश में भारत बायोटेक सहित कई अन्य कम्पनियां 2 वर्ष से 18 वर्ष की आयु वर्ग के लिए भी टीके का निर्माण शुरू करने जा रही हैं। जिसके बाद देश की अधिकांश आबादी कोरोना वैक्सीन से सुरक्षित हो पाएगी।

कोरोना की दूसरी लहर से भारत में जनधन का बहुत अधिक नुकसान हुआ था। बड़ी संख्या में लोगों की मौत हुई। लोगों के काम धंधे पूरी तरह ठप हो गए। देशभर में ऑक्सीजन गैस की किल्लत महसूस की गई। उसके बाद केंद्र व राज्य सरकारें अपने चिकित्सकीय तंत्र को मजबूत बनाने की दिशा में तेजी से कार्य कर रही हैं। देश के हर छोटे-बड़े अस्पतालों में गैस उत्पादन के संयंत्र लगाए जा रहे हैं। जीवन रक्षक दवाओं का तेजी से उत्पादन हो रहा है। इन्हीं सब के चलते देशवासी तीसरी लहर आने की संभावना से उतने आशंकित नजर नहीं आ रहे हैं जितना उन्होंने दूसरी लहर के दौरान डर को महसूस किया था। देश में तेजी से हो रहे टीकाकरण के कारण देश के आम आदमी का केंद्र व राज्य सरकारों पर भरोसा बढ़ा है। देशवासी खुद को सुरक्षित महसूस करने लगे हैं। अपने आत्म बल की ताकत पर देशवासी अब किसी भी स्थिति का मुकाबला करने में खुद को सक्षम महसूस करने लगे हैं। यह सब भरोसा तेजी से हो रहे टीकाकरण के कारण ही संभव हो पाया है। इसके लिए टीकाकरण से जुड़े सभी देशवासी बधाई के पात्र हैं।

बर्लिन में भारत का मान बढ़ा रहीं साहित्यकार डॉ. योजना जैन

कहा गया कि सभी कहानियाँ इतनी मार्मिक और रोचक हैं और लेखन शैली इतनी परिपक्व है कि यक़ीन करना मुश्किल है कि ये योजना का पहला कहानी संग्रह है। ख़ासकर 'इमली का चटकारा', 'येलेना मां बनना चाहती है', 'आंदोलन', 'लेडीज बाथरूम' और 'विल यू बी माई वैलेंटायन' कहानियों की सभी ने भरपूर सराहना की।

जर्मनी निवासी प्रसिद्ध प्रवासी साहित्यकार डॉ योजना साह जैन के कहानी संग्रह "इमली का चटकारा" का हाल ही में एक भव्य कार्यक्रम में सफल विमोचन सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में देश विदेश से अनेक महान विभूतियों ने शिरकत की। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में भूतपूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की उपस्थिति रही। पद्म श्री सुरेंद्र शर्मा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न इस कार्यक्रम का संचालन हिंदुस्तान की जानी मानी कवयित्री डॉ. कीर्ति काले ने किया। विशिष्ट अतिथि के रुप में ऐम्बैसडर श्री इंद्रमणि पांडेय, प्रख्यात लेखक श्री अरमेंद्र खटुआ, देश के जाने माने व्यंगकार श्री हरीश नवल, प्रख्यात लेखक एवं भूतपूर्व अतिरिक्त महानिदेशक, दूरदर्शन श्री राजशेखर व्यास, लंदन निवासी प्रवासी लेखक श्री तेजेंद्र शर्मा, कवयित्री श्रीमती शिखा वार्ष्णेय, कवयित्री श्रीमती उर्वशी अग्रवाल और प्रभात प्रकाशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री पवन अग्रवाल उपस्थित रहे।

एकमत से सभी मनीषियों ने 'इमली का चटकारा' कहानी संग्रह की भरपूर सराहना की और इसे मुख्य धारा से अलग, एक नई लेखन शैली में गढ़ा गया लेखन बताया। कहा गया कि सभी कहानियाँ इतनी मार्मिक और रोचक हैं और लेखन शैली इतनी परिपक्व है कि यक़ीन करना मुश्किल है कि ये योजना का पहला कहानी संग्रह है। ख़ासकर 'इमली का चटकारा', 'येलेना मां बनना चाहती है', 'आंदोलन', 'लेडीज बाथरुम' और 'विल यू बी माई वैलेंटायन' कहानियों की सभी ने भरपूर सराहना की। डॉ. नवल ने कहा कि भारत से दूर रहते हुए हिंदी कहानी को एक नया प्रखर स्वर देती कहानीकार योजना जैन की कहानियाँ कथ्य, शैली, शिल्प, और भाषा की दृष्टि से उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। श्री अमरेन्द्र ने योजना के लेखन को परिपक्व बताते हुए सराहना की। शिखा ने कहा कि इन कहानियों में भाव प्रबल है और अधिकांश कहानियाँ व्यंग्य का पुट लिए हुए हैं जो उन्हें पढ़ने में रोचक और दिलचस्प बनाता है। श्री राजशेखर जी ने योजना के लेखन शैली को नया, प्रतीकात्मक बताया।

डॉ. कीर्ति काले ने कहा कि इस कहानी संग्रह के साथ महिला कहानिकरों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण नाम सम्पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अंकित हो गया है। और वो नाम है "योजना साह जैन"। मुख्य अतिथि डॉ. रमेश पोखरियाल ने योजना के लेखन की भरपूर सराहना करते हुए उन्हें बहुत आशीर्वाद दिया और निरंतर लिखते रहने, किसी समीक्षा की परवाह ना करने और अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करते रहने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा जी ने बताया कि योजना उच्च कोटि की कवयित्री भी हैं और एक सिद्ध लेखक ही कविता और कहानी एक साथ लिख सकता है जो योजना ने करके दिखाया है। उन्होंने कहा कि "मजबूरी में मत लिखो, मज़बूती से लिखो"।

प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा इस पुस्तक को प्रकाशित किया गया है। 'इमली का चटकारा' पुस्तक अमेजॉन, और फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध है।

सट कर रहो या हट कर...

खतरा दोनों जगह

पिछले कुछ दिनों में माननीय सुप्रीम कोर्ट ने जनहित में कई ताबड़तोड़ निर्णय देते हुए भारतीय जन मानस को यह विश्वास स्थापित करने का प्रयास किया है कि उनके ह्रदय में यह विश्वास- संतोष बना रहे कि अभी भारतीय न्यायपालिका नींद से बोझिल सरकार को जगाने तथा भ्रष्ट नौकरशाहों लिए न्याय का न्यायिक डंडा तैयार कर रखा है । इसी क्रम में सत्तासीन राजनेताओं के साथ तालमेल बैठाकर गलत कार्यों में लिप्त पुलिस अधिकारियों को सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एनवी रमना ने कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि इस श्रेणी में आने वाले पुलिसकर्मियों को संरक्षित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें जेल भेज देना चाहिए।

मुख्य न्यायमूर्ति ने छत्तीसगढ़ के एक पुलिस अधिकारी गुरुजिंदर सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए अवैध संपत्ति और राजद्रोह जैसी धाराओं में आरोप झेल रहे छत्तीसगढ़ के निलंबित आईपीएस गुरजिंदर पाल सिंह को सुप्रीम कोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी से राहत दी। साथ ही, जांच में सहयोग के लिए कहा।

पिछली सरकार में एंटी करप्शन ब्यूरो के मुखिया रह चुके आईपीएस को राहत देते समय चीफ जस्टिस ने कहा कि जब कोई सत्ताधारी पार्टी के लिए काम करेगा तो उसे इस तरह के आरोप झेलना ही पड़ेंगे। एक याचिका पर सुनवाई करते हुए चीफ जस्टिस ने कहा, 'आप हर मामले में सुरक्षा नहीं ले सकते। आपने पैसा वसूलना शुरू कर दिया, क्योंकि आप सरकार के करीब हैं । यही होता है अगर आप सरकार के करीब हैं और इन चीजों को करते हैं तो आपको एक दिन वापस भुगतान करना होगा। जब आप सरकार के साथ अच्छे हैं तो आप वसूली कर सकते हैं, लेकिन अब आपको ब्याज के साथ भुगतान करना होगा।

सत्तासीन राजनेताओं के करीबी पुलिस अधिकारी किसी को किसी भी आरोप में जेल में डलवाते हैं और उन्हीं के करीबियों को, जो मदद करने के लिए ऊपर बैठे हैं, किसी अपराधी को दोषमुक्त साबित करके फूलमाला से लादकर समाज के सामने हीरो के रूप में कद ऊंचा कर सकती है, क्योंकि पुलिस का सत्ता से गठजोड़ अब पुरानी बात हो गई है। इस गठजोड़ में पुलिस हमेशा फायदे में रहती है। कहा जा सकता है कि सत्ता किसी की हो, पुलिस के दोनों हाथ में लड्डू होता है। जैसे-जैसे राजनीति में गिरावट आई, वैसे-वैसे यह गठजोड़ और मजबूत होता गया। मुंबई में अर्नब गोस्वामी के खिलाफ पुलिस कार्रवाई हो या यूपी में अनेक जिलों में हाल में पत्रकारों के खिलाफ दर्ज मामले हों या अपराधियों के खिलाफ चल रही कार्रवाई, सब सत्ता के चश्मे के नंबर बदलने की बानगी भर है।

पुलिस सत्ता के इशारे को बखूबी समझते हुए उसका दस्तावेजीकरण भी कर देती है। यह अलग बात है कि कई बार अदालत पहुंचने के साथ ही इनका भांडा फूट जाता है। अब सिस्टम में इतना घुन लग चुका है कि इलाज मुश्किल है। एक थानेदार कहते हैं- आपके पास दो हजार के दो जाली नोट मिले। अगर जेल भेजना है तब पुलिस लिखेगी- पत्रकारिता की आड़ में यह आदमी जाली नोटों का कारोबार करता है। यह काम वर्षों से चल रहा है। इसका गिरोह नेपाल तक पसरा हुआ है। छोड़ना हुआ तो लिखा जाएगा- दो हजार के ये दो नोट गलती से इनकी जेब में आ गए थे। यह समाज के सम्मानित व्यक्ति हैं और इनकी आम शोहरत भी अच्छी है। ऐसा निश्छल व्यक्ति जाली नोटों के सौदागर हो ही नहीं सकता। जुर्म एक, लेकिन पुलिस का विवेक यहां बहुत महत्वपूर्ण भूमिका में है। इसी भूमिका की पुलिस खाती आ रही है।

मालेगाँव धमाका (2008) की स्पेशल प्रॉसिक्युटर रोहिणी सालियन ने वर्ष 2015 में आरोप लगाया था कि इस हमले के अभियुक्तों को लेकर नरमी बरतने के लिए उन पर दबाव बनाया गया। रोहिणी ने एनआईए के एसपी सुहास वर्के पर यह आरोप लगाया था। रोहिणी ने कहा था कि ऐसा केस को कमज़ोर बनाने के लिए किया गया, ताकि सभी अभियुक्त बरी हो जाएं। इस ब्लास्ट में भोपाल से भाजपा सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर

भी अभियुक्त हैं। रोहिणी ने एक समाचार पत्र को दिए इंटरव्यू में कहा था, 'एनडीए सरकार आने के बाद मेरे पास एनआईए के अधिकारियों का फ़ोन आया। जिन मामलों की जांच चल रही थी, उनमें हिंदू अतिवादियों पर आरोप थे। मुझसे कहा गया वे बात करना चाहते हैं। एनआईए के उस अधिकारी ने कहा कि ऊपर से इस मामले में नरमी बरतने के लिए कहा गया है।

ज्ञात हो कि पिछले 8 जुलाई को एनआइए की विशेष अदालत ने ईडी को महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख के खिलाफ दर्ज मनी लांड्रिंग मामले में मुंबई पुलिस के बर्खास्त अधिकारी सचिन वाजे से पूछताछ की इजाजत दी थी। सचिन वाजे को एंटीलिया केस और ठाणे के कारोबारी मनसुख हिरेन की हत्या के मामले में मार्च में गिरफ्तार किया गया था। उल्लेखनीय है कि सचिन वाजे की गिरफ्तारी व मुंबई पुलिस आयुक्त पद से हटाए जाने के बाद परमबीर सिंह ने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को पत्र लिख तत्कालीन गृहमंत्री अनिल देशमुख पर 100 करोड़ वसूली करवाने का आरोप लगाया था।

गृहमंत्री देशमुख ने सचिन को बार व रेस्तरां से 100 करोड़ रुपये प्रतिमाह वसूली का लक्ष्य दिया था। हालांकि, देशमुख ने आरोपों से इन्कार किया था। उपरोक्त सभी कार्यवाही पुलिस पर राजनीतिज्ञों के दबाव का ही परिणाम है, भले ही इसे आज कोई स्वीकार करे या न करे। तभी तो सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा, 'पुलिस अफसर सत्ता में मौजूद राजनीतिक पार्टी का फेवर लेते हैं और उनके विरोधियों के खिलाफ कार्रवाई करते हैं। बाद में जब विरोधी सत्ता में आते हैं तो पुलिस अफसरों पर कार्रवाई होती है। यह परेशान करने वाला ट्रेंड है। इसे रोकने की जरूरत है।

सीजेआई रमण ने आगे कहा, 'जब सरकार बदलती है तो पुलिस अफसरों को ऐसे आरोपों का सामना करना ही पड़ता है। यह देश में नया चलन है। उन्होंने कहा, 'इस सबके लिए खुद पुलिस अफसरों को ही जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, उनको कानून के शासन पर टिके रहना चाहिए। अब प्रश्न यह है कि सुप्रीम कोर्ट की इस कड़ी टिप्पणी के बाद भी सत्तासीन राजनीतिज्ञों से अपनी दूरी बनाकर संविधान प्रदत्त अधिकारों का वह उपयोग पुलिस के आला अधिकारी ऐसा करेंगे?

पूर्व आईपीएस अफसर अमिताभ ठाकुर को पिछले महीने 27 अगस्त को लखनऊ में गिरफ्तार किया गया था। ठाकुर पर मुख्तार अंसारी के कहने पर रेप के आरोपी सांसद अतुल राय को बचाने के लिए आपराधिक षड्यंत्र रचने का आरोप है। जिस लड़की ने अतुल राय पर रेप का आरोप लगाया था, उसकी मौत हो चुकी है। पीड़िता ने 16 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट के बाहर अपने दोस्त के साथ खुद को आग लगाकर आत्महत्या की कोशिश की थी। इलाज के दौरान दोनों की मौत हो गई । अपनी गिरफ्तारी को अवैध ठहराते हुए पूर्व आईपीएस अमिताभ ठाकुर ने भी अब एक मुकदमा दर्ज कराया है।

अमिताभ ठाकुर का यह मुकदमा यूपी के नौ अफसरों के खिलाफ है, जिसमें एडिशनल चीफ सेक्रेटरी अवनीश अवस्थी भी शामिल हैं। अमिताभ ठाकुर ने इन अफसरों के खिलाफ सीजेएम कोर्ट में मुकदमा दायर किया है, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया है कि बदला लेने की नीयत से उन्हें नौकरी से निकाला गया, साथ ही फर्जी मुकदमे में जेल भेज दिया गया। अब सच क्या है यह तो जांच के बाद ही पता चलेगा, लेकिन अंदर की जानकारी यह है कि अमिताभ ठाकुर को किसी भी सत्तासीन राजनेताओं का आशीर्वाद प्राप्त नहीं था। लिहाजा, वह सत्ता की गलियारों में पीछे होते गए और अब उनका हाल यह हो गया कि पुलिस उन्हें घसीटकर घर से ले गई। ऐसे में सवाल यह है कि यदि सत्तासीन को अधिकारी अपना आका नहीं मानेंगे तो क्या वह अपना भी वही हाल कराएंगे जो हाल अमिताभ ठाकुर का लखनऊ में हुआ? सर्वोच्च न्यायालय को इस पर भी सख्त आदेश देने की जरूरत है।

जीका वायरस

मच्छरों के साथ उड़ता नया खतरा

• कुमार गौरव अजीतेन्दु

मच्छर के काटने से डेंगू, मलेरिया, पीला बुखार, एन्सेफेलाइटिस जैसे कई तरह के रोगों के बारे में हम सुनते आए हैं। इस वक्त जिस मच्छर द्वारा जनित बीमारी का खतरा सबसे बड़ा दिखाई दे रहा है, वो है जीका। साल 2016 में वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन ने जीका को पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी घोषित किया था। गर्भवती महिलाओं के साथ ही होने वाले बच्चे पर भी जीका का खतरा अधिक बना रहता है। हाल ही में ब्राजील के मानौस स्थित फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ अमेजोनास के बायोलॉजिस्ट मार्सेलो गोर्डो ने कहा था कि अगली महामारियों में जीका वायरस भी हो सकता है। भारत में भी इसके मरीज लगातार मिलने लगे हैं।

क्या है जीका वायरस

कबीरधाम, छत्तीसगढ़ में जिला नोडल चिकित्सा अधिकारी डॉ शशांक शर्मा बताते हैं कि जीका, मच्छर-जनित वायरल संक्रमण है। यह संक्रमित एडीज मच्छर के काटने से मनुष्यों में फैलता है। एडीज मच्छर से ही डेंगू, चिकनगुनिया और पीला बुखार का ट्रांसमिशन होता है। जीका वायरस गर्भवती महिला से उसके भ्रूण में भी फैल सकता है और इसके कारण बच्चे के अविकसित दिमाग (माइक्रोसेफली) के साथ पैदा होने की आशंका बढ़ जाती है। बीमारी अधिकतर उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाती है। एडीज मच्छर आमतौर से दिन के समय, खासकर सुबह और शाम में काटने के लिए जाना जाता है।

लक्षण, इलाज व रोकथाम के उपाय

जीका के लक्षण बुखार, स्किन पर चकत्ते और जोड़ में दर्द समेत डेंगू के समान होते हैं। हालांकि जीका वायरस से संक्रमित अधिकतर लोगों में लक्षण नहीं होते, लेकिन उनमें से कुछ में बुखार, मांसपेशी और जोड़ का दर्द, सिर दर्द, बेचैनी, फुन्सी और कन्जेक्टिवाइटिस की समस्या दिख सकती है। ये लक्षण आमतौर से 2-7 दिनों तक रहते हैं। वर्तमान में जीका वायरस संक्रमण का इलाज या रोकथाम करने के लिए कोई वैक्सीन नहीं है।

जीका वायरस का उपचार

खतरनाक बात यह भी है कि अभी तक जीका वायरस का कोई आधिकारिक इलाज नहीं मिल पाया है। डॉ. शशांक शर्मा के मुताबिक आमतौर पर जीका वायरस के लक्षण हल्के होते हैं और इनके जानलेवा बनने का खतरा काफी कम होता है। इसलिए पैनिक होने की नहीं, बल्कि सचेत रहने की ज़रूरत है। लक्षणों व संकेतों और ट्रेवल हिस्ट्री के आधार पर ही जीका वायरस के मामले की पुष्टि की जाती है। जहां जीका वायरस फैल रहा है अगर उस क्षेत्र से लौटने के बाद आप खुद में लक्षण देखते हैं, तो चिकित्सा सहायता लेने में देर न करें। संक्रमण के लक्षणों का इलाज किया जा सकता है - उदाहरण के लिए, आपका डॉक्टर बुखार और सिरदर्द के लिए दवाई लेने की सलाह दे सकता है। आराम और ज्यादा से ज्यादा लिक्विड लेना भी इलाज में शामिल है। संक्रमित व्यक्ति और उसके आसपास के स्थान पर जाने से बचें। जायें तो खुद को मच्छर काटने से बचाने के उपाय कर लें। अपने घर और आस-पड़ोस में भी मच्छरों के पनपने वाले कारकों पर नज़र रखें।

फिर इतिहास गढ़ेंगी बेटियां

अगर लक्ष्मीबाई स्वराज स्थापना के प्रयत्न में सफल हो जातीं तो भारत की नारी उस गिरी हालत में कभी न होती, जिसमें उसका अंश आज भी है। लेखक विष्णुराव गोडसे जब झांसी आए, तब वहां की महिलाओं की स्वाधीनता देखकर विस्मित हो गए। हालांकि, उन्हें गुस्सा भी आया। इस गुस्से की वजह भी अजीब थी, क्योंकि वहां की स्त्रियां शान और हेकड़ी के साथ संध्याकाल मंदिरों में जाती थीं। यही बात विष्णुराव को बहुत खटकी, क्योंकि उन्होंने कहीं ऐसा नहीं देखा था। लेकिन, क्या अन्यत्र कोई बटालियन थी? कोई रेजिमेंट था? उनमें से कोई कर्नल या कप्तान थीं? (वृंदावनलाल वर्मा की पुस्तक 'झांसी की रानी' से साभार)।

दरअसल, भारतीय नारी के महानतम आदर्श रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती अपने भारत की गौरव थीं, जिन्होंने अंग्रजों के दांत खट्टे कर दिए थे। वह जिसके वक्षस्थल वज्र का और हाथ फौलाद के थे, वह जिसके शब्दकोष में निराशा का शब्द नहीं था, वह जो भारतीय नारी की महानतम और उच्च आदर्श स्थापित करने में पूर्ण सक्षम थीं, वह भारतीय हिंदुओं की दुर्गा थीं, जो अंग्रजों की अपार सेनाओं से भी डरी नहीं। अंग्रेजों के आक्रमण-दर-आक्रमण झेलकर जिन्होंने बता दिया कि भारतीय नारी पर कब्जा करना उतना आसान नहीं हैं। उसके बाद अपने को देश के लिए न्योछावर भी कर दिया। यही है भारतीय नारी की पारंपरिक गाथा। इसीलिए तो शक्ति स्वरूपा देवी दुर्गा, काली को हम भारतीय आधार मानकर पूजते हैं।

हां, यह ठीक है कि बीच के कुछ वर्षों में इन्हीं गौरवमयी नारियों पर इसी भारत में जुल्म ढाए गए, उन्हें अपमानित और जलील किया गया। जिंदा जला दी गईं, मानवीय अत्याचारों से आजिज आ उन्हें आत्मदाह करना पड़ा। न्याय का पक्ष उनके लिए इतना कमजोर रहा कि कोई कहीं न्यायपूर्ण मदद नहीं मिलने पर सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष ही आत्मदाह तक करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

पाठकों के मन में बार-बार यह बात आ रही होगी कि यहां रानी लक्ष्मीबाई का यह पुराना इतिहास किसलिए? वह इसलिए क्योंकि, अब पुरुषों की तरह महिलाओं के लिए भीं सेना में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) के जरिए भर्ती का रास्ता साफ हो गया है। केंद्र सरकार ने महिलाओं को लिंग आधारित बराबरी देने में ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए लड़कियों को एनडीए की परीक्षा में शामिल होने और एनडीए के माध्यम से सेना में भर्ती करने का फैसला लिया है। सरकार ने इस फैसले की जानकारी पिछले सप्ताह सुप्रीम कोर्ट को दी। कोर्ट ने फैसले पर खुशी जताते हुए 20 सितंबर तक हलफनामा दाखिल कर पूरी प्रक्रिया बताने को कहा है। कोर्ट मामले पर 22 सितंबर को सुनवाई करेगा। सशत्र सेना में महिलाओं को समानता दिलाने का ऐतिहासिक फैसला सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 2020 में सुनाया था जिसमें कोर्ट ने सेना में महिलाओं को भी पुरुष के समान स्थायी कमीशन देने का आदेश दिया था।

इस बार भी सुप्रीम कोर्ट ने ही सरकार को महिलाओं को एनडीए परीक्षा में शामिल करने का अंतरिम आदेश दिया था और सरकार को सेना में लिंग आधारित भेदभाव दूर करने को कहा था, जिसके बाद सरकार ने यह ऐतिहासिक फैसला लिया है। सुप्रीम कोर्ट ने लड़कियों को एनडीए और नौसेना अकादमी परीक्षा में शामिल होने की इजाजत मांगने वाली वकील कुश कालरा की याचिका पर सुनवाई के दौरान पिछली तारीख पर अंतरिम आदेश में सरकार को इस बार होने वाली एनडीए परीक्षा में योग्य लड़कियों को शामिल करने का निर्देश दिया था। जानकारी के अनुसार, सन् 1962 में स्थापित कजक्कुटम स्थित केरल के एकमात्र सैनिक स्कूल में पहली बार लड़कियों के पहले बैच में अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण 2020-21 के अकादमिक सत्र में प्रवेश लिया। प्रधान प्राध्यापक कर्नल धीरेंद्र कुमार ने कैडेट को संबोधित किया और उन्हें शुभकामना दी। धन्य हैं ऐसे माता-पिता जिनकी कोख से इन बहादुर बेटियों ने जन्म लिया।

दरअसल, इस बीच लड़कियों के मामले में हमारा तंत्र कमजोर होता रहा और जिसके कारण हमारे देश की नारी अबला कहलाने लगी। मूल कारण नारियों के प्रति उपेक्षा का भाव था। हमारे संविधान में नारियों को पुरुष के बराबर का अधिकार दिया गया, लेकिन सरकार द्वारा उस पर अमल नहीं किया गया। इसलिए समस्या यह रही कि लड़कियों में शिक्षा का घोर अभाव होता रहा और उसकी भागीदारी राष्ट्रीय हित में कम होती चली

गई। भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एकसमान नहीं रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहे हैं। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं तथा उनके अधिकारों में तदनरूप बदलाव भी होते रहे हैं।

ऋग्वेद का कथन है कि 'स्त्रियों के साथ कोई मित्रता नहीं है, उन्हें कम-से-कम सुविधाओं, अधिकारों और उन्नति के अवसरों में रखा जाता रहा है। इसी कारण महिलाओं की परिस्थिति अत्यन्त निचले स्तर पर है। भारतीय समाज की परंपरागत व्यवस्था में महिलाएं आजीवन पिता, पति और पुत्र के संरक्षण में जीवन-यापन करती रही हैं।' भारतीय समाज में महिला आज भी कमजोर वर्गों में शामिल है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। शिक्षण संस्थानों तक लड़कियों की पहुंच लगातार बढ़ रही है। एक दशक पहले हुए सर्वेक्षण में शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी 55.1 प्रतिशत थी, जो अब बढ़कर 68.4 तक पहुंच गई है। सर्वेक्षण कहता है कि भारत में महिलाओं का दर्जा दौलत और उनकी सामाजिक स्थिति पर निर्भर करता है। भारत के 19 देशों की सूची में सबसे अंतिम पायदान पर रहने के लिए कम उम्र में विवाह, दहेज, घरेलू हिंसा और कन्या भ्रूण हत्या जैसे कारणों को गिनाया गया है। अब सरकार और स्वयं सुप्रीम कोर्ट ने इस पर ध्यान देना शुरू किया है, तो इसलिए इसमें अब शक की कोई गुंजाइश नहीं कि सबको पीछे छोड़ते हुए जिस तरह विमान चलाकर आसमान छूने हमारी बेटियां पहुंच गई हैं, उसी प्रकार अब राष्ट्रीय सुरक्षा में अपना जौहर दिखाएंगी और देश का गौरव बढ़ाएंगी।

अगर हम भारतीय सभ्यता की बात करें तो इसे विश्व की प्राचीनतम और सुव्यवस्थित सभ्यता माना गया, जो अपनी उच्च कोटि की पारिवारिक व सामाजिक व्यवस्था के लिए जाना जाता है। परिवार उसकी वह सबसे छोटी इकाई है जहां एक समृद्ध राष्ट्र के सभी उपादान और कारक मौजूद रहते हैं। इस परिवार व्यवस्था के संचालन में नारी और पुरुष की समान भागीदारी और समान महत्व है। पुरुष परिवार को पोषण देता है, अपनी रोजगार से स्वजन का पेट पालता है, परंतु परिवार संचालन की वास्तविक जिम्मेदारी नारी पर ही है जिसे सेवा, त्याग और करुणा की देवी कहा जाता है। लेकिन, इस प्रकार की शास्त्रीय परिभाषाएं जो भी हों, वास्तविकता कुछ और ही प्रतीत होती है। पुरुष आज भी वही है, जो पहले था। प्रगति पथ पर निरंतर चलता हुआ। संघर्ष, शौर्य, पराक्रम, अहंकार आदि गुणों से भरपूर और अपनी धुन में मस्त। मगर आज के इस आधुनिक समाज में नारी की स्थिति क्या है, यह जानने की कोशिश करेंगे तो निराशा ही हाथ लगेगी और मन दुखी और व्याकुल हो जाएगा ।

डिजिटल लाइफ कहीं निजता न खत्म कर दे ?

• जितेंद्र पारख एवं अभिनव नारायण झा

कोरोना वायरस के कई प्रभावों में से एक प्रभाव यह भी है कि इस महामारी ने अधिक से अधिक लोगों को डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग लेने के लिए मजबूर किया है। डिजिटल युग में जहां तमाम सरकारी और निजी कार्यक्रम व्हाट्सएप, गूगल, फेसबुक, वेबेक्स आदि डिजिटल एवं सोशल प्लेटफॉर्म में हो रहे है ऐसे में डाटा सुरक्षा कैसे होगा यह सवाल जायज है?

एक्सपर्ट्स का मानना है कि भारत 21वीं सदी के डिजिटल परिदृश्य को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहता है तो उसे डेटा तथा उसकी सुरक्षा के संबंध में कार्य करना चाहिए। लोकल सर्कल्स सर्वे में पता चला है कि करीब 33 प्रतिशत भारतीय कंप्यूटर पासवर्ड्स, बैंक अकाउंट्स, क्रेडिट और डेबिट कार्ड नंबर और पिन जैसा डाटा असुरक्षित तरीकों से स्टोर करते हैं। सर्वे रिपोर्ट में कहा गया है कि यूजर्स इस डाटा के अलावा आधार और पैनकार्ड जैसे डिटेल्स भी अपने कॉन्टैक्ट नंबर्स की लिस्ट में या फिर ईमेल पर स्टोर करते हैं।

भारत में निजी डाटा चोरी एवं दुरूपयोग का मामला इतना बढ़ चुका है किसी बीआई ने भारत में 5.62 लाख फेसबुक यूजर्स का डाटा चोरी होने के मामले में कैम्ब्रिज एनालिटिका लिमिटेड और ग्लोबल साइंस प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ एफआईआर दर्ज किया है। इतना ही नहीं निजी कंपनी द्वारा लाखों आधार कार्ड की जानकारी लीक होना, व्हाट्सप्प हैक कर डाटा चुराना आदि बेहद सामान्य बात हो गई है।

डिजिलॉकर का उपयोग

भारत सरकार द्वारा डिजिलॉकर एप्लीकेशन की शुरुआत की गई है, इस पहल के तहत आवेदन के आधार से जुड़ा हुआ 10MB का समर्पित व्यक्तिगत भंडारण स्पेस मिलता है जहां सुरक्षित रूप से ई-दस्तावेजों एवं यूआरआई लिंक को रखा जा सकता है एवं एक्सेस किया जा सके। इतना ही नहीं इस एप्लीकेशन में बहुत सारे सरकारी दस्तावेजों को सिर्फ डिटेल्स के आधार पर फेच किया जा सकता है, जैसे ड्राइविंग लाइसेंस, आधार कार्ड, पैनकार्ड और भी बहुत कुछ। इससे इश्यूअर और वेरिफायर के बीच ऑथेंटिकेशन के आधार पर सुरक्षित तरीके से दस्तावेजों का आदान-प्रदान होता है। समय रहते, हमें डाटा प्राइवेसी की कीमत को समझना होगा। यह बेहद सही कहा गया है "डाटा इस द न्यू आयल"। देश में एक ऐसा डिजिटल तंत्र तैयार करने की आवश्यकता है जिस मे डाटा प्राइवेसी और निजता के अधिकार की प्रधानता हो।

क्या कहता है कानून?

भारत में आईटी एक्ट की धारा 69 (2) में साधारण डेटा लीक होने पर 3 साल, संवेदनशील डेटा में 10 साल सजा का प्रावधान है किंतु इस कानून के माध्यम से अब तक कोई विशेष राहत नहीं मिली है। मार्च 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने डेटा चोरी के मामले में कानून नहीं होने को लेकर भी सवाल खड़ा किया है तथा शीर्ष अदालत ने कहा है कि जब डेटा चोरी पर कानून नहीं है तो आधार डेटा कैसे सुरक्षित रहेगा? इसी तारतम्य में केएस पुट्टास्वामी बनाम भारत संघ मामले में निजता के अधिकार को मौलिक अधिकार माना तथा इसी के व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक, 2019 अस्तित्व में आया लेकिन यह विधेयक अब तक कानून नहीं नहीं बना है। इस विधेयक में डाटा चोरी करने वाले को 3 साल की सजा और करोड़ों के जुर्माने का प्रावधान है किंतु जब तक कानून अस्तित्व में नहीं आता तब तक जागरूकता ही समाधान है।

ऐसे रहे सुरक्षित?

दोहरा सत्यापन लगभग सभी सेवाएं (ईमेल, सोशल मीडिया इत्यादि) अब दोहरे सत्यापन का विकल्प देती हैं। सुरक्षा सेटिंग्स के माध्यम से आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। जब आप दोहरी सत्यापन व्यवस्था को इनेबल या सक्षम कर देते हैं, तो हर बार जब आप किसी डिवाइस पर अपने खाते में लॉग-इन करते हैं, तो आपको पासवर्ड के साथ ओटीपी देना होता है। ओटीपी सुरक्षा कोड होता है जो अपने आप जेनरेट होता है। ज्यादातर यूजर्स इस विकल्प को सक्षम नहीं करते हैं। कारण है कि इससे लॉग-इन प्रक्रिया में असुविधा होती है। हालांकि, नहीं भूलना चाहिए कि इससे आपके खाते की सुरक्षा बढ़ जाती है।

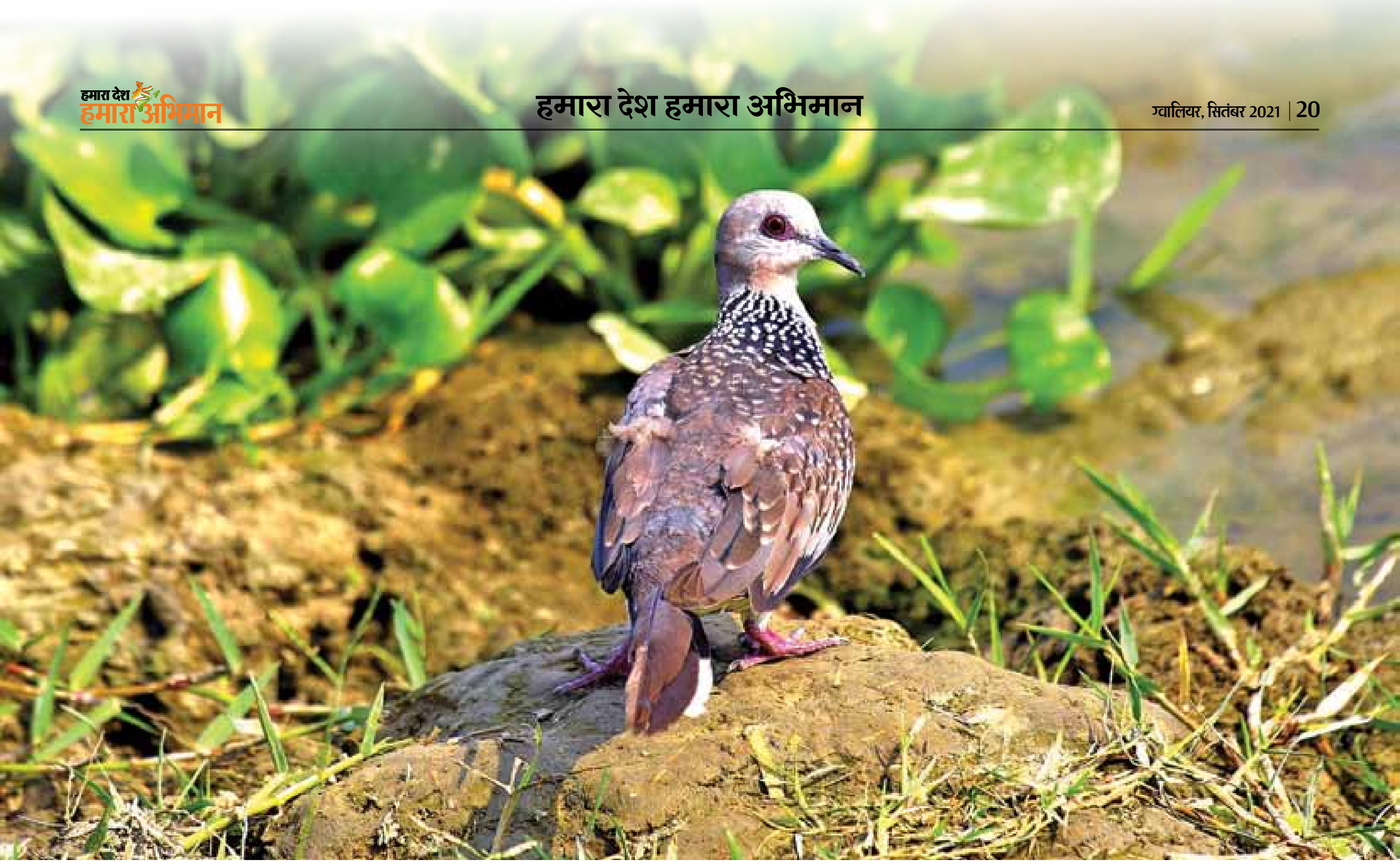

जीव-जंतुओं के जीने का अधिकार

• पंकज चतुर्वेदी

जुलाई, 2018 में उत्तराखंड हाइकोर्ट ने कहा था कि जानवरों को भी इंसान की तरह जीने का हक है। हर राज्य ने अपना राजकीय पशु या पक्षी घोषित किया है। असल में ऐसे आदेशों से जानवर बचते नहीं हैं, जब तक समाज में यह संदेश नहीं जाता कि प्रकृति ने धरती पर इंसान, वनस्पति और जीव-जंतुओं को जीने का समान अधिकार दिया है। जीव-जंतु या वनस्पति अपने साथ हुए अन्याय का न तो प्रतिरोध कर सकते हैं और न ही दर्द कह पाते हैं, परंतु इस भेदभाव का बदला खुद प्रकृति ने लेना शुरू कर दिया। आज पर्यावरण संकट का मूल कारण इंसान द्वारा उपजाया गया असमान संतुलन ही है। अब धरती पर अस्तित्व का संकट है। जिस दिन खाद्य शृंखला टूटी, धरती से जीवन की डोर भी टूट जायेगी।

प्रकृति में हर एक जीव-जंतु का एक चक्र है। जंगल में यदि हिरण जरूरी है, तो शेर भी। शेर का भोजन हिरण है। प्राकृतिक संतुलन का यही चक्र है। हिरणों की संख्या बढ़ जाए, तो अंधाधुंध चराई से हरियाली का संकट खड़ा हो जायेगा, इस संतुलन के लिए शेर भी जरूरी है। वहीं ऊंचे पेड़ों की नियमित कटाई-छंटाई के लिए हाथी जैसा ऊंचा प्राणी भी और शेर-तेंदुए द्वारा छोड़े गये शिकार के अवशेष को सड़ने से पहले भक्षण करने के लिए लोमड़ी-भेड़िया भी। इसी तरह हर जानवर, कीट, पक्षी धरती पर इंसान के अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं।

ऐसे ही गिद्ध पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अनिवार्य पक्षी है। नब्बे के दशक में भारतीय उपमहाद्वीप में करोड़ों गिद्ध थे, लेकिन अब कुछ लाख ही बचे हैं। संख्या घटने लगी, तो सरकार भी सतर्क हो गयी। चंडीगढ़ के पास पिंजौर, बुंदेलखंड में ओरछा सहित कई स्थानों पर गिद्ध संरक्षण की परियोजनाएं चल रही हैं। मरे पशुओं को खाकर परिवेश को स्वच्छ करने के कार्य में गिद्ध का कोई विकल्प नहीं है। दूध के लिए इंसान ने पालतू मवेशियों को रासायनिक इंजेक्शन देने शु,रू कर दिये। वहीं मवेशियों के चारे की खेती में कीटनाशकों व रासायनिक दवाओं का इस्तेमाल बढ़ गया। ऐसे मरे हुए जानवरों को खाने के कारण गिद्धों की मौत होने लगी।

आधुनिकता ने गिद्ध ही नहीं, गौरैया, बाज, कठफोड़वा व कई अन्य पक्षियों के अस्तित्व पर संकट खड़ा कर दिया है। ये पक्षी कीड़ों व कीटों को अपना भोजन बनाते हैं, जो खेती के लिए नुकसानदेह होते हैं। कौवा, मोर, टिटहिरी, उकाब व बगुला सहित कई पक्षी जहां पर्यावरण को शुद्ध रखने में अहम भूमिका निभाते हैं, वहीं मानव जीवन के उपयोग में भी इनकी अहम भूमिका है।

प्रकृति के बिगड़ते संतुलन के पीछे अंधाधुंध कीटनाशक दवाइयों की बड़ी भूमिका है। कीड़े-मकोड़े व मक्खियों की बढ़ रही संख्या के कारण इन मांसाहारी पक्षियों की मानव जीवन में बहुत कमी खल रही है। यदि इसी प्रकार पक्षियों की संख्या घटती गयी, तो मनुष्य को भारी परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। यह सांप सहित कई जनघातक कीट-पतंगों की संख्या को नियंत्रित करने में अनिवार्य तत्व है। खेतों में रासायनिक दवाओं की वजह से इनकी मृत्यु हो जाती है। सांप को किसानों का मित्र कहा जाता है। आबोहवा बदलने पर सबसे पहले वही प्रभावित होते हैं। मेंढकों की कमी के भयंकर परिणाम सामने आये हैं। इसकी खुराक हैं वे कीड़े-मकोड़े, मच्छर तथा पतंगे, जो हमारी फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। मेंढक समाप्त होने से सांपों का भोजन कम हो गया, तो सांप भी कम हो गये। सांपों के कम होने से चूहों की संख्या बढ़ गयी। चूहे अनाज की फसलों को चट करने लगे।

हमारे पूर्वज जानते थे कि इंसान की बस्ती में कौवे का रहना स्वास्थ्य व अन्य कारणों से कितना महत्वपूण है। कौवे इंसान को अनेक बीमारियों एवं प्रदूषण से बचाते हैं। टीबी ग्रस्त रोगी के खखार में जीवाणु होते हैं, जिसे कौवे खा जाते हैं। इससे जीवाणुओं का फैलाव नहीं होता। शहरी भोजन में रसायन तथा पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के चलते कौवे भी समाज से विमुख होते जा रहे हैं। इंसानी जिंदगी में कौओं के महत्व को हमारे पुरखों ने बहुत पहले ही समझ लिया था। इनकी कम होती संख्या चिंता का सबब बन रही है। जानकार कहते हैं कि इसके जिम्मेदार कोई और नहीं, बल्कि हम खुद ही हैं, जो पर्यावरण को प्रदूषित करके कौओं को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

भारत में संसार का केवल 2।4 प्रतिशत भूभाग है, जिसके सात से आठ प्रतिशत भूभाग पर विभिन्न प्रजातियां पायी जाती हैं। प्रजातियों की संवृद्धि के मामले में भारत स्तनधारियों में सातवें, पक्षियों में नौवें और सरीसृप में पांचवें स्थान पर है। कितना सधा हुआ खेल है प्रकृति का! मानव जीवन के लिए जल जरूरी है, तो जल को संरक्षित करने के लिए नदी-तालाब। नदी-तालाब में जल को स्वच्छ रखने के लिए मछली, कछुए और मेंढक अनिवार्य हैं। मछली उदर पूर्ति के लिए, तो मेंढक ज्यादा उत्पात न करें, इसके लिए सांप अनिवार्य हैं। सांप जब संकट बने तो उनके लिए मोर या नेवला।

कायनात ने एक शानदार सह-अस्तित्व और संतुलन का चक्र बनाया। हमारे पूर्वज यूं ही सांप या बैल या सिंह या मयूर की पूजा नहीं करते थे, जंगल के विकास के लिए छोटे-छोटे अदृश्य कीट भी उतने ही अनिवार्य हैं जितने कि इंसान। विडंबना है कि अधिक फसल के लालच में हम केंचुओं और कई अन्य कृषि-मित्र कीटों को मार रहे हैं।

स्वदेशी स्टार्टअप को चाहिए संरक्षण

• डॉ अश्विनी महाजन

भारत को अपने स्टार्टअप पर अत्यधिक मूल्य बढ़ाने और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में योगदान पर गर्व है। हमारे यूनिकॉर्न (एक अरब डॉलर से अधिक के मूल्यांकन वाले स्टार्टअप) हमारे प्रतिस्पर्धियों की ईर्ष्या का कारण हो सकते हैं, लेकिन यह जानकर खुशी कम हो जाती है कि उनमें से कई अब भारतीय नहीं रहे। दो भारतीय लड़कों ने फ्लिपकार्ट बनाया, जिसका बाजार मूल्यांकन अंततः 20 अरब डॉलर के बराबर हो गया। पर तथ्य यह है कि फ्लिपकार्ट के प्रमोटर भारत से पहले ही दूर हो गये थे तथा इसे और अन्य संबद्ध कंपनियों को सिंगापुर में पंजीकृत कर लिया था। बाद में इन्हें वॉलमार्ट को बेच दिया गया था, जब 77 प्रतिशत शेयर वॉलमार्ट को हस्तांतरित कर दिये गये थे। साथ ही भारतीय बाजार की हिस्सेदारी भी एक विदेशी कंपनी को हस्तांतरित हो गयी।

एक भारतीय कंपनी की फ्लिपिंग का मतलब एक लेन-देन है, जहां एक भारतीय कंपनी एक विदेशी क्षेत्राधिकार में एक अन्य कंपनी को पंजीकृत करती है, जिसे बाद में भारत में सहायक कंपनी की होल्डिंग कंपनी बना दिया जाता है। भारतीय कंपनियों के लिए सबसे अनुकूल सिंगापुर, अमेरिका और ब्रिटेन हैं। इस लेन-देन का एक तरीका शेयर स्वैप है, जिसके तहत भारतीय प्रमोटरों द्वारा एक अंतरराष्ट्रीय होल्डिंग कंपनी को शामिल करने के बाद घरेलू कंपनी के शेयरधारकों के शेयरों की विदेशी होल्डिंग कंपनी के शेयरों के साथ अदला-बदली की जाती है।

इसके स्थान पर एक फ्लिप संरचना भी निष्पादित की जा सकती है, जब भारतीय कंपनी के शेयरधारक विदेशी होल्डिंग कंपनी के शेयरों का अधिग्रहण करते हैं और होल्डिंग कंपनी अपने शेयरधारकों से भारतीय कंपनी के सभी शेयरों का अधिग्रहण करती है। गौरतलब है कि सैकड़ों भारतीय यूनिकॉर्न या तो फ्लिप हो गये हैं या विदेशी हो गये हैं। उनमें से अधिकतर का परिचालन यानी कार्य क्षेत्र भारत में है और उनका प्राथमिक बाजार भी भारत में है। लगभग सभी ने भारतीय संसाधनों (मानव, पूंजीगत संपत्ति, सरकारी सहायता आदि) का उपयोग करके बौद्धिक संपत्ति विकसित की है।

यूनिकॉर्न के फ्लिप करने के अनेक कारण हैं। ऐसा भारतीय नियामक परिदृश्य, कर कानूनों और जांच से बचने के लिए किया जाता है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय निवेशक अपनी निवेश प्राप्तकर्ता कंपनियों को विदेश जाने के लिए मजबूर करते हैं और कभी-कभी इसे निवेश के शर्त के रूप में भी रखते हैं, क्योंकि वे चाहते हैं कि डेटा और आइपी का मुख्यालय विदेशों में हो, अधिकांश व्यवसाय विदेशी निवेशकों से हैं और ये निवेशक केवल विदेशी मूल कंपनी के साथ अनुबंध करना चाहते हैं।

हालांकि, यह वैध कारण नहीं है, क्योंकि एक विदेशी सहायक कंपनी के साथ अनुबंध करने से कंपनी को फ्लिप किये बिना समान उद्देश्य पूरा हो सकता है। इंफोसिस, एचसीएल जैसी भारतीय आईटी सेवा फर्में भारत में मुख्यालय होने के बावजूद विदेशी क्षेत्रों में सार्थक व्यवसाय करने में सफल रही भी हैं। अमेरिका और सिंगापुर जैसे देशों ने जो अनुकूल निवेश नीतियां अपनायी

हैं, वे भी स्टार्टअप और निवेशकों को आकर्षित करती हैं।

इनमें से कुछ नीतियां कम दर की स्थिर व्यवस्था, शून्य पूंजीगत लाभ कर की दर, दोहरे कर अवंचन समझौते, महत्वपूर्ण मुद्दों पर साधारण बहुमत वोट की व्यवस्था, विकसित आइपी सुरक्षा कानून आदि हैं। निवेशकों के एकत्रीकरण के कारण मूल्यांकन अधिक है, इस धारणा के साथ विदेशों में सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध होने की इच्छा भी एक कारण है। फ्लिपिंग से अनेक नुकसान होते हैं। एक भारतीय कंपनी भारत से ही 90 प्रतिशत मूल्य सृजन के बावजूद विदेशी निगम के पूर्ण स्वामित्व में चली जाती है, जिससे करों का नुकसान होता है। महत्वपूर्ण डेटा के साथ आइपी का स्वामित्व विदेशों में स्थानांतरित किया जाता है।

इनमें से अधिकतर कंपनियां सालाना 100-200 प्रतिशत बढ़ रही हैं और तेजी से उपभोक्ता डेटा पर कब्जा कर रही हैं। यह महत्वपूर्ण डेटा पर सुरक्षा खतरे का एक कारण है और इससे उस कंपनी के सभी संबद्ध आइपी से भविष्य के संभावित मूल्य निर्माण का नुकसान होता है। फ्लिप हुए स्टार्टअप भारतीय नियमों-कानूनों को दरकिनार करते हैं और घरेलू समकक्षों की तुलना में अनुचित लाभ प्राप्त करते हैं। यह भारत से विदेशी क्षेत्रों में मूल्य सृजन को स्थानांतरित करने के लिए एक संरचना बन जाता है, क्योंकि अधिकांश व्यवसाय अभब भी भारत में आधारित टीमों के साथ हो रहा है।

विदेशी मुख्यालय संरचनाओं के कारण भारत सरकार इनके धन के स्रोत का निर्धारण नहीं कर सकती है। यह भविष्य में युद्ध जैसी स्थिति में राष्ट्र के लिए सुरक्षा के मुद्दे हो सकते हैं। जैसे भारत में रहनेवाले स्टार्टअप में आवश्यक अनुमोदन के बाद ही पड़ोसी देशों से पैसे लाने की अनुमति है, लेकिन विदेशी मुख्यालय वाले स्टार्टअप को इसकी आवश्यकता नहीं है।

विदेशी निवेशक भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था का लाभ उठाने के इच्छुक हैं और फ्लिपिंग से इन्हें भारत में प्रवेश किये बिना ऐसा करना संभव हो जाता है। चूंकि ऐसे स्टार्टअप विदेशों में भी सूचीबद्ध होंगे, भारतीय इक्विटी बाजार गहराई प्राप्त नहीं कर पायेगी। यह विदेशी निवेशकों के लिए हमारे नियम-कानूनों को दरकिनार कर भारत के संसाधनों और उन्नति से लाभ उठाने का एक तरीका बन जाता है।

फ्लिपिंग से इंगित होता है कि भारत में कैसे विदेशियों के लिए लाल कालीन बिछाये जाते हैं और स्वदेशी खिलाड़ी लालफीताशाही के शिकार हैं। विभिन्न राज्यों में भूमि आवंटन के दौरान विदेशी संस्थाओं को छूट मिलती है, लेकिन स्वदेशी खिलाड़ियों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है। फ्लिप हुई इकाई को पूंजी तक आसान और सस्ती प्राप्त होती है और साथ ही निवेशकों को पैसा निकालना बहुत आसान होता है।

यहां तक कि भारत में निवेश करने वाले भारतीय फंडों को भी विदेशी समकक्षों की तुलना में अधिक पूंजीगत लाभ कर का भुगतान करना पड़ता है। भारत में पंजीकरण के लिए संस्थाओं को प्रोत्साहित करने के लिए पूंजी तक पहुंच से लेकर संबद्ध व्यवस्था को दुरुस्त करने की आवश्यकता है। स्वदेशी निवेश संस्थाओं के खिलाफ भेदभावपूर्ण नीतियों को रोकने की जरूरत है। अंततः भारतीय स्टार्टअप को फ्लिप करने से हतोत्साहित करने के लिए हमें कुछ सख्त कदम उठाने होंगे, जिनमें फ्लिप करनेवालों को विदेशी कंपनी घोषित करना भी शामिल है।

डॉ. शुभ्रा (PHD)

बहुत कुछ कहती हैं कार्यशैली

राष्ट्र-प्रसिद्ध, श्रद्धेय डॉ. शुभ्रा ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जिन्हें कोई भी वाक्पटु परिचय की आवश्यकता नहीं है। उनका नाम और उनकी शानदार कार्यशैली उनके लिए काफी कुछ कहती है। 08 अक्टूबर 1977 को उनका जन्म हुआ । डॉ शुभ्रा भगवान गणेश की एक प्रबल भक्त हैं, भले ही वह एक बेंगोली (बांग्ला) पृष्ठभूमि से हैं। प्यार करने वाली और दयालु, डॉ शुभ्रा ने अपनी बेदाग भविष्यवाणियों के लिए कई प्रशंसाएं और व्यापक पहचान हासिल की है। जबकि बहुत से ज्योतिषी भविष्यवाणी करने के लिए एक या दो तकनीकों का पालन नहीं करते हैं, डॉ शुभ्रा को वैदिक, न्यूमरोलॉजी, ज्योतिष और यहां तक कि हस्तरेखा विज्ञान के सिद्धांतों को संयोजित करने के लिए जाना जाता है। इन सिद्धांतों का सही संयोजन उन्हें अत्यधिक सटीक और प्रासंगिक भविष्यवाणियां करने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, स्वाभाविक रूप से एक शानदार सहज कौशल के साथ उपहार में, वह सुनती है और अपनी आंतरिक आवाज पर भरोसा करती है।

डॉ. शुभ्रा पूरे देश में कई समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। उनके पश्चिमी भारत में फैब्रिक स्टूडियो-अहमदाबाद (गुजरात), नोकिया शोरूम, काकरिया-अहमदाबाद (गुजरात), सबवे आउटलेट, भोपाल-अहमदाबाद (गुजरात), होटल मगंजी और होटल सरस्वती- माउंट आबू (राजस्थान) जैसी कई परियोजनाओं को संभाला है। ट्यूलिप अपार्टमेंट, बनासवाड़ी-बेंगलुरु (कर्नाटक) उनके द्वारा संचालित कुछ पुनर्वित्त परियोजनाएं हैं। इसके अलावा, डॉ. शुभ्रा की दूरदृष्टि और सटीक भविष्यवाणियों ने उन्हें शुक्राचार्य ज्योतिषीय अनुसंधान केंद्र (एसएआरसी) -दिल्ली के प्रतिष्ठित समूह में स्थान दिलाया है।

डबरा मैं भी मनाया गया स्वतंत्रता दिवस को खुशियों और आनन्द के साथ

75वें स्वतंत्रता दिवस मना बडी खुशी के साथ

जहाँ नगर पालिका में सी एम ओ महेश पुरोहित ने झंडा फैराया वही डबरा स्टेडियम में डबरा एस डी एम प्रदीप शर्मा,जिला जनपद अध्यक्ष श्रीमती परिहार ने भी झंडा फैराया इस कार्यक्रम में पूर्व मंत्री महिला वाल विकाश मंत्री इमरती देवी सुमन ,डबरा विधायक सुरेश राजे भी उपस्थित थे। दूसरी ओर डबरा विधायक सुरेश राजे ने डबरा कांग्रेश कार्यालय पर झंडा फैराया और सभी नगर वासियों को शुभकामनाएं दी।

शुभ कामना सन्देश

यह जानकर आत्मीय प्रसन्नता हुई कि हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल हो और अपने मानकों पर सौ प्रतिशत खरी उतरे यही आशुतोष भगवान शिव से मेरी अभ्यर्थना है, महेशात्नापरो देवो,,दुनिया मे शिव से बढ़कर कोई देव नही है। शिव देवाधिदेव महादेव है,शिव से बढ़कर कोई तत्व भी नही है,,नास्ति तत्वं गुरो परम्। पत्रिका सम्पादक श्री मनोज चतुर्वेदी व हमारा देश हमारा अभियान परिवार के समस्त महानुभाओं को हमारी और से अनन्तानन्त मंगल कामनाएं,,
शुभाशीर्वाद

भवदीय
आचार्य पण्डित रामचंद्र शर्मा वैदिक, शोध निदेशक, भारद्वाज ज्योतिष एवं आध्यात्मिक शोध संस्थान, प्रदेशाध्यक्ष, मध्यप्रदेश ज्योतिष एवं विद्वत परिषद, इंदौर (मध्यप्रदेश)

वैश्विक कर प्रणाली

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने उम्मीद जतायी है कि जल्दी ही सभी देश इस संबंध में निर्णय कर लेंगे। अगले सप्ताह अमेरिकी राजधानी में जी-20 देशों के वित्तमंत्रियों की बैठक संभावित है।

पूंजी, श्रम व तकनीक के विस्तार के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गयी है। एक से अधिक देशों में अपने उद्योग, सेवा और उत्पादन तंत्र से इन कंपनियों की भारी आमदनी होती है, लेकिन उस हिसाब से कई देशों को राजस्व नहीं मिल पाता है। ये कंपनियां या तो उस देश को कर देती हैं, जहां उनके मुख्यालय होते हैं या वे ऐसे देशों में अपने कार्यालय खोलती हैं, जहां उन्हें कम कर चुकाना पड़ता है।

इस वजह से उन देशों को भी राजस्व का नुकसान होता है, जो वास्तव में आय में मुख्य योगदान करते हैं। इस विसंगति को दूर करने के लिए इस वर्ष जुलाई में 130 देशों ने वैश्विक न्यूनतम कर प्रणाली स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की है। भारत भी इन देशों में शामिल है और वह इस प्रणाली के प्रारूप पर अपनी राय को अंतिम रूप देने में जुटा हुआ है। इसमें प्रावधान किया गया है कि कंपनी जिस देश में कार्यरत होगी, वहां उसे कम-से-कम 15 प्रतिशत कर देना होगा।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने उम्मीद जतायी है कि जल्दी ही सभी देश इस संबंध में निर्णय कर लेंगे। अगले सप्ताह अमेरिकी राजधानी में जी-20 देशों के वित्तमंत्रियों की बैठक संभावित है। भारत उन देशों में शामिल है, जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा समुचित कर न देने की प्रवृत्ति के शिकार हैं।

कई ऐसी कंपनियां हैं, जो यह तर्क देती हैं कि उनका मुख्यालय अन्यत्र है, इसलिए वे कुछ करों को यहां नहीं भरेंगे। मौजूदा व्यवस्था में ठोस कानूनी प्रावधानों की कमी और ताकतवर देशों के दबाव की वजह से विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को राजस्व घाटे के रूप में खामियाजा भुगतना पड़ता है। डिजिटल तकनीक और इंटरनेट के प्रसार ने भी सरकारों को लाचार कर दिया है।

हालांकि ऐसी कर व्यवस्था की मांग अविकसित और विकासशील देश लंबे समय से कर रहे थे, पर धनी देश अपनी कंपनियों के हितों को प्राथमिकता दे रहे थे। विभिन्न देशों के कानूनों में भिन्नता तथा अत्याधुनिक तकनीक का लाभ उठाकर

कंपनियों ने जब विकसित देशों में ही कम कर देना शुरू किया, तब उनकी नींद खुली। इसका परिणाम वैश्विक कराधान के रूप में हमारे सामने है। इसके लागू हो जाने के बाद अगर कोई कंपनी भारत में अपनी गतिविधियों से जो अर्जित करेगी, उस हिसाब से उसे निर्धारित कर देना होगा।

अनेक तकनीकी कंपनियां ऐसी हैं, जिनकी उपस्थिति बड़े उद्योगों की तरह नहीं है, पर वे भारत जैसे देशों से खूब कमाती हैं। कुछ साल से भारत सरकार और तकनीकी कंपनियों में इस मसले पर तनातनी भी है। भारत और चीन समेत 130 से अधिक देशों ने इस व्यवस्था का समर्थन किया है, पर सफलता के लिए अधिकतर देशों की अंतिम सहमति अनिवार्य है, अन्यथा बड़ी कंपनियां कर बचाने के रास्ते निकाल लेंगी। भारत को इस प्रक्रिया में अग्रणी भूमिका निभानी है क्योंकि तकनीकी कंपनियों का बड़ा बाजार हमारे देश में है।

प्रो. रवि परिहार

त्रिदेव कंस्ट्रक्शन एंड सप्लायर की ओर से नवरात्रि और दशहरे की सभी देशवासियों को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

प्रो. रवि कांत शर्मा

देश के 7 प्रमुख स्थलों में से एक हरिद्वार

हरिद्वार देश के सात प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। माना जाता है कि गंगा में डुबकी लगाने से सारे पाप धुल जाते हैं, यही कारण है कि दूर-दूर से लोग यहां आते हैं। हरिद्वार से 25 किमी दूर ऋषिकेश भी है। ऋषिकेश को 'योग कैपिटल ऑफ़ द वर्ल्ड' के रूप में जाना जाता है।

हवा में घुली पवित्रता, चारों ओर आरती और मंत्रों की आवाज़ और घाट-घाट पर गंगा का पानी... अगर आप भी कुछ ऐसा अनुभव करना चाहते हैं तो हरिद्वार जाने का प्लान ज़रुर बनाएं। हरिद्वार देश के सात प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। माना जाता है कि गंगा में डुबकी लगाने से सारे पाप धुल जाते हैं, यही कारण है कि दूर-दूर से लोग यहां आते हैं। यहां घूमने के लिए बहुत से मंदिर और ऋषि-मुनियों के आश्रम हैं। प्राचीन मान्यता के अनुसार ये उन चार जगहों में से एक है जहां समुद्र मंथन के दौरान अमृत की बूँदे गिरी थी इसीलिए यहां हर 12 साल में महाकुंभ का आयोजन किया जाता है। हरिद्वार की गंगा आरती बहुत प्रसिद्ध है और दुनिया भर से लोग इस आरती में शामिल होते हैं। हरिद्वार से 25 किमी दूर ऋषिकेश भी है। प्राचीन समय में ऋषियों और मुनियों ने यहां पर ध्यान, योग और प्रार्थना किया था जिसकी वजह से इस जगह को पवित्र माना जाता है। ऋषिकेश में हिमालय की चोटियाँ बहुत ही खूबसूरत नज़र आती है। इसके साथ ही ऋषिकेश को देवभूमि का प्रवेश द्वार भी कहते हैं। ऋषिकेश को 'योग कैपिटल ऑफ़ द वर्ल्ड' के रूप में जाना जाता है। ऋषिकेश तीन जिलों से घिरा हुआ है टेहरी गढ़वाल, पौरी गढ़वाल और हरिद्वार। आज के इस लेख में हम आपको हरिद्वार और ऋषिकेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में बताने जा रहे हैं। अगर आप अपनी रोज़ की भाग-दौड़ भरी ज़िन्दगी से दूर, कहीं सुकून पाना चाहते हैं तो हरिद्वार और ऋषिकेश की यात्रा का प्लान बना सकते हैं-

हरिद्वार में घूमने की जगहें

हर की पौड़ी

हर की पौड़ी हरिद्वार की प्रमुख जगहों में से एक है। हर की पौड़ी का अर्थ है - प्रभु के पैर। ऐसा माना जाता है कि यहां भगवान विष्णु प्रकट हुए थे और हरि की पौड़ी पर एक पत्थर पर भगवान के पदचिन्ह भी हैं। इस घाट से गंगा पहाड़ों को छोड़ मैदान की तरफ मुड़ती है। इस घाट पर श्रद्धालुओं की सबसे ज्यादा भीड़ होती है। प्रतिदिन गंगा आरती का आयोजन भी इसी घाट पर होता है।

सप्तऋषि आश्रम

यह आश्रम सात ऋषियों के नाम पर बनाया गया है। माना जाता है कि यहां सात ऋषि बैठकर पूजा करते थे इसलिए इसे सप्तऋषि कुंड भी कहा जाता है। इस आश्रम के परिषर में कई मंदिर भी बने हुए हैं।

वैष्णो माता मंदिर

इस मंदिर का निर्माण 10 साल पहले हुआ था लेकिन यह हरिद्वार के सबसे प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह मंदिर कटरा में बने वैष्णो माता के मंदिर का रेप्लिका है। इस मंदिर में भी वैष्णो देवी की तरह गुफाएं बनाई गई हैं।

भारत माता मंदिर

भारत माता मंदिर को मदर इंडिया मंदिर भी कहा जाता है। यह मंदिर भारत माता को समर्पित है और यह देश का इकलौता ऐसा मंदिर है जहाँ भारत माता की मूर्ती की पूजा होती है। इस मंदिर का निर्माण 1983 में स्वामी सत्यमित्रानंद द्वारा किया गया था और इसका उद्घाटन इंदिरा गाँधी ने किया था। यह मंदिर 108 फीट ऊंचा है और इसमें कुल 8 मंजिलें हैं। हर एक मंजिल में अलग अलग देवी-देवताों और स्वतंत्रता संग्रामियों की मूर्ती व फोटो हैं।

विष्णु घाट

हरिद्वार के सबसे प्रसिद्ध घाटों में से एक विष्णु घाट है। ऐसा माना जाता है की यहां भगवान विष्णु ने स्नान किया था और यहां स्नान करने से सभी पाप मिट जाते हैं, इसी वजह से यहां श्रद्धालुओं की बड़ी भीड़ देखने को मिलती है।

पारद शिवलिंग

हरिद्वार से 2 किलोमीटर दूर स्थित कनखल का पारद शिवलिंग हरिहर आश्रम बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ शुद्ध पारे से बने १५१ किलो के शिवलिंग की स्थापना की गई है। यहां हर साल लाखों भक्त आते हैं। यहाँ एक रूद्राक्ष का पेड़ भी है जो श्रद्धालुओं के बीच आकर्षण का केंद्र है।

मनसा देवी मंदिर

हरिद्वार से 3 किलोमीटर की दूरी पर बिलवा पर्वत पर स्थित यह मंदिर आस्था का एक प्रमुख स्थल है। मनसा देवी को पार्वती का ही एक रूप कहा गया है। माना जाता है कि मनसा देवी मंदिर में मांगी गई मन्नत जरूर पूरी होती है इसलिए दूर-दूर से श्रद्धालु यहां आते हैं। हरिद्वार से यहां तक चल कर आया जा सकता है या रोपवे के जरिए भी पहुंचा जा सकता है।

शक्ति और ममता की मूरत घर-घर देवी की सूरत

देश में कई जगह सितंबर के इस मध्य में बारिश के रिकार्ड टूट रहे हैं। धूल-मिट्टी से सने हुए पेड़ बारिश में नहा-धोकर, चमकीले पत्तों से भर गए हैं। जैसे हरीतिमा अपना उत्सव मना रही हो। त्योहारों की आहट फिजां में गूंज रही है। नवरात्रि आने वाली है। श्राद्ध या पितृ पक्ष के बाद नवरात्रि, फिर दिवाली की धूम। उत्सव ही उत्सव।

• क्षमा शर्मा

मंदिरों में साफ-सफाई सज्जा का दौर चल रहा है। इस साल नया क्या खरीदना है, लोग अपनी-अपनी लिस्ट निकाल रहे हैं। जगह-जगह मूर्तिकार अष्ट्भुजाओं वाली देवी की मूर्तियों को बनाकर सजाने-संवारने में लगे हैं। सब तरफ देवी दुर्गा की जय-जयकार गुंजायमान है। अगरबत्ती, धूप की सुगंध, देवी की कृपा के लिए स्त्री-पुरुष, बच्चों, बूढ़ों की भारी भीड़। देश के बहुत-से हिस्सों में नवरात्रि को लोग तरह-तरह से मनाएंगे। सदियों से बंगाल शक्तिपूजा का प्रमुख प्रदेश माना जाता है। वहां इसे धार्मिक उत्सव के मुकाबले, सांस्कृतिक उत्सव भी कहा जाता है। हर धर्म और जाति के लोग इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। बल्कि कलकत्ता में इस अवसर पर प्रमुख घटनाओं को भी उकेरा जाता है। सालों पहले इस लेखिका ने वहां दुर्गा पूजा के अवसर पर दुर्गा को हेमामालिनी के रूप में देखा था। जिन दिनों फिल्म जूरासिक पार्क की धूम मची थी, तो पूजा पंडालों में देवी को डायनासोर की पीठ पर बिठा दिया गया था। इस बार सुन रहे हैं कि बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को दुर्गा के रूप में दिखाया जा रहा है।

जहां-जहां देवी के शक्तिपीठ हैं, वहां की यात्राएं भी इन दिनों बढ़ जाती हैं। बहुत साल पह
एक मुसलमान मित्र ने बताया था कि व
शक्तिपीठों की यात्रा कर चुकी हैं। जिसकी ज
उसे दिखाने का अवसर भी आजकल ये पर्व बन
हैं। नन्ही कन्याओं की पूछ एकाएक बढ़ जाती है। उनक
ओवरबुकिंग शुरू हो जाती है। बहुत से लोग कहते हैं कि नवरात्रि स्त्री सशक्तीकरण और उनकी महिमा गान क सबसे बड़ा पर्व है।

भारत में देवी के विभिन्न रूप भी हैं। दुनिया की जो सबसे उपयोगी चीजें हैं जैसे धन, विद्या, शक्ति उस सबकी जिम्मेदारी देवियों की हैं, अपनी सभ्यता की यह भी सबसे अनोखी बात है। शक्ति भी देवी के पास है और धन की कृपा भी देवी ही करती हैं। पुरखों ने स्त्रियों को शक्तिशाली बनाने और समाज में उन्हें हर तरह से सम्मान दिलाने की व्यवस्था कितने अच्छे तरीके से की है। और हम हैं जो कहते हैं कि भारत में औरतों को सबसे नीची नजर से देखा जाता है। आखिर कैसे ?

स्त्री शक्ति तब और अब

कहते हैं कि देवी को महिषासुर के वध के लिए देवताओं ने अपनी–अपनी शक्तियां दी थीं। हथियार सौंपे थे। यानी कि पुरुषों ने स्त्री की सत्ता को स्वीकार किया था। शक्ति पूजा एक प्रकार से मातृशक्ति की पूजा ही है। जब भी आप किसी त्योहार के बारे में सोचते हैं, तो बार-बार अतीत में लौटते हैं। सोचते हैं कि तब क्या होता था और आज क्या हो रहा है। आज से पचास–पचपन साल पहले सबसे पहली बात याद आती है। घर में मां, चाची, बुआ, हम सब चचेरे, तयेरे भाई-बहन। एक हफ्ते पहले से पूजा की तैयारियां शुरू हो जाती थीं। घर की सभी स्त्रियां अष्टबाहु तो क्या सहस्रबाहु होती थीं। घर की साफ-सफाई से लेकर, लिपाई- पुताई, सजावट, पूरी, पकवान, मिठाइयां, अचार-पापड़, बड़ियां, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, पशुओं की देखभाल, दूध, दही, मक्खन, छाछ इन सबका घर के लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों के लिए ही नहीं उनके स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को देखते हुए भरपूर इस्तेमाल वे ही करती थीं। फिर नवरात्रि के अवसर पर विशेष भोज, तरह-तरह के व्यंजन। ढोलक थाप, मंजीरे और नाच-गाना। सबसे अफसोस की बात यह है कि इन सहस्रबाहु देवियों के असाधारण कामों को घरेलू खाते में डालकर महत्वहीन घोषित कर दिया गया। जबकि घर की जरूरतों के वे सारे काम जो ये महिलाएं घर में ही निपटा लेती थीं, आज उनमें से अधिकांश कामों के लिए हम बाजार पर निर्भर हैं। जी भर कर पैसे खर्च करते हैं फिर भी काम वैसे शायद ही कभी हो पाते हैं जो हमारी दादी, नानियां, मांएं यानी कि उस दौर की देवियां बहुत आसानी से निपटा देती थीं। सच तो ये है कि असली मल्टी टास्कर ये औरतें ही थीं। जिन्होंने घर के इन बेहिसाब कामों की शिक्षा या ट्रेनिंग किसी इंस्टीट्यूट में जाकर नहीं ली थी, बल्कि जिसे सिस्टरहुड की चेन या बहनापा कहते हैं, वहीं से सीखी थीं। हर स्त्री अपने घर की महिलाओं को देखकर ही बहुत कुछ सीखती है। अपनी गृहस्थी बसाने के बाद भी वह मुड़-मुड़कर देखती है कि मां इस काम को कैसे करती थी, दादी क्या कहती थी। आज के दौर की तरह उन दिनों की महिलाओं को तकनीक की इतनी सुविधा प्राप्त नहीं थी। आज ही की तरह इन स्त्रियों की चुनौतियां भी कोई कम नहीं थीं। इन औरतों के मुकाबले आज की औरत को देखती हूं तो लगता है कि आज की स्त्री को अपनी ताकत के बारे में पहले ही दिन से मालूम होता है। इसमें शिक्षा, मीडिया और आत्मनिर्भरता की बड़ी भूमिका है।

रफ्तार में आज की देवियां

इन नई देवियों की भी अष्टभुजाएं न सही, मगर शिक्षा, लोकतंत्र, स्पीड और कम्युनिकेशन ने इस लड़की यानी कि आज की देवी को नयी ताकत दी है। मोबाइल, कम्प्यूटर, व्हाटसएप, फेसबुक आदि इसके नए हथियार बने हैं। शेर की सवारी न भी करे मगर कार-हवाई जहाज चलाती यह लड़की किसी को भी चुनौती दे सकती है। स्पीड और तकनीक इसकी सबसे बड़ी ताकत और हथियार बने हैं। लड़कियों को उनके जीवन चलाने के लिए तरह-तरह की सुविधाएं देना एक प्रकार से नए तरीके से देवी की पूजा ही है, जो सिर्फ कुछ दिन नहीं, सालों साल चल सकती है। इन्हीं सुविधाओं के सकारात्मक नतीजों के कारण आजकल हर क्षेत्र में लड़कियां आगे–आगे दिखाई देती हैं। व्यापार, चिकित्सा, शिक्षा, मैनेजमेंट, प्रशासन इन नयी देवियों की संख्या रात-दिन बढ़ रही है। कई कार्यस्थलों पर अब इतनी लड़कियां नज़र आती हैं कि लड़कों को ढूंढ़ना पड़ता है। वैसे भी देवी पूजा के वक्त लड़के लांगुरा के रूप में एक-आध ही होते हैं। जिस पत्रकारिता संस्थान में इस लेखिका ने जीवन भर काम किया, वह देश का एक बड़ा संस्थान था। दूर-दूर से नजर आती बहुमंजिला इमारत थी। आज से चवालीस साल पहले भी वहां हजारों लोग काम करते थे। लेकिन इन हजारों में महिलाओं की संख्या दस भी नहीं थी। लेकिन इसी संस्थान को सैंतीस साल काम करने के बाद जब छोड़ा, तो यहां हर तरफ महिलाएं ही नजर आती थीं। यहां तक कि बहुत बड़े-बड़े पदों पर विराजमान थीं। इनमें से ज्यादातर महिलाएं घर और दफ्तर दोनों को संभालती थीं। तरह-तरह की चुनौतियों को झेलती थीं। इन्हें देखती थी तो खेती-किसानी में लगी औरतें, कारखानों में खटती औरतें, बाजारों में तरह-तरह के सामान बेचती, दुकानों में काम करतीं तमाम कामगार औरतें याद आतीं। क्या इनके काम के घंटों का हिसाब किसी गणितीय ढंग से लगाया जा सकता है। दिलचस्प तथ्य यह है कि जितनी कम तनख्वाह उतना ही अधिक काम। उतनी ही अधिक भाग-दौड़, परिश्रम।

घर संवारती महिलाएं और देवी की परिकल्पना

सोचें कि देवी की परिकल्पना क्या हमारी इन नयी-पुरानी औरतों से अलग है। देवी को अष्टभुजा कहा जाता है। देवी की आठ भुजाएं दिखती हैं, लेकिन इन महिलाओं की दो भुजाएं ही जैसे आठ या सोलह भुजाओं से अधिक हो जाती हैं। सवेरे उठकर चाय पीते-पीते ही सब्जी छौंक रही हैं। जिसे गई रात काटकर रखा था जिससे कि सवेरे कुछ समय बच सके। दूसरे चूल्हे पर दाल चढ़ा रखी है। इसी बीच नाश्ते के लिए जो बनाना है, उसकी तैयारी कर रही हैं। बच्चों के टिफिन पैक कर रही हैं, जिससे कि स्कूल में वे भूखे न रह जाएं। अपना और पति का लंच पैक करते हुए गंदे कपड़े पानी और साबुन में भिगो रही हैं या वाशिंग मशीन में डाल रही हैं। बच्चों के दोपहर में पहनने के कपड़े निकाल रही हैं। काम वाली ने छुट्टी कर ली है तो झाड़, पोछा, बर्तन का काम भी है। बच्चों के स्कूल की छुट्टी हुई, तो हो सकता है, वे कुछ मदद कर दें और दफ्तर की छुट्टी हो तो पतिदेव कुछ हाथ बंटा दें। आम दिनों में नौ बजते-बजते घर से बाहर निकलकर बस, मेट्रो पकड़ रही हैं। कैब या ऑटो ले रही हैं। या खुद ड्राइव कर रही हैं। चिंता है, तो बस एक ही कि किसी तरह से ट्रैफिक जाम से बचते-बचाते समय पर दफ्तर पहुंच सकें। समय की कमी, बीमारी, हारी, रातों-रात नौकरी का चले जाना, बच्चों के इम्तिहान, घर में मेहमानों का आना, किसी की शादी, ब्याह, जन्मदिन के लिए अलग से समय निकालना आदि न जाने कितनी जिम्मेदारियां हैं, जिन्हें निभाना पड़ता है। और जैसे-जैसे जिम्मेदारियां बढ़ती जाती हैं, उनके आसपास तरह-तरह के शत्रु मंडराने लगते हैं। कई बार वे मित्र के वेश में आते हैं। उन्हें पहचानना बेहद ज़रूरी होता है, वरना भरोसे में लेकर बड़े से बड़ा नुकसान कर सकते हैं। राक्षस को मारने के लिए देवी के पास तो एक ही त्रिशूल था, आज की इन महिलाओं को न जाने कितने राक्षसों से हर रोज निपटना पड़ता है। बचना पड़ता है। कितने हथियार चलाने पड़ते हैं। कई बार चोट भी खाती हैं, तो उठ खड़ी होती हैं। इसी को तो कहते हैं शक्ति जो विपरीत परिस्थितियों में भी पराजित नहीं होने देती। असली देवी पूजा तो यही है कि हमारे परिवारों और समाज में जो लाखों लाख देवियां लड़कियों के रूप में मौजूद हैं, समाज उन्हें आगे बढ़ाए। उनके जीवन को सुगम करे। और सिर्फ युवा लड़कियां ही नहीं, अपनी पुरानी देवियां, जिन्होंने हमारे परिवार और परिवार से समाज को अपने हाड़-तोड़ परिश्रम से बनाने की जीवनभर कोशिश की है, उन्हें भी न भुलाएं। एक तरफ देवी पूजें और दूसरी तरफ अपने घर की वृद्धाओं को घर से निकालें, यह कितने दु:ख की बात है। देवी पूजा का अर्थ स्त्री शक्ति का गान है। इसमें युवा और उम्रदराज महिला का फर्क क्यों हो भला?

आठ-दस वर्षों से आज दिनांक तक शिकायतकर्ता को नहीं मिला न्याय

ग्राम पंचायत का जीआरएस पड़ रहा है प्रशासनिक अधिकारियों पर भारी

जनपद पंचायत गोहद (भिंड) के अन्तर्गत आने वाली ग्राम ंचायत लहचुरा में जीआरएस की फर्जी नियुक्ति संबंधित शिकायत लगभग आठ-दस वर्षों से ग्राम माहो के शिकायत कर्ता मीष कुमार शर्मा द्वारा निरंतर करते हुए न्यायालय की शरण ली गई है लेकिन प्रशासनिक अधिकारियों की मेहबरानी जीआरएस पर इतनी बनी हुई है कि आज दिनांक तक किसी भी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं की गई है जिससे शिकायतकर्ता को परेशान होकर आर्थिक तंगी का भी सामना करना पड़ रहा है जबकि नियुक्ति के समय फर्जी, कूटरचित दस्तावेज उपयोग किए गए जिससे संबंधित जिला प्रशासन को सबूत भी मिल चुके हैं। फिर भी राजनीतिक ऊंची पहुंच वाले जीआएरस गिर्राज शर्मा के विरूद्ध ठोस, दंडात्मक कार्रवाई करने की हिम्मत प्रशासन नहीं जुटा पा रहा है तथा प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा फर्जी नियुक्ति वाले जीआरऐस गिर्राज शर्मा को बचाने की कोशिश की जा रही है। जिससे स्पष्ट होता है कि शायद ग्राम पंचायत लहचुरा के जीआएरएस गिर्राज शर्मा द्वारा प्रशासनिक अधिकारियों को खरीद लिया गया है या फिर राजनैतिक दबाव के कारण प्रशासनिक अधइखारी, कर्मचारी ने मौन धारण किया हुआ है। इस प्रकार ग्राम पंचायत लहचुरा का जीआरएस गिर्राज शर्मा जनपद पंचायत गोहद क्षेत्र में जनता में भ्रष्टाचार के कारण चर्चा का विषय बना हुआ है जबकि वर्तमान में ग्राम पंचायत एंडोरी मे पदस्थ प्रभारी सचिव गिर्राज शर्मा द्वारा भ्रष्टाचार बड़े स्तर पर करने के कारण आए दिन सूर्खियों में बना रहता है। लेकिन प्रशासनिक अधिकारियों के कानों में जूं तक नहीं रेंग रही है। जिस जीआरएस के कारण जनता को भी परेशानी की सामना करना पड़ रहा है अब देखना यह है कि क्या जिला प्रशासन भिंड के अधिकारी कर्मचारियों द्वारा नींद से जाग कर जीआरएस गिर्राज शर्मा के विरूद्ध ठोस दंडात्मक कार्रवाई करने की हिम्मत जुटाई जाएगी या नहीं?

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

कौशलेन्द्र विक्रम सिंह
डीएम
ग्वालियर

अस्वनी रावत
प्रशासक एवं एसडीएम
भीतरवार

चंद्रकांत शर्मा
सीएमओ नपा
भितरवार

नगर पालिका भितरवार की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

सहित भितरवार के नागरिकों से अपील करती है....

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

पुलिस अधीक्षक अमित सांघी सम्मानित

ईमानदारी और कर्त्तव्य निष्ठा की कार्य शैली से पहचान रखने वाले पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी को पुलिस महानिदेशक महोदय मप्र द्वारा उनको किया पदक से सम्मानित। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी* को पुलिस महानिदेशक महोदय मप्र द्वारा उनकी सराहनीय सेवाओं के लिये प्रदत्त डीजी-सीआर पदक पुलिस महानिरीक्षक ग्वालियर जोन श्री अविनाश शर्मा द्वारा आज दिनांक 07.10.2021 को पुलिस कन्ट्रोल रूम ग्वालियर सभागार में पदक लगाकर पुलिस महानिदेशक कार्यालय भोपाल से प्रदत्त प्रशस्ति पत्र प्रदाय किया गया। इस अवसर पर पुलिस उप महानिरीक्षक ग्वालियर रेंज श्री राजेश हिंगणकर, अति0 पुलिस अधीक्षक शहर मध्य श्रीमती हितिका वासल, अति0 पुलिस अधीक्षक पश्चिम श्री सत्येन्द्र सिंह तोमर, अति. पुलिस अधीक्षक पूर्व श्री राजेश दण्डोतिया के अलावा पुलिस के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित थे। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर ने इसका श्रेय अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को दिया है।

प्रशासक राम निवास सिकरवार
तहसीलदार विलौआ

कौशलेंद्र विक्रम सिंह कलेक्टर, ग्वालियर

प्रदीप शर्मा
सीएमओ विलौआ

विलौआ नगर परिषद की ओर से स्वतंत्रता दिवस की विलौआ नगर के समस्तवासियों को बहुत बहुत शुभकामनाएं

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

हिंदी सिनेमा ने तकनीकी स्तर पर भले ही विश्वस्तरीय पहचान न बना पाई हो, लेकिन हिंदी फिल्मों का कथानक, संगीत नृत्य को विश्वस्तरीय पहचान 50-70 के दशक में ही मिल चुकी थी और तब से ही दुनिया में भारतीय सिनेमा ने अपना एक स्थान बना लिया था।

अगर सिनेमा समाज का आईना है, तो हमें आईने को बदलना होगा

भारतीय फिल्म उद्योग को जब से बॉलीवुड कहा जाने लगा है, तब से ही यहां के निर्माता-निर्देशक, कलाकार सबके अंदर एक होड़ सी मच गई है, हालीवुड के नक्श-ए-कदम पर चलने की। हिंदी सिनेमा ने तकनीकी स्तर पर भले ही विश्वस्तरीय पहचान न बना पाई हो, लेकिन हिंदी फिल्मों का कथानक, संगीत नृत्य को विश्वस्तरीय पहचान 50-70 के दशक में ही मिल चुकी थी और तब से ही दुनिया में भारतीय सिनेमा ने अपना एक स्थान बना लिया था। गाइड का अंग्रेजों में बनना और राजकपूर की आवारा का गीत तब से लेकर आज तक एशिया ही नहीं यूरोप के लोगों के दिल-ओ-दिमाग पर छाया हुआ है।

बावजूद इसके बालीवुड की नई पौध अपने आपको हालीवुड से तुलना के चक्कर में नग्नता और मादकता की दहलीज को पार करते हुए भारतीय सभ्यता और यहां की संस्कृति के साथ मजाक कर रही है। हालीवुड की नकल में हीरोइन नग्नता की हदें पार कर रही है और तो और अब सिनेमा के रूपहले पर्दे से बाहर उनकी व्यक्तिगत जिंदगी में भी जिस तरह की चीजें हो रही हैं, उसे पूरा समाज और देश देख रहा है। एक वक्त था, जब फिल्म उद्योग की नायिकाओं की खूबसूरती देखते ही बनती थी, सुरैया, मधुबाला, मीना कुमारी, वहीदा रहमान, नर्गिस और वैजयन्तीमाला से लेकर हेमा मालिनी से लेकर माधुरी दीक्षत तक ने दर्शकों के दिलों में जो छाप छोड़ी वह मिटाए नहीं मिटेगी। लेकिन उनके व्यक्तिगत जीवन पर कीचड़ किसी ने नहीं उछाला। हां यदा-कदा किसी के प्यार और इकरार के किस्सी ही आम जनता के लिऐ चर्चा का विष्य बन जाते थे।

लेकिन आज सोशल मडिया के जमाने में जिस तेजी से नई पीढ़ी बालीवुड के नाम को मिट्टी में मिला रही है उसका जिम्मेदार कौन है? खुद इंडस्ट्री के लोग या आम जनता? या फिर मीडिया? संजय दत्त पर बम रखने, हथियार रखने का आरोप और सलमान खान द्वारा हिरण का शिकार तक लोगों ने देखा और सुना और इसे सफलता का उन्मान माना। लेकिन अब आए दिन फिल्मों और टीवी से जुड़ी नायिकाओं का वेश्यावृत्ति करते हुए पकड़ा जाना, ड्रग्स के लिए दीपिका पादुकोण, श्रद्धा कपूर और आलिया भट्ट से एनसीबी की पूछताछ, सुशांत की मौत पर बालीवुड के शक की सुई, और ड्रग्स माफियाओं से बालीवुड के कलाकारों का जुड़ा होना, ये क्या साबित करता है? एकता कपूर की आल्ट बालाजी और उल्लू पर खुले आम सेक्स परोसाना जाना, राज कुंद्रा जैसे पैसे वाले दौलतमंत निर्माता का ब्ल्यू फिल्में बनाना या फिर शाहरूख के बेटे की ब्ल्यू फिल्म का सोशल मीडिया में प्रचारित और प्रसारित होना या फिर उसका नायक बनने से पहले ही समाज के सामने खलनायक बन जाना, कसूरवार कौन है? पुलिस और एनसीबी ने शाहरूख खान के बेटे के साथ कुछ रसूखदारों की औलादों को गिरफ्तार तो कर लिया, मीडिया में खबरें भी बन गई लेकिन हमें तह में जाना होगा। पुलिस ने रेव पर छापा मारा, स्टारों को और लोगों को गिरफ्तार किया और मीडिया को मसाला मिला। लेकिन किसी भी मीडिया ने यहां की सरकार से, पुलिस से यहां तक कि अफसरों से ये क्यों नहीं पूछा कि ये ड्रग्स आया कहां से? साल भर नहीं हुआ सुशांत के मामले का और फिर से बालीवुड हाशिए पर खड़ा है। ड्रग्स मुंबई पहुंचता, लेकिन पुलिस उस तक क्यों नहीं पहुंच पाती? ऐसे पापियों को खबर पहले क्यों नहीं मिली? और बालीवुड के कलाकार अपनी औलादों पर अंकुश क्यों नहीं लगाते? मीडिया मामले की तह तक क्यों नही जाती? बहुत ही सोचने और समझने की जरूरत है, अगर सिनेमा समाज का आईना है तो आईने को बदलने की जरूरत है।

1971 में पाकिस्तान को मात देने वाले इंदौर के सैनिकों का होगा सम्मान चार स्वर्णीम विजय मशालें इंदौर आयेंगी, विशेष खुली जीप में रखा जाएगा

1971 में पाकिस्तान को मात देने वाले इंदौर के सैनिकों का होगा सम्मान

सन 1971 में पाकिस्तान को मात देने वाले सैनिकों का इंदौर में होगा सम्मान किया जाएगा । आगामी बुधवार को नेशनल वॉर मेमोरियल की अनंत ज्योति से प्रज्वलित चार स्वर्णीम विजय मशालें इंदौर आयेंगी शहर में विशेष सम्मान के साथ मशाल को घूमाया जाएगा ।इस युद्ध में शामिल हुए कुछ सैनिक रिटायर्ड होने के बाद इंदौर में रहते हैं। 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की जीत के 50 वर्ष पूरे होने पर देश में स्वर्णीम विजय वर्ष मनाया जा रहा है। इसके तहत नेशनल वॉर मेमोरियल की अनंत ज्योति से प्रज्वलित चार स्वर्णीम विजय मशालों को पूरे देश में ले जाया जा रहा है। बुधवार को यह मशाल महू होते हुए बीएसएफ इंदौर पहुंचेगी। शहर में विशेष सम्मान के साथ मशाल को घूमाने के बाद 1971 के युद्ध में पाकिस्तान को मात देने वाले सैनिकों का सम्मान किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 16 दिसंबर 2020 को नेशनल वॉर मेमोरियल पहुंचकर 1971 के युद्ध की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर विजय ज्योति से चार मशालों का जलाया गया था। इन्हें युद्ध में परमवीर चक्र और महावीर चक्र पुरस्कार विजेताओं के गांवों तक ले जाने के साथ ही पूरे देश में घुमाया जा रहा है। इंदौर बीएसएफ के आईजी अशोक कुमार यादव ने बताया कि बुधवार को यह मशाल महू से इंदौर एयरपोर्ट रोड स्थित बीएसएफ कैंपस पहुंचेगी, जहां मशाल के सामने युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजली दी जाएगी। इसके बाद ससम्मान प्रोटोकॉल के साथ मशाल को शहर में घुमाया जाएगा। मशाल को एक विशेष खुली जीप में रखा जाएगा, जिसके आगे बीएसएफ और पुलिस के जवान मोटर साइकल पर विशेष काफिले के रूप में चलेंगे।

सैनिकों को सांसद करेंगे सम्मानित

आईजी यादव ने बताया कि शहर में घूमाने के बाद मशाल को रविंद्र नाट्य गृह ले जाया जाएगा। यहां आयोजित कार्यक्रम में सांसद शंकर लालवानी युद्ध लड़ने वाले बीएसएफ के सैनिकों का सम्मान करेंगे। इस युद्ध में शामिल हुए कुछ सैनिक रिटायर्ड होने के बाद इंदौर में रहते हैं।

झारखंड की धरती से जुड़े फिल्मकार सचिंद्र शर्मा उत्तराखंड में सम्मानित

कालीदास पांडे

झारखंड की धरती से जुड़े फिल्मकार सचिन्द्र शर्मा को देहरादून (उत्तराखंड) में आयोजित देहरादून इंटनेशनल फिल्म फेस्टिवल (छठा सीजन) में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्करसिंह धामी और पर्यटन मंत्री सतपाल महाज की उपस्थित में अवार्ड देक सम्मानित किया गया। यह अवार्ड फिल्मकार सचिन्द्र शर्मा को बालीवुड में उनके द्वारा नवोदित प्रतिमाओं को प्रकाश में लाने के लिए किए गए कार्यों के लिए दिया गया। फिल्म काबू (2005), शबनम मौसी, धमकी (2005) मिस अनारा (2007) माई फ्रेंड गणेशा (फिल्म श्रृंखला 2010), मैं कृष्णा हूं, जिंदगी 50-50 (2013) लव यू फैमिली (2017), सत्यसांई बाबा (2021) के अलावा मराठी फिल्म बाला जैसी कई हिट फिल्मों का लेखन व निर्देशन कर चुके सचिन्द्र शऱअणा की फिल्म मुंबई कैन डांस साला (1915) काफी चर्चित फिल्मों में से

एक है। चाईबासा (झारखंड) के मूल निवासी सचिन्द्र शर्मा ने अपना फिल्मी करियर 1992 में बतौर फिल्म पत्रकार शुरु किया था। बाद में इन्होंने अपना रुख पटकथा, लेखन, निर्देशन और फिल्म निर्माण की ओर किया और अपनी प्रतिभा के बदौलत बालीवुड में झारखंड में परचम लहराया। नवोदित प्रतिभाओं को चांस देने में अग्रणी फिल्मकार सचिन्द्र शर्मा फिलवक्त क्षेत्रीय फिल्मों व धार्मिक फिल्मों की मेकिंग के तरफ ध्यान दे रहे हैं। झारखंड की लोक कला संस्कृति से जुड़ी एक फिल्म की घोषणा फिल्मकार सचिन्द्र शर्मा बहुत जल्दी ही करने वाले हैं। बकौल सचिन्द्र शर्मा प्राकृतिक सौंदर्य और खनिज सम्पदाओं से भरपूर झारखंड प्रदेश में प्रतिभाशाली कलाकारों की कमी नहीं है। फिल्म निर्माण के क्षेत्र में प्रदेश के की फिल्मकार क्रियाशील है। झारखंड में दुनिया के सबसे सुंदर डेस्टिनेशन है। फिल्म शूटिंग के लिए झारखंड में अपार संभावनाएं है। प्रदेश सरकार यदि सहयोगयात्मक रुख अख्तियार करे तो झारखंड फिल्म हब के रुप में विकसित हो सकता है।

डबरा कृषि उपज मंडी की ओर से समस्त डबरा वासियों और समस्त किसानों को स्वतंत्रता दिवस की

बहुत बहुत शुभकामनाएं

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
डी एम ग्वालियर

प्रदीप शर्मा
डबरा एसडीएम एवं प्रशासक

केपी जाटव
डबरा सचिव कृषि उपज मंडी

देवेन्द्र श्रीवास्तव
कार्यालय निरीक्षक डबरा कृषि मंडी

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

त्रिदेव ट्रांसपोर्ट टूल्स एंड ट्रेवल्स कम्पनी की ओर से नवरात्रि व दशहरे की सभी देशवासियों को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

शुभकामनाकर्ता

प्रो. रवि परिहार, प्रो. रवि कांत शर्मा, सुनील प्रजापति

कोरोना काल में अच्छी कवरेज के लिए मनोज चतुर्वेदी का सम्मान किया

कोरोना कॉल मैं वैक्सीनेशन के कार्य और कोरोना महामारी की आपदा के समय में अच्छी कवरेज और वैक्सीनेशन मैं सहयोग के लिए मनोज चतुर्वेदी विशेष संवाददाता को डबरा रेड क्रोस सोसायटी के द्वारा डबरा एसडीएम एवं अध्यक्ष भारतीय रेड क्रोस सोसायटी उप शाखा डबरा प्रदीप शर्मा जी ने संवादित किया। इस कार्यक्रम मे धूमेश्वर मंदिर के महंत महामंडलेश्वर 1008 अनिरुद वन, रेडक्रास सोसायटी के सचिव दीपक भार्गव, बसंत कुकरेजा, बसंत वादवानी, डॉक्टर आर.पी. शर्मा, संदीप सैनिक आदि उपस्थित है।

फिल्म कलाकार नवलसिंह गुदेन संजय ग्राम ने रोशन किया

ब्यावरा/राजगढ़ का नाम ब्यावरा/अंतरराष्ट्रीय फिल्म की शूटिंग तीसरे दौर की मुंबई पुणे छत्रपति शिवाजी की कर्मभूमि सिंहगढ़ किला कात्रज में शूटिंग चल रही है जिसमें ब्यावरा के लाडले हीरो नवलसिंह कबेले के सरदार के रूप में फिल्म में किरदार निभा रहे हैं। जिससे राजगढ़ जिले का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दिखाई देगा एक अलग ही पहचान राजगढ़ ब्यावरा की होगी। अन्य कलाकारों में बीरमसिंह गोपाल पुरा,अमित बारां, तेजकरण छबड़ा भी शूटिंग में अपना किरदार निभा रहे हैं। फिल्म के निर्माता निर्देशक डायरेक्टर दशरथ कचरावत ने बताया कि फिल्म ऐतिहासिक महत्व को प्रदर्शित करने वाली है जिसमें भांतू समाज के संघर्ष का फिल्मांकन किया गया है। गौरतलब है कि प्राचीन समय में अंग्रेजों , मुगलों ने जो भारतीय लोगों पर अन्याय अत्याचार किए हैं जिनका जवाब भांतू समाज ने ईंट का जवाब पत्थर से किस तरह दिया गया। चरित्र चित्रण किया गया है। भारत के गौरवशाली इतिहास को पर्दे पर जब लोग देखेंगे तो राष्ट्र भक्ति जाग्रत होगी एक जोश जूनून लोगों में देखने को मिलेगा एवं भारत की एकता-अखंडता को मजबूती मिलेगी।

संभाग आयुक्त श्री सक्सेना ने कलेक्टर के साथ किया निरीक्षण

राजस्व भवन बनकर पूरी तरह तैयार, शीघ्र होगा लोकार्पण

ग्वालियर में लगभग 65 करोड़ रूपए की लागत से राजस्व विभाग का भवन बनकर पूरी तरह से तैयार हो गया है। भवन का लोकार्पण भी शीघ्र होगा और संभागीय आयुक्त कार्यालय, राजस्व मण्डल और भू-अभिलेख एवं बंदोबस्त का कार्यालय भी राजस्व भवन में संचालित होने लगेगा। संभागीय आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह के साथ आज संयुक्त राजस्व भवन का अवलोकन किया और पीआईयू सेल के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने बुधवार को राजस्व भवन पहुँचकर जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया। इस मौके पर कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल, पीआईयू सेल के श्री अष्ठपुत्रे सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना ने संभागीय आयुक्त कार्यालय के साथ ही राजस्व मण्डल और भू-अभिलेख एवं बंदोबस्त का कार्यालय का भी अवलोकन किया। उन्होंने पीआईयू सेल के अधिकारियों को निर्देशित किया है कि भवन के लोकार्पण की तैयारी करें। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि भवन और भवन परिसर में जो भी छोटे-मोटे काम शेष रह गए हैं उन्हें तत्परता से पूरा करें। भवन की फिनिशिंग के साथ ही शीघ्र तीनों कार्यालयों को शिफ्ट करने का कार्य भी किया जाएगा। संयुक्त राजस्व भवन में तीनों कार्यालयों के लिये सभी सुविधायें युक्त कार्यालय तैयार किया गया है। इसमें अधिकारियों के कक्ष के साथ-साथ स्टाफ को बैठने के लिये भी फर्नीचर आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने संभाग आयुक्त श्री आशीष सक्सेना से आग्रह किया है कि नवीन राजस्व भवन में झाँसी रोड़ क्षेत्र के एसडीएम और तहसीलदार के लिये भी कक्ष आवंटित किया जाए, ताकि आम जनों को अपने कामों के लिये कलेक्ट्रेट तक न आना पड़े। संभाग आयुक्त ने इस संबंध में प्रस्ताव भेजने की बात कही।

केंद्रीय कानून मंत्री ने लिया जन आशीर्वाद यात्रा मैं भाग...

डबरा पहुँचे केंद्रीय कानून मंत्री एसपी सिंह बघेल जन आशीर्वाद यात्रा के साथ

सबसे पहले दतिया पीताम्बरा माई के दर्शन किये। उसके बाद जन आशिर्वाद यात्रा के तहत डबरा होते हुए ग्वालियर पहुँचे ।दतिया से ग्वालियर तक सड़क मार्ग से होते हुए निकले मार्ग मैं जगह जगह स्वागत हुआ। डबरा मैं भी बीजेपी कार्यकर्ताओं सहित काफी बड़ी तादाद मैं स्वागत हुआ । इनके साथ ग्वालियर सांसद, राधेलाल बघेल पूर्व विधायक सेवड़ा, मुकेश चौधरी यात्रा प्रभारी, कौशल शर्मा ग्वालियर ग्रामीण बीजेपी अध्यक्ष , जीता रावत,अनिल जैन जिला ग्वालियर ग्रामीण मंत्री भारती जनता पार्टी, आदि लोग उपस्थित थे। डबरा पीछोर तेराह पर सभी कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। विशेष संवाद दाता मनोज चतुर्वेदी से चर्चा करते हुए कहा कि, माननीय प्रधानमंत्री नरेंद मोदी जी के नेतृत्व मैं जो विकास कार्य,योजनाएं जनता के लिए लाए है और किये है । भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृव मैं किये गए कार्य की देश मे ही नही विस्व मैं भी भारत देश को बहुत सम्मान दिया जा रहा है।

ग्रामीण क्षेत्र में स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने के निर्देश

कलेक्टर ने उटीला एवं बंधौली पहुंचकर टीकाकरण कार्य का किया अवलोकन

कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने ग्रामीण क्षेत्र का भ्रमण कर टीकाकरण अभियान का अवलोकन करने के साथ ही शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन की मैदानी हकीकत को देखा। उन्होंने बंधौली और उटीला पहुँचकर टीकाकरण कार्य का अवलोकन किया। इसके साथ ही आंगनबाड़ी, पंचायत भवन, शाला भवन और अस्पताल का भी निरीक्षण किया। उनके साथ सीईओ जिला पंचायत श्री आशीष तिवारी, जनपद पंचायत मुरार के सीईओ श्री राजीव मिश्रा, तहसीलदार एवं विभागीय अधिकारी मौजूद थे।

कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने ग्राम पंचायत बंधौली पहुँचकर टीकाकरण कार्य का अवलोकन करने के साथ ही आंगनबाड़ी केन्द्र और पंचायत भवन का भी अवलोकन किया। उन्होंने गाँव के प्रमुख मार्ग पर गंदगी एवं कीचड़ देखकर नाराजगी व्यक्त की। नल-जल योजना के लिए डाली गई पाइप लाईन के पश्चात मार्ग को ठीक न करने तथा सड़क पर गंदगी और कीचड़ पाए जाने पर उन्होंने सरपंच और विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि मार्ग तत्काल ठीक कराया जाए। इसके साथ ही गांव की स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाए।

कलेक्टर श्री सिंह ने बंधौली में निर्मित सामुदायिक भवन की स्थिति पर भी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने जनपद पंचायत सीईओ को निर्देशित किया है कि 7 दिन में भवन की रंगाई-पुताई एवं साफ-सफाई का कार्य किया जाए। उक्त भवन का उपयोग सार्वजनिक कार्यक्रमों में ग्रामीणों के हित में किया जाए। कलेक्टर ने गाँव में स्थापित आयुर्वेदिक हॉस्पिटल का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण

के दौरान चिकित्सक एवं अन्य स्टाफ अनुपस्थित पाए जाने पर उन्होंने सभी के विरूद्ध दण्डात्मक कार्रवाई करने के निर्देश भी सीईओ जिला पंचायत को दिए। उन्होंने टीकाकरण के संबंध में दल के सदस्यों से चर्चा की और कहा कि गाँव में कोई भी व्यक्ति प्रथम डोज से वंचित नहीं रहना चाहिए। इसके साथ ही जिन लोगों को द्वितीय डोज लगना है उनसे भी संपर्क कर टीकाकरण का कार्य किया जाए।

कलेक्टर श्री सिंह ने इसके पश्चात उटीला पहुँचकर आरोग्यधाम अस्पताल में चल रहे टीकाकरण कार्य का अवलोकन किया। टीकाकरण के दौरान पाँच ऐसे लोग जो प्रथम डोज से वंचित थे उन्हें डोज लगाए जाने की जानकारी भी प्राप्त हुई। कलेक्टर ने कहा कि घर-घर संपर्क कर ऐसे शत प्रतिशत लोगों का टीकाकरण किया जाए जो अब तक टीकाकरण से वंचित हैं। इसके साथ ही प्रत्येक परिवार को यह भी बताया जाए कि जिन लोगों को द्वितीय डोज लगना है वह निर्धारित समय पर टीकाकरण केन्द्र पर आकर टीकाकरण अवश्य कराएँ।

डेंगू पर प्रहार महा अभियान का निगमायुक्त ने किया गोले के मंदिर से शुभारंभ

नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल ने आज गुरुवार को चलाए जा रहे डेंगू पर प्रहार महा अभियान का शुभारंभ गोले के मंदिर प्रगति विहार कॉलोनी से किया। निगम अमले द्वारा डेंगू पर प्रहार महा अभियान के दौरान सभी क्षेत्रों में फागिंग एवं कीटनाशक दवाओं का छिड़काव किया जा रहा है तथा साफ सफाई की जा रही है एवं नागरिकों को साफ सफाई एवं पानी जमा ना होने देने के लिए जागरूक किया जा रहा है। डेंगू पर प्रहार महा अभियान के शुभारंभ अवसर पर निगमायुक्त श्री कन्याल ने कॉलोनियों में घर-घर जाकर आम जनों को डेंगू मलेरिया को फैलने से रोकने के लिए जागरूक किया तथा अपने घरों के आसपास साफ-सफाई रखने एवं घर के आस-पास कूलर अथवा टंकी में पानी एकत्रित न होने देने का आग्रह किया।

इस दौरान निगम के अमले द्वारा स्वास्थ्य विभाग एवं मलेरिया विभाग की टीमों के साथ घर-घर जाकर सर्वे भी किया जाएगा तथा जिसके यहां डेंगू का लारवा मिलेगा उसके खिलाफ जुर्माने की कार्रवाई भी की जाएगी। अभियान के दौरान अपर आयुक्त श्री संजय मेहता, स्वास्थ्य अधिकारी श्री वैभव श्रीवास्तव, सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

विज्ञापन सम्मेलन विवरणिका का विमोचन

उज्जैन में विज्ञान केंद्र के भूमि पूजन एवं मध्य प्रदेश विज्ञान सम्मेलन विवरणिका विमोचन के अवसर पर तारा मंडल परिसर उज्जैन में कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल श्री थारव चंद्र जी गहलोत विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री जयंत सहस्त्रबुद्धे जी, उच्च शिक्षा मंत्री माननीय मोहन यादव जी उज्जैन के सांसद अनिल फिरोजिया जी, पूर्व केंद्रीय मंत्री सत्यनारायण जटिया जी एनसीएसएम के डायरेक्टर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद भोपाल के महानिदेशक डॉक्टर अनिल कोठारी जी विज्ञान केंद्र के संयोजक डॉ राजेश शर्मा जी आदि उपस्थित थे।

केन्द्रीय मंत्री तोमर ने आलू अनुसंधान केन्द्र की जमीन का लिया जायजा

दिए निर्देश एक हफ्ते में भेजें रिपोर्ट, जिससे एयरपोर्ट अथॉरिटी को जमीन हस्तांतरित की जा सके कहा प्रयास ऐसे हों, जिससे अत्याधुनिक एयर टर्मिनल बनने के साथ-साथ आलू अनुसंधान केद्र की गतिविधियाँ भी बेहतर ढंग से चलती रहें

राजमाता विजयाराजे सिंधिया एयरपोर्ट के विस्तार के काम को जल्द जे जल्द मूर्तरूप देने के सिलसिले में केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने शनिवार को आलू अनुसंधान केन्द्र पहुँचकर वस्तुस्थिति समझी। उन्होंने आलू अनुसंधान केन्द्र की जमीन का जायजा लेने के दौरान कहा कि प्रयास ऐसे हों, जिससे एयर टर्मिनल के विस्तार में कोई बाधा न आए। साथ ही आलू अनुसंधान की गतिविधियाँ भी बेहतर ढंग से चलती रहें। श्री तोमर ने इस अवसर पर सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि एक हफ्ते में समन्वित रिपोर्ट प्रस्तुत कर दें, जिससे एयरपोर्ट अथॉरिटी को एयर टर्मिनल के विस्तार के लिए जमीन हस्तांतरित की जा सके। ज्ञात हो आलू अनुसंधान केन्द्र की जमीन पर ही एयर टर्मिनल का विस्तार प्रस्तावित है।

केन्द्रीय मंत्री श्री तोमर के भ्रमण के दौरान डीडीजी हॉर्टिकल्चर आईसीएआर श्री ए के सिंह व डायरेक्टर आईसीएआर सीपीआरआई शिमला श्री मनोज कुमार सहित कृषि अनुसंधान परिषद व एयरपोर्ट अथॉरिटी के वरिष्ठ अधिकारी ,कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, केद्रीय आलू अनुसंधान केंद्र ग्वालियर के अध्यक्ष श्री शिव प्रताप सिंह एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री किशोर कान्याल समेत अन्य संबंधित अधिकारी भी आलू अनुसंधान केन्द्र में मौजूद थे। आलू अनुसंधान केन्द्र की जमीन का जायजा लेने के बाद केन्द्रीय मंत्री श्री तोमर ने निर्देश दिए कि एयरपोर्ट अथॉरिटी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं जिला प्रशासन के अधिकारी आपसी समन्वय बनाकर एयर टर्मिनल विस्तार की रूपरेखा को अंतिम रूप दें। उन्होंने कहा इस काम को जल्द से जल्द धरातल पर लाने के लिए कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह नोडल अधिकारी का दायित्व निभाएं। उन्होंने कहा कि एयर टर्मिनल के काम को गति देने के लिए दिल्ली में भी संबंधित अधिकारियों के साथ आलू अनुसंधान केन्द्र की जमीन के हस्तांतरण के संबंध में बैठक की जाए। केन्द्रीय मंत्री श्री तोमर ने कहा कि ग्वालियर की प्रगति के लिए अत्याधुनिक एयरपोर्ट और केन्द्रीय आलू अनुसन्धान केन्द्र दोनों जरूरी हैं। एयर कनेक्टिविटी बढ़ने से जहाँ ग्वालियर-चंबल अंचल में हवाई यात्रा की सुविधा बढ़ने के साथ-साथ औद्योगिक निवेश को बढ़ावा मिलेगा। वहीं आलू अनुसंधान केन्द्र भी ग्वालियर-चंबल अंचल सहित देशभर के किसानों को आलू के उन्नत बीज मुहैया कराकर उनकी समृद्धि में महती भूमिका निभा रहा है।

कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने एयर टर्मिनल के लिए दी जाने वाली जमीन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही एयरपोर्ट अथॉरिटी के अधिकारियों ने प्रस्तावित एयर टर्मिनल की रूपरेखा के बारे में बताया। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री किशोर कान्याल ने बताया कि एयर टर्मिनल के विस्तार के लिए आलू अनुसंधान केन्द्र की 110 एकड़ जमीन एयरपोर्ट अथॉरिटी द्वारा माँगी गई है। इसमें से 10 एकड़ जमीन का उपयोग एयरपोर्ट मार्ग के लिए होगा।

जयतिसिंह सीओ स्मार्ट सिटी ग्वालियर के साथ ग्वालियर स्मार्ट सिटी को अवार्ड

ग्वालियर जिला नए नए आयामो को प्राप्त करते हुए आगे बढ़ रहा है। इस समय ग्वालियर कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह के नेतृव मैं और ग्वालियर एस पी अमित सांघी के साथ मिलकर एक टीम वर्क मैं कार्य कर रहे है। इनको ग्वालियर कमिश्नर और ग्वालियर आई जी का मार्गदर्शन भी सही दिशा मैं मिल रहा है जिसका परिणाम जिला पंचायत का मध्यप्रदेश मैं हुए सर्वे मैं 34 वे पायदान से 2 नम्बर पर आना हो या अव ग्वालियर जिले के स्मार्ट सिटी के रूप मैं डिजिटल, म्यूजियम आदि प्रोजेक्ट मैं अर्बन विभाग के अंतर्गत नेशनल अवार्ड मिला है। इस प्रोजेक्ट को फाइनल मैं जाकर प्रथम पुरस्कार मिला। अपनी कार्यशैली के अनुसार पहचान रखने वाली ग्वालियर स्मार्ट सी ओ जयति सिंह आईएएस ने विशेष संवाद दाता मनोज चतुर्वेदी से विशेष चर्चा करते हुए बताया कि, ग्वालियर के लिए बड़ी खुशी की बात है कि, यूंनेस्को सिटी ऑफ म्यूजिक के लिए भारत देश से दो राज्यों से प्रोजेक्ट भेजे है इसमे मध्यप्रदेश से ग्वालियर और जम्बू कश्मीर से जम्बू का नाम भेजा गया है। ज्ञात हो जयति सिंह का कार्य करने की शैली की सभी लोग तारीफ करते है। चाहे उन्हें कोई भी जिम्मेदारी दी जाए उसे वो पूर्ण जिम्मेदारी के साथ पूर्ण करने तक कार्य करती रहती है पूर्व मैं आपने डबरा एस डी एम रहते हुए रेत माफियाओं पर, अबैध उत्खनन माफियाओं पर बहुत बड़ी कार्यवाही की थी। कोरोनॉ काल के पहली लहर मैं भी पूर्ण जिम्मेदारी के साथ सराहनीय कार्य किया था ,जिसमे मजदूरों के पलायन के समय उन्हें उनके स्थान तक बसों के द्वारा पहुचाया गया। इसी प्रकार ग्वालियर मैं भी अपनी जिम्मेदारी को बडे ही दायित्व के साथ निभाते हुए ग्वालियर को स्मार्ट सिटी के रूप मे नए आयाम मैं ले जा रही है। विशेष संवाददाता मनोज चतुर्वेदी की रिपोर्ट

मनोज चतुर्वेदी की सी ओ जिला पंचायत किशोर कान्याल जी के साथ लिया गया साक्षात्कार

ग्वालियर जिपं ने अपनी रैंकिंग मैं लगाई छलांग 34 नंबर से आया 2 नंबर पर

कार्य शैली और टीम वर्क का प्रभाव कितना अच्छा परिणाम ला सकता है यह उदाहरण आज मध्यप्रदेश की सरकार के द्वारा सभी विभागों की कार्य शैली पर रिपोर्ट तैयार की जिसमे विभागों के कार्य कलापो के प्रभावों का आँकलन किया गया और रिपोर्ट तैयार की गई जिसमें ग्वालियर जिले के अंतर्गत आने वाली जिलापंचायत ग्वालियर को द्वतीय स्थान मिला। जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि को देखा जा रहा है। इस उपलब्धि पर जब ग्वालियर जिला पंचायत सी ओ किशोर कान्याल जी से विशेष संवाददाता मनोज चतुर्वेदी जी से चर्चा करते हुए यह जानकारी दी ज्ञात हो यह उपलब्धि ए डी एम कान्याल के नेतृव मैं हासिल हुई है। उन्हों इस उपलब्धि का क्षेय पूरी टीम को दिया है। विशेष संवाददाता मनोज चतुर्वेदी की रिपोर्ट

डबरा में लक्ष्मीनारायण मंदिर में

इसी प्रांगण मैं बन रहा है एशिया का भव्य नवग्रह मंदिर

यह धार्मिक स्थल पीताम्बरा माता के भक्त मध्यप्रदेश के गृहमंत्री श्री नरोत्तम मिश्रा एवं डॉ.श्रीमन नारायण एवं डॉक्टर आनंद मिश्रा के भक्ति प्रेम से हो रहा है साकार। डबरा में 1 लाख 11 हजार 111 हनुमान चालीसा पाठ का लक्ष्य हुआ पूर्ण, डबरा में रहा ऐतिहासिक क्षण, अयोध्या धाम, चित्रकूट धाम, धूमेश्वर धाम दंदरौआ धाम सहित अन्य समाजों के धर्मगुरु भी रहे हैं किस महा आयोजन में सम्मिलित, पूर्व मंडी अध्यक्ष मुकेश गौतम(बंटी) ने इस महायोजना आयोजन में अपनी भागीदारी देने वाले सभी भक्तों का आभार व्यक्त किया।

भव्य हनुमान चालीसा का पाठ...

डबरा नगर पालिका की जुझारूपन के कारण अपनी कार्य के लिए जाने जा रहे है यह लोग

डबरा सीएमओ महेश पुरोहित के नेतृत्व मैं उचाईयों को छूने के नजदीक डबरा की नगर पालिका

उचाड़ के इतिहास पर चर्चा

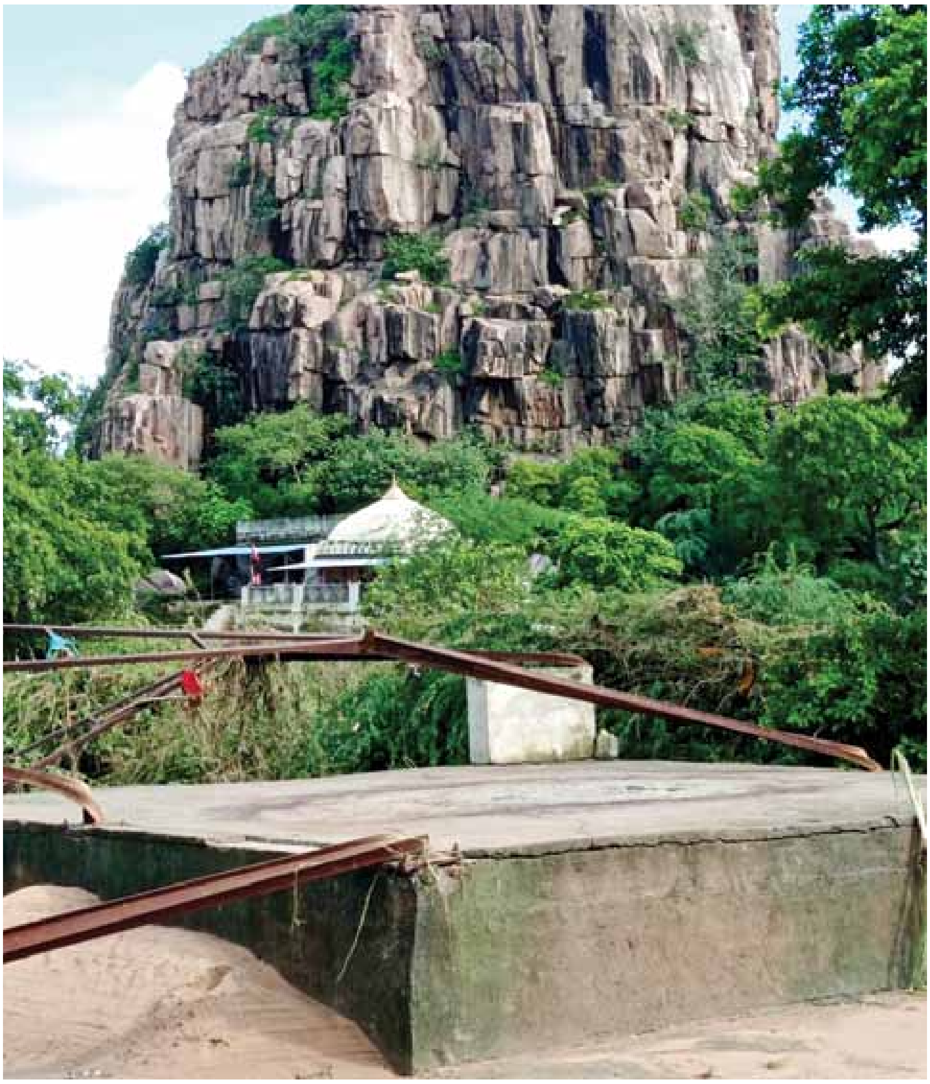

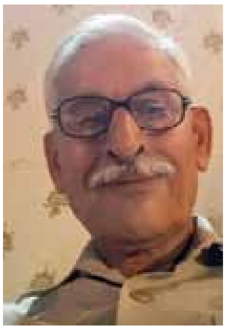

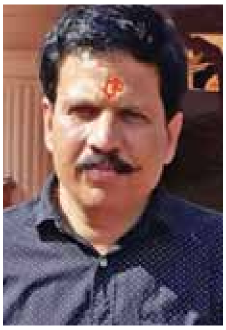

सुखदेव चतुर्वेदी   संपादक मनोज चतुर्वेदी

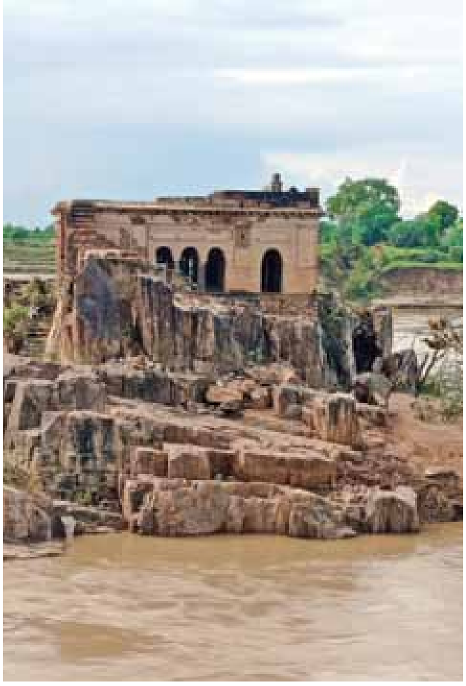

आज उचाड़ गाँव जिला दतिया में हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका की टीम सम्पादक श्री मनोज चतुर्वेदी के नेतृव मैं उचाड़ निबासी सुखदेब चतुर्वेदी के साथ उचाड़ के इतिहास पर की चर्चा उचाड़ेशवर मंदिर पर! ओर उचाड़ की जानकारी ली यह गाँव हजारो साल पुराना है ! हर युग मै अलग अलग देबताओ की पूजा होती है! इसी कृम मै उचाड़ मै दुवापर युग मै बिषणू भगबान की पूजा का नमूना उचाड़ मै सिंध नदी के बीच मै भगबान बिषणू के मंदिर होने के नमूना ब पानी मै डूबी बिषणू भगबान की मूरती दिखाई ओर मंदिर को ओरंग जेब के दुआरा तोड़ दिया था उसकी टूटी दीबाल जो अभी भी उसी जगह पढी हुई है ओर जो अभी पानी मैं डूबी हुई दिखाई ओर बगल मै संबत् 1112 का तीन शंकर जी का मंदिर दाखाया इस जगह काल सर्प दोष का

निवारण किया जाता है ! बिषणू भगबान की मूरती ओर मंदिर नदी का पानी कम होने पर साफ दिखाई देने लगेगी उचाढ मै कैई जगह देखने लायक है जैसे दीबालनामा खढा पहाढ बटुक भैरब मंदिर काल भैरब का मंदिर सिद्ध गौफा ओर बी सुंदर सुंदर जगह है !

आभासी मैदान : बच्चों को रखें दूर

जीवन की जंग हो या खेल का मैदान बहुत कुछ एक सा है। कड़ी मेहनत, जीतने का ज़ज्बा, हौसला, लीडरशिप, दृढ़ता, गंभीरता, अनुशासित दिनचर्या और नाकामयाबी पर भी असीम धैर्य। जो कुछ ज़िन्दगी से जूझने के लिए चाहिए वही खेल के मैदान में भी बेहद ज़रूरी है। ऐसे में नयी पीढ़ी को खेलों से जोड़ना ज़रूरी है। उनके व्यक्तित्व को ठहराव और संघर्ष का पाठ पढ़ाने के लिए खेलना बेहद ज़रूरी है।

शारीरिक सक्रियता

हाल के बरसों में बच्चों का निष्क्रिय लाइफस्टाइल वाकई चिंता का विषय बन गया है। मोटापा और कम उम्र में दूसरी बीमारियों की दस्तक अभिभावकों को भी डरा रही है। ऐसे में गेम्स फिजिकल एक्टिविटीज के साथ ही मानसिक स्वास्थ्य की बेहतरी में भी मददगार हैं। खेलने से तो हर उम्र के लोगों को मानसिक स्फूर्ति मिलती है। बच्चों में तो यह स्फूर्ति पढ़ने लिखने की क्षमता में भी इज़ाफा करती है। विशेषज्ञ भी मानते हैं कि खेल के मैदान में उतर कर बच्चों का मानसिक तनाव कम होता है और एकेडेमिक फ्रंट पर बेहतर परफॉर्म करने के मौके बढ़ जाते हैं।

जुड़ाव का भाव

खेलों से जुड़ी टीम स्पिरिट का भाव बच्चों के मन में आपसी जुड़ाव की सोच भी लाता है। बचपन से ही साथ और सहयोग का पाठ पढ़ाता है। बतौर टीम सदस्य जो जिम्मेदारी के भाव बच्चों के मन में पनपते हैं वे आगे चलकर उनके सामाजिक-पारिवारिक जीवन में भी काम आते हैं। अपने हमउम्र साथियों के साथ मिलकर खेलने और हार जीत को जीने का भाव उन्हें सिर्फ अपने आप तक सिमटे रहने के दायरे से बाहर लाता है। उनके मन की झिझक दूर होती है और वे मिलनसार बनते हैं। समझना मुश्किल नहीं कि बचपन में ही पैदा होने वाली सामाजिकता की ऐसी सकारात्मक सोच बच्चों को जिम्मेदार और सहयोगी नागरिक भी बनाती है।

अनुशासन और समय प्रबंधन

खेलों से जुड़कर बच्चे समय प्रबंधन भी सीखते हैं और अनुशासन भी। किसी भी काम को नियमित करने और बेहतर बनने की आदत उनके व्यवहार का हिस्सा बन जाती है। इसीलिए अभिभावकों की जिम्मेदारी है कि बच्चों को खेलों से जोड़ने की हर संभव कोशिश करें। इनडोर या बच्चे की पसंद का आउटडोर गेम खेलने में रुचि पैदा करना उनके रोजमर्रा के शेड्यूल को प्रोडक्टिव बनाता है।

स्क्रीन पर खेल ठीक नहीं

आजकल बच्चे खेल भी स्क्रीन के मैदान में ही खेलते हैं। स्मार्ट स्क्रीन तक सिमटी खेलों की दुनिया उनके लिए हर तरह से घातक तो है ही कई बार अपराधियों के जाल में भी फंसा देती है। कुछ खेल ऐसे भी हैं जो बच्चों के लिए जानलेवा बन जाते हैं। घंटो स्क्रीन में ताकते रहने से उनकी आंखों पर बुरा असर पड़ता है। स्मार्ट गैजेट्स को बच्चे जिस तरह पकड़कर बैठते हैं, उनका पोस्चर खराब होता है। आज के समय में ऑनलाइन पढ़ाई के तनाव और व्यस्तता के चलते बच्चे खेलों से बिलकुल दूर हो गए हैं। कोरोना काल में घर तक ही सिमटी जिन्दगी में उनका शारीरिक और बौद्धिक विकास भी प्रभावित हो रहा है। ऐसे में इस आपदा के बाद बच्चों को ज्यादा से ज्यादा आउटडोर एक्टिविटीज से जोड़ने की सोच रखनी होगी। इन दिनों भी स्क्रीन पर ज्यादा वक्त बिताने के बजाय इनडोर गेम्स खेलने को समय दिया जाए तो ज्यादा अच्छा है।

गोलगप्पा... जितने नाम, उतने ज़ायके

• शिखर चंद जैन

पुरुष हों या महिलाएं सबकी पसंदीदा डिश है चटपटा गोलगप्पा। शॉपिंग करने जाएं या शादी ब्याह में दावत खाने, तमाम व्यंजनों के बीच सबको पसंद आता है गोलगप्पा। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि गोलगप्पे को देश भर में कई अलग-अलग नामों से जाना जाता है ।

पकौड़ी

आप और हम पकौड़ी भले ही बेसन या मूंगदाल से बनी डिश को कहते हों लेकिन गुजरात के कुछ हिस्सों में गोलगप्पे को पकौड़ी कहते हैं। इसके भरावन के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री भी जरा अलग होती है। कहीं इसमें बेसन के लच्छे, मीठी चटनी और कच्चे प्याज डाले जाते हैं, तो कहीं छोटे-छोटे कटे हुए उबले आलू और उबली हुई साबुत हरी मूंग की फिलिंग भी की जाती है। इसे खजूर की चटनी के साथ खाने पर मज़ा आ जाता है।

गुपचुप

मध्यप्रदेश और उड़ीसा के कुछ इलाकों में भी इसे गुपचुप कहकर पुकारते हैं। छत्तीसगढ़ में भी गोलगप्पों को गुपचुप कहते हैं। छत्तीसगढ़ में फिलिंग के रूप में मैश किए उबले हुए आलू और उबली हुई पीली मटर का इस्तेमाल किया जाता है। यहां पानी आमतौर पर इमली या अमचूर से बनाते हैं।

फुलकी

आमतौर पर फुलकी चपाती या रोटी को कहते हैं। लेकिन उत्तर प्रदेश के पूर्वी इलाकों में फुलकी गोलगप्पों को कहते हैं। यहां के गोलगप्पों का स्वाद भी दूसरी जगहों से बिल्कुल अलग है। इसके भरावन में ताज़ा मीठा दही इस्तेमाल किया जाता है जो इसे अलग टेस्ट देता है।

पुचका

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में गोलगप्पे को पुचका के नाम से जाना जाता है। उच्चारण में फर्क के कारण बंगाली या असमिया लोग इसे फुचका और राजस्थान समुदाय के कुछ लोग पिचका भी कहते हैं। यहां गोलगप्पों में मैश किया गया उबला आलू, उबले हुए देसी चने, धनिया पत्ती, तरह- तरह के मसाले मिलाकर स्टफिंग की जाती है। कहीं इमली का पानी तो कहीं, नींबू पानी में पुदीना मिलाकर सर्व किया जाता है।

टिक्की

उत्तरप्रदेश में कुछ खास इलाकों में और मध्यप्रदेश के होशंगाबाद में गोलगप्पों को टिक्की कहकर पुकारते हैं। यहां भरावन के रूप में उबले आलू और उबले हुए काबुली चनों में मसाले मिलाकर डालते हैं। पानी आमतौर पर इमली का इस्तेमाल किया जाता है।

पानीपुरी

देश के कई हिस्सों में इसे पानीपुरी के नाम से भी जाना जाता है। महाराष्ट्र में यह नाम विशेष रूप से प्रचलित है। मुंबइया फिल्मों में जब भी इसका जिक्र होता है या कोई ठेले वाला दिखाया जाता है, तो पानीपुरी ही दिखाया जाता है।

पतासी या पताशे

राजस्थान, हरियाणा और उत्तरप्रदेश के कई हिस्सों में गोलगप्पे पतासी या पताशे के नाम से जानी जाती है। यहां सूजी के पतासे भी बनते हैं और आटे और मैदे के भी। इनमें उबले आलू और पीली मटर की फिलिंग की जाती है। कहीं- कहीं इसे बूंदी वाले पानी के साथ सर्व किया जाता है। बड़े शहरों में सात-आठ अलग-अलग स्वाद वाला पानी तैयार किया जाता है, जिसमें पुदीने का, जीरे का और लहसुन का स्वाद होता है। कई जगह तो भरावन में बारीक कटा हुआ प्याज भी इस्तेमाल किया जाता है।

पड़ाका

उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ में गोलगप्पे को पड़ाका के नाम से जाना जाता है। यहां आटे और सूजी के पड़ाके तरह-तरह के मसालों वाले अलग अलग तरह के पानी के साथ सर्व किए जाते हैं। यहां भरावन के बजाय पानी के स्वाद पर ही जोर ज्यादा दिया जाता है। कई जगह पड़ाकों में बिना कुछ भरे सिर्फ मसालेदार पानी डालकर खाया-खिलाया जाता है।

गोलगप्पा

गोलगप्पा इसका यूनिवर्सल नाम है। देश के किसी भी कोने में जाइए और आपको इसका स्थानीय नाम मालूम नहीं है तो भी आप बेहिचक गोलगप्पे के नाम से पूछिए, सब जान जाएंगे।

बालों को प्रोटेक्ट भी करता है डुरैग

डुरैग में खुद को स्टाइल करने से पहले आपको इसके बारे में जान लेना चाहिए। डुरैग को आमतौर पर वेव कैप भी कहा जाता है। यह आपके सिर को कवर करता है और बालों को प्रोटेक्ट करने में भी मदद करता है। साथ ही सोते समय हेयरस्टाइल को मैसी होने से बचाने में भी यह मददगार है। स्टाइलिश लुक पाने के लिए सिर्फ आउटफिट पर ध्यान देना ही काफी नहीं है, बल्कि आप बालों को किस तरह से स्टाइल करते हैं, यह भी उतना अहम् है। तरह-तरह के हेयरस्टाइल के अलावा कुछ हेयर एसेसरीज भी आपके लुक को चिक बना सकती हैं। आपने कैप से लेकर बंडाना तो कई बार पहना होगा, लेकिन आज हम आपको डुरैग के बारे में बता रहे हैं। यह एक ऐसी हेयर एसेसरीज है, जिसे पुरूष व महिलाएं दोनों ही पहनना काफी पसंद करते हैं। वहीं, दूसरी ओर, आपके बालों को प्रोटेक्ट करने में भी मदद करता है। तो चलिए जानते हैं डुरैग के बारे में-

क्या है डुरैग

डुरैग में खुद को स्टाइल करने से पहले आपको इसके बारे में जान लेना चाहिए। डुरैग को आमतौर पर वेव कैप भी कहा जाता है। यह आपके सिर को कवर करता है और बालों को प्रोटेक्ट करने में भी मदद करता है। साथ ही सोते समय हेयरस्टाइल को मैसी होने से बचाने में भी यह मददगार है। वहीं दूसरी ओर, यह आपको चिक लुक भी देता है।

फ्रिजी हेयर से बचाव

डुरैग पहनने का एक लाभ यह भी है कि इसे पहनने से आपके सिर पर ड्रेडलॉक और वेव्स के विकास को भी बढ़ावा मिल सकता है। डुरैग फ्रिजीनेस से बचने में मदद करता है और आपके हेयरलॉक्स को पूरे दिन साफ रखता है। ऐसे में अगर आप स्टाइलिश तरीके से अपने बालों की केयर करना चाहते हैं तो ऐसे में डुरैग को पहना जा सकता है।

ऐसे पहनें डुरैग

डुरैग पहनकर अगर आप एक स्टाइलिश लुक पाना चाहते हैं तो आपको इसे पहनते समय कुछ बातों का ध्यान रखना होगा। जैसे- जब आप डुरैग पहन रहे हैं तो इसे कुछ इस तरह बांधें कि यह आपके फोरहेड पर फ्लैट व स्मूद नजर आए। इसे यूं ही लपेटने से बचें। अगर आप डुरैग पहनकर सो रहे हैं तो ऐसे में आप इसे हेडबैंड के साथ सिक्योर करें, ताकि यह रात को सोते समय खुले नहीं।

दें डिफरेंट लुक

फैशन एक्सपर्ट्स के अनुसार, डुरैग को पहनकर आप कई डिफरेंट स्टाइल क्रिएट कर सकते हैं। मसलन, आप इसे कुछ इस तरह पहनें कि यह आपके सारे बालों को कवर करे और आप इसकी लेंथ को ऐसे ही शोल्डर पर रहने दें। इसके अलावा, अगर आप चाहें तो साइड टाई डुरैग लुक भी कैरी कर सकते हैं। इसमें डुरैग को पीछे बांधने के स्थान पर साइड्स में बांधा जाता है। आप अपने स्टाइल के अनुसार इसे बांधते समय काफी एक्सपेरिमेंटल हो सकते हैं।

बालों के लिए फायदेमंद है 'कोकोनट मिल्क'

कई महिलाएं कितने भी शैंपू, क्रीम और ब्यूटी ट्रीटमेंट क्यों ना करा लें, लेकिन उनके बालों में समस्या बनी रहती है। इन दिनों बालों में डैंड्रफ और बाल टूटने की समस्या लोगों में खूब देखी जा रही है। प्रदूषण और गलत खान-पान के कारण बालों में प्रोटीन की मात्रा कम होने लगती है। ऐसे में बाल रूखे और बेजान होने लगते हैं। ऐसे में बाजार में आपको बहुत सारे ऐसे प्रोडक्ट मिल जाएंगे, जो खास बालों को प्रोटीन ट्रीटमेंट देने के लिए ही तैयार किए जाते हैं। लेकिन अगर आप अपने बालों में घरेलू चीजों का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो आप नारियल के दूध का इस्तेमाल कर सकते हैं।

नारियल के तेल के फायदे

1 बाल केराटिन से बने होते हैं, ऐसे में हई प्रोटीन युक्त नारियल दूध का इस्तेमाल करने से बाल मजहबूत बनते हैं।

2 नारियल दूध में पाए जाने वाले विटामिन आपके बालों को स्वस्थ, मजबूत और नमीयुक्त रख सकते हैं। इनमें एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन सी और ई, साथ ही विटामिन बी जैसे बी-1, बी-3, बी-5, और बी-6 शामिल हैं।

3 नारियल के तेल को बालों के क्यूटिकल्स को मजबूत बनाने के लिए जाना जाता है ताकि पानी और हानिकारक पदार्थ से बालों को नुकसान ना हो।

4 नारियल के दूध में नैचुरल फैटी एसिड होते हैं, जो बालों को मॉइश्चराइज रखते हैं। साथ ही खराब बालों को ठीक करने के लिए भी ये अच्छा विकल्प है।

कैसे करें मिल्क का इस्तेमाल

आप बालों में कोकोनट मिल्क से बना हेयर मास्क लगा सकते हैं। इसके लिए आप 1 कप नारियल के दूध में 1 चम्मच शहद और 1 चम्मच ऑलिव ऑयल मिलाएं। अच्छे से मिलाने के बाद इसे स्कैल्प से लेकर बालों की लेंथ तक 30 मिनट के लिए लगाएं और वॉश करें।

घर में करें नारियल का दूध तैयार

वैसे तो ये दूध बाजार में आसानी से मिल जाता है। लेकिन आप इसे घर में बनाना चाहती हैं तो फ्रेश नारियल को छील कर छोटे-छोटे टुकड़े काट लें। फिर उसे मिक्सी में पीस कर उसमें से दूध निकाल लें।

'वास्तव' को हुए 22 साल पूरे

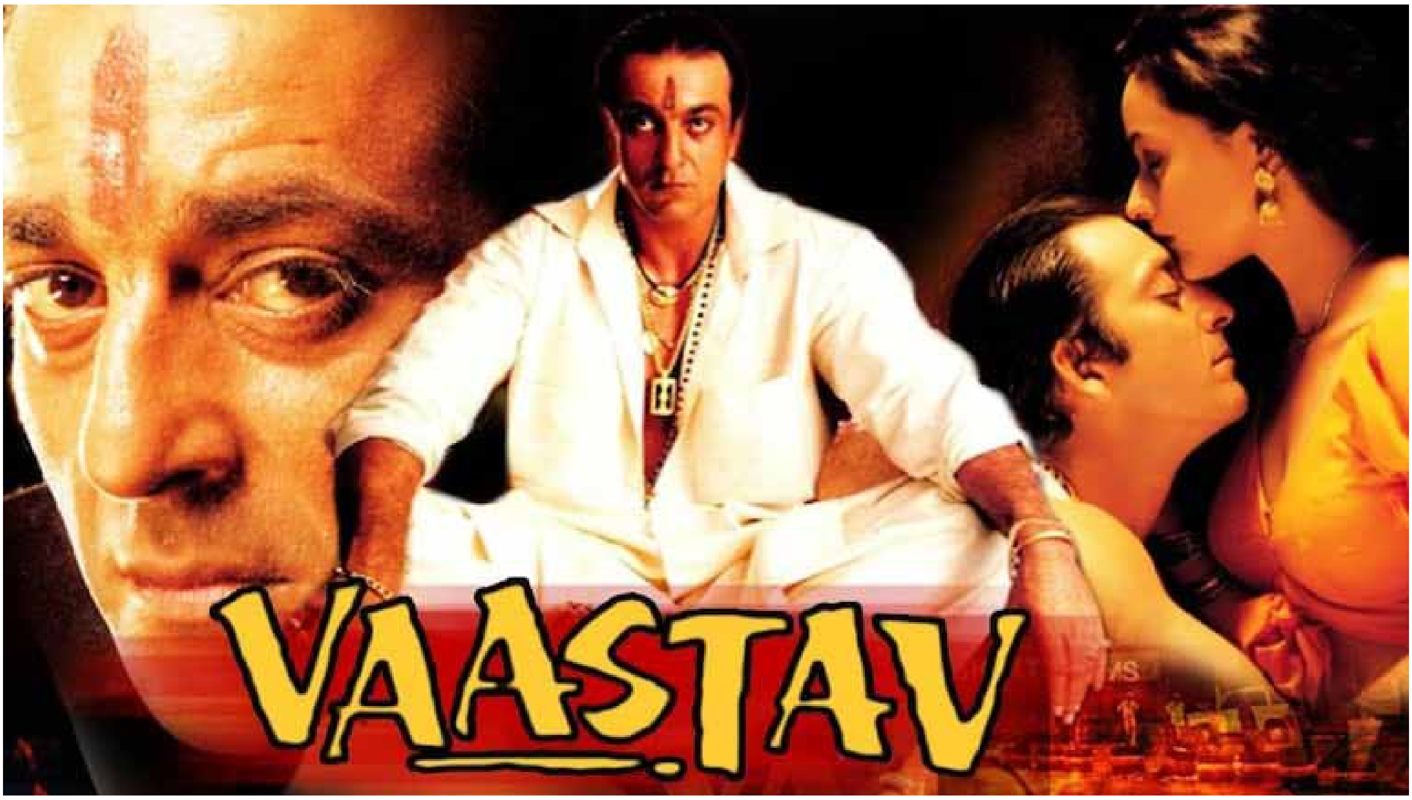

अभिनेता संजय दत्त की तीसरी पारी अब तक काफी डगमग डगमग रही है। जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने फिल्म 'भूमि' से बड़े परदे पर वापसी की। लेकिन, यहां ये बात नोट करने लायक है कि इस फिल्म के लिए कभी उनके करीबी दोस्त रहे निर्देशक महेश मांजरेकर ने उन्हें जो सलाह दी थी, वह संजय दत्त ने नहीं मानी। नतीजा? न सिर्फ संजय दत्त की ये फिल्म फ्लॉप रही बल्कि इसके बाद आईं उनकी अब तक की सारी फिल्में दर्शकों ने नकार दीं। गिनती करें तो उनकी तीसरी पारी की लगातार फ्लॉप फिल्मों की संख्या आठ हो चुकी है। चार फिल्में उनकी रिलीज की कतार में हैं। लेकिन, क्या आपको पता है कि संजय दत्त इसके पहले भी बतौर सोलो हीरो लगातार फ्लॉप फिल्में देने का इससे भी बड़ा रिकॉर्ड बना चुके हैं। संजय दत्त को हिंदी सिनेमा ने करीब करीब हाशिये पर ढकेल ही दिया था, अगर मराठी सिनेमा के उन दिनों के प्रतिभावान निर्देशक महेश मांजरेकर उनके जीवन में ना आते। महेश मांजरेकर ने अपनी पहली हिंदी फिल्म 'वास्तव' संजय दत्त को उस रोल में लेकर बनाई जिसके बारे में कहा जाता है कि ये अंडरवर्ल्ड डॉन छोटा राजन की कहानी है। इस फिल्म ने ही बतौर सोलो हीरो संजय दत्त की उनके करियर की दूसरी पारी में नया जीवनदान दिया। आज के 'बाइस्कोप' में कहानी फिल्म 'वास्तव' की...

'वास्तव' से मिला करियर को जीवनदान : संजय दत्त के मुताबिक, 'मैंने तमाम फिल्मों के लिए खूब मेहनत की है। लेकिन फिल्म 'वास्तव' ने ही मुझे असल में ये सिखाया कि एक्टिंग करना किसे कहते हैं और एक एक्टर होना क्या होता है?' फिल्म 'वास्तव' संजय दत्त के दिल के बहुत करीब रही फिल्म है। इसी फिल्म ने उन्हें उनके करियर का पहला बेस्ट एक्टर फिल्मफेयर पुरस्कार भी दिलाया और यही वह फिल्म है जिसके क्लाइमेक्स ने उन्हें अपने माता पिता नरगिस और सुनील दत्त की फिल्म 'मदर इंडिया' की याद करके खूब रुलाया। फिल्म 'वास्तव' में पैसा लगा था अंडरवर्ल्ड के चर्चित नाम छोटा राजन के भाई दीपक निखलजे का और कहते तो यही हैं कि ये फिल्म छोटा राजन के सामने आईं अपराध की मजबूरियों के बारे में बनी थी। लेकिन, इस बारे में कभी फिल्म से जुड़े किसी व्यक्ति ने बात की नहीं।

20 मिनट में लिखी फिल्म पर 15 मिनट में फैसला

साल 1995 में जब पूरा देश शाहरुख खान की फिल्म 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' के पीछे पागल था तो मराठी भाषा की एक फिल्म 'आई' ने देश दुनिया में खूब शोहरत बटोरी। फिल्म के निर्देशक महेश मांजरेकर को इस फिल्म की शोहरत का फायदा मिला अपनी पहली हिंदी फिल्म 'निदान' पाने में। लेकिन, तभी उनकी मुलाकात संजय दत्त से हो गई। एक दिन संजय दत्त किसी फिल्म की शूटिंग कर रहे थे तो उन्हें याद आया महेश मांजरेकर ने उन्हें किसी कहानी के बारे में बताया था। महेश को फोन आया कि सेट पर आकर मिलो और अपनी स्क्रिप्ट का नरेशन दे दो। नरेशन भला क्या देते महेश, स्क्रिप्ट ही उनकी तैयार नहीं थी। वह टेंशन में आ गए। एक होटल में बैठे बैठे दो चार पैग मारे और बताते हैं वहीं वेटर का पेन मांगकर कागज पर लिखने लगे। एक बार लिखने लगे तो सिलसिला कुछ यूं बना कि वहीं बैठे बैठे महेश ने अपनी फिल्म के 20 सीन का खाका खींच डाला। यही कागज लेकर महेश मांजरेकर पहुंच गए संजय दत्त से मिलने। 20 मिनट में लिखी गई स्क्रिप्ट को संजय दत्त ने बस 15 मिनट सुना और फैसला कर लिया कि उन्हें ये फिल्म करनी है।

नहीं मानी महेश की सलाह

साल 1993 में रिलीज हुई सुभाष घई की फिल्म 'खलनायक' के बाद छह साल तक संजय दत्त की कोई भी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कमाल नहीं दिखा पाई। बीच में उन्हें लंबा समय जेल में भी बिताना पड़ा। साल 1999 एक तरह से संजय दत्त के लिए काफी लकी रहा। पहले डेविड धवन ने उन्हें गोविंदा के साथ 'हसीना मान जाएगी' में मौका दिया, ये फिल्म हिट रही। इसके बाद सोलो हीरो के तौर पर फिल्म 'वास्तव' ने उनको वापस ए लिस्टर अभिनेताओं की लीग में बैठा दिया। संजय दत्त और महेश मांजरेकर ने इसके बाद साथ में कुछ और फिल्में भी कीं लेकिन 'वास्तव' जैसा करिश्मा फिर दोहराया न जा सका। उस वक्त संजय दत्त के चेहरे पर एक अलग ही गुस्सा और एक अलग ही दर्द दिखता था। इस गुस्से भरे दर्द ने फिल्म 'वास्तव' के रघुदेव नामदेव शिवालकर यानी रघु भाई के किरदार का खाका खींचने में महेश मांजरेकर की बहुत मदद की। पिछली बार जब संजय दत्त जेल से बाहर आए और उन्होंने फिल्म 'भूमि' से अपनी तीसरी इनिंग्स शुरू की। महेश मांजरेकर कहते हैं, "संजू जेल से वापस आया तब मेरी उससे एक मुलाकात हुई। उसके पास एक पटकथा थी जो मुझे समझ नहीं आई। मैं उसे लेकर 'दे धक्का' बनाना चाहता था। लेकिन उसने वही फिल्म की जो 'भूमि' के नाम से रिलीज हुई। फिल्म रिलीज होने के बाद उसने मुझे फोन किया। मैंने उससे कहा कि मैंने तो पहले ही बोला था कि ये फिल्म मत कर। इसके बाद भी उसने फिर 'कलंक' और 'प्रस्थानम' की।"

जल्द ही पर्दे पर आएंगी हॉलीवुड की रीमेक फिल्में

हिंदी सिनेमा का मौजूदा दौर में देश ही नहीं विदेश में भी काफी बड़ा कारोबार है। बॉलीवुड में हर साल कई फिल्में बनाई की जाती हैं। फिल्म इंडस्ट्री में एक दौर ऐसा भी था, जब फिल्में खुद की सोच का परिणाम होती थी। उस दौर में फिल्में किसी अन्य फिल्म से प्रेरित नहीं होती थी। ना ही किसी फिल्म का रीमेक बनाया जाता है। हालांकि, आज के दौर के फिल्मों के रीमेक का चलन तेजी से बढ़ता जा रहा है। आज कल साउथ फिल्म हो या बॉलीवुड फिल्म मेकर्स अक्सर किसी अन्य से प्रेरित होकर फिल्मों का निर्माण कर रहे हैं।

सिर्फ बॉलीवुड ही नहीं बल्कि साउथ जैसी अन्य क्षेत्रीय फिल्में भी हिंदी सिनेमा से प्रेरित होती हैं। वहीं, अगर बॉलीवुड की बात करें तो यहां फिल्म मेकर्स हॉलीवुड और साउथ फिल्मों से इंस्पिरेशन लेते हैं। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में ऐसी कई फिल्में हैं. जिन्हें हॉलीवुड और साउथ फिaल्मों से इंस्पायर होकर बनाया गया है। इन फिल्मों को दर्शकों का भरपूर प्यार भी मिलता है। आगामी दिनों में बॉलीवुड में ऐसी कई फिल्में आने वाली हैं जो हॉलीवुड फिल्मों से प्रेरित है। इन फिल्मों में अमिताभ बच्चन, दीपिका पादुकोण, आमिर खान जैसे कई सितारों की फिल्में शामिल हैं। आइए जानते हैं ऐसी ही कुछ फिल्मों के बारे में...

धमाका

बॉलीवुड अभिनेता कार्तिक आर्यन जल्द ही अपनी अगली फिल्म धमाका में नजर आएंगे। कार्तिक आर्यन का पहला लुक और टीजर वीडियो रिलीज किया गया था। कार्तिक की यह फिल्म साल 2013 में आई साउथ कोरियन फिल्म 'द टेरर लाइव' की हिंदी रीमेक है। इसे इस साल डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रिलीज किया जाएगा।

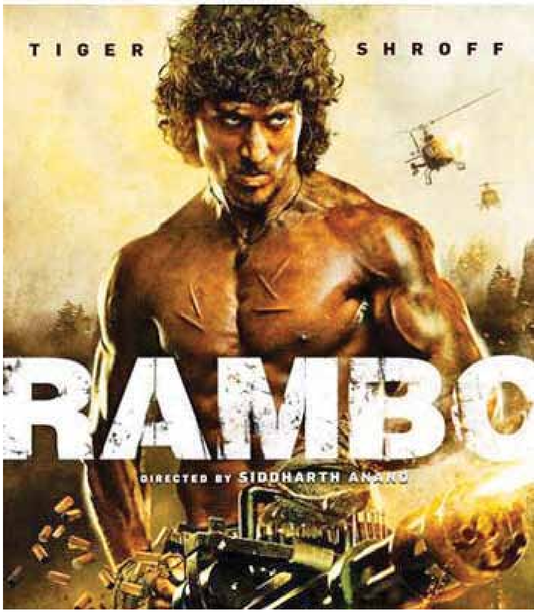

रैंबो

अपनी एक्शन फिल्मों के लिए मशहूर एक्टर टाइगर श्रॉफ जल्द ही एक और एक्शन फिल्म के साथ दर्शकों का मनोरंजन करने आ रहे हैं। टाइगर फिल्म रैंबो में नजर आने वाले हैं। सिद्धार्थ आनंद के निर्देशन में बन रही यह फिल्म सिल्वेस्टर स्टेलोन के आईकॉनिक एक्शन फिल्म का हिंदी रीमेक है।

द इंटर्न

हाल ही में अभिनेत्री के बाद प्रोड्यूसर बनीं बॉलीवुड अदाकारा दीपिका पादुकोण ने अपने फिल्म निर्माण करियर के दूसरे प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी साझा की। दीपिका रॉबर्ट डे नीरो और एनी हाथवे की मशहूर फिल्म 'द इंटर्न' को-प्रोड्यूस कर रही हैं। इस फिल्म में उनके साथ अमिताभ बच्चन भी नजर आएंगे। यह फिल्म इस साल रिलीज होने वाली थी, लेकिन कोरोना के चलते इसे 2022 में पोस्टपोन कर दिया गया।

भूपेन्द्र सिंह रघुबंसी, उप जेल अधीक्षक इंदौर, साथ में इंदौर हाईकोर्ट एडबोकेट रजत रघुबंसी और इंदौर बीयूरो बृजेश जैन एवं सम्बाद दाता इंदौर संदीप पाटिल के साथ

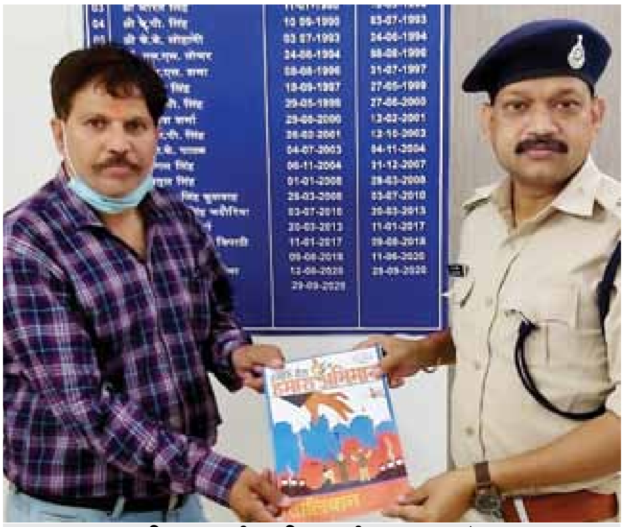

एडिशनल एसपी ग्वालियर ग्रामीण जयराज कुबेर

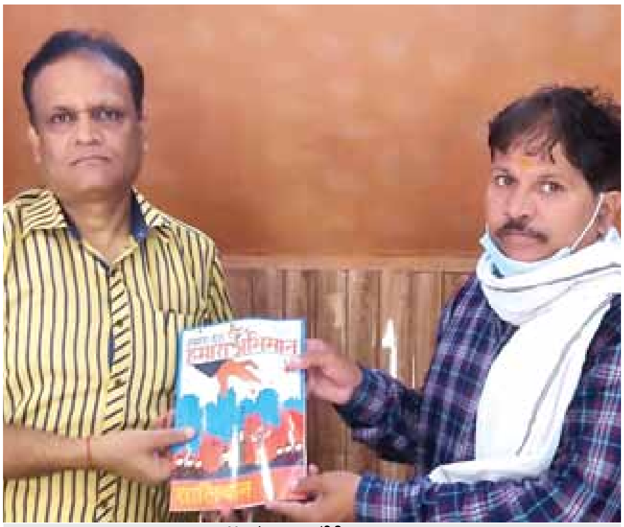

डॉ मुकेश चतुर्वेदी संरक्षक

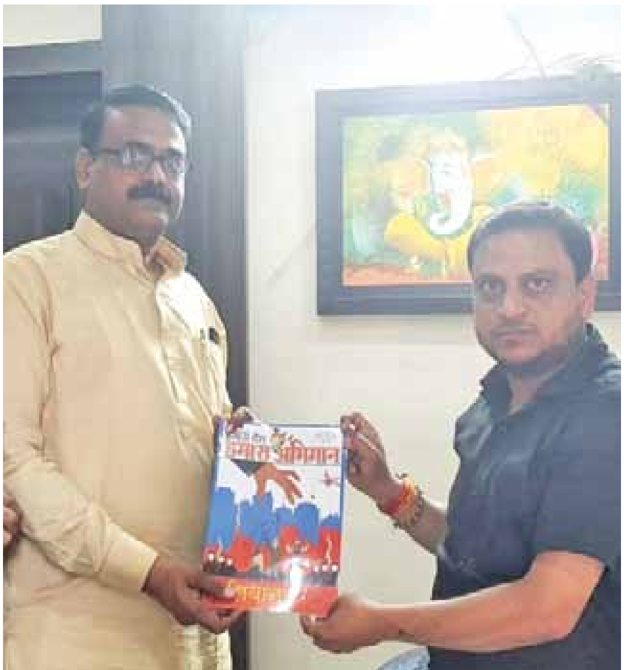

डीएसपी लोकायुक्त सीरीज संतोष सिंह भदोरिया इंदौर

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

प्रशासक
बृज मोहन आर्य

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
कलेक्टर, ग्वालियर

पीयूष श्रीवास्तव
सीएमओ नगर परिषद

2 अक्टूबर 2021 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जयंती से अवसर पर नगर परिषद पिछोर मैं आजादी का अमृत महोत्सव अंतर्गत नगर में की जा रही गतिविधियों जैसे गीला सूखा कचरा अलग अलग सार्वजनिक शौचालय की सफाई रहवासी संघ एवं सफाई मित्रों का सम्मान का कार्यक्रम नगर परिषद पिछोर द्वारा किया गया जिसमें मुख्य रुप से रहवासी संघ एवं सफाई मित्रों का मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री पीयूष श्रीवास्तव एवं प्रशासक नगर परिषद पिछोर श्री बृजमोहन आर्य द्वारा माला पहनाकर और सम्मान पत्र देकर किया गया नगर परिषद पिछोर द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव अंतर्गत नगर में विभिन्न कार्यक्रम किए गए विशेष सफाई अभियान चलाकर नगर को स्वच्छ पिछोर स्वस्थ पिछोर का प्रयास जारी है नगर में गणमान्य नागरिकों एवं जनभागीदारी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ